नयी दिशा

उपन्यास

धीरेन्द्र वर्मा

—उपन्यास

मूल्य रु० ६ ००

धीरेन्द्र वर्मा

प्रथम संस्करण १६७८

प्रकाशक राजकमल प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड,
८, नेताजी सुभाष मार्ग, नयी दिल्ली-११०००२

मुद्रक गजेन्द्र प्रिंटिंग प्रेस,
नवीन शाहदरा, दिल्ली-११००३२

दा पर काले बादल छाये थे। वर्षा कभी भी प्रारम्भ हो सकती थी।
त हरदोई से आनेवाली लखनऊ रोड पर एक छोटे से बस स्टण्ड
खनऊ जानेवाली बस की प्रतीक्षा कर रहा था। प्रशान्त के साथ ही
कस्बे के बस अड्डे पर लगभग एक दजन स्त्री-पुरुष और बच्चे भी
ी प्रतीक्षा कर रहे थे। दो बसें एक के बाद एक आयी जो बेहद भरी
ी और वे, सवारियों की उपेक्षा करती हुई, पूरी स्पीड पर निकल
। प्रशान्त को कोई जल्दी नहीं थी पर अन्य सवारियाँ देरी और वर्षा
ाशंका से विचलित हो रही थी, क्योंकि यहाँ बस अड्डे के नाम पर
' एक कुआँ और गुमटी थी जिसमें पान बीडी और चाय मिलती थी,
दूर-दूर तक बंजर धरती थी। एक व्योपारी-से दीखनेवाले आदमी ने
त को सम्बोधित करते हुए बसवालों और सरकार को कोसा, एक
तजी ने निस्पृह भाव से तम्बाकू बनाकर फाँकी और सभी यात्री किसी-
सी उपक्रम के सहारे नये सिरे से अगली बस की प्रतीक्षा करन लग।
एक टाटा डीजल ट्रक आकर बस स्टाप पर रुका और उसका ड्राइवर
और माचिस खरीदने गुमटी में आया। ट्रक में से एक क्लीनर टाइप
ादमी ने खिडकी से झाँककर आवाज लगायी, "है कोई सवारी लखनऊ
" व्योपारी दूसरी ओर देखने लगा, प्रशान्त ने साफ मना कर दिया
पण्डितजी तम्बाकू थूककर लखनऊ के पैसे तय करने लगे। बस के

किराये के आधे पैसों पर ट्रकवाला राजी हो गया और पण्डितजी ट्रक पर पीछे लदे गेहूँ के बोरों पर बैठ गये और ट्रक चला गया।

"इस पर कभी न बैठना भइया", व्यौपारी ने प्रशान्त से कहा, "एक तो पलट जाने और एक्सीडेण्ट होने का खतरा—दूसरे छुरी-तमचा दिखा कर लूट लेते हैं।"

प्रशान्त ने बढ़ावा न देने की मुद्रा में मुस्कुराकर ही अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त की, क्योंकि वह स्वयं ट्रक पर बैठना पसन्द नहीं करता था। उसे पता था कि इन ट्रकों पर तस्करी का सामान चलता है और पूछताछ होने पर ट्रकवालों के साथ अक्सर सवारियों को भी हवालात की हवा खानी पड़ती है।

प्रशान्त उस कस्बे से पैदल ही आगे बढ़ गया लखनऊ रोड पर। पूरब की शीतल समीर में वह स्वयं को अत्यन्त प्रसन्न महसूस कर रहा था। बस के न मिलने पर उसे कोई क्षोभ भी नहीं था, क्योंकि उसके पास सारा दिन था और उसे केवल पच्चीस मील की यात्रा करके लखनऊ पहुँचना था। उसके खादी के झोले में आवश्यक कपड़े, शैक्षणिक योग्यता के सारे सर्टीफिकेट तथा अन्य उपयोगी सामान था। लखनऊ में उसे विश्वविद्यालय के स्नातकोत्तर छात्रावास में अपने लिए निर्धारित कमरा लेकर अगले दिन से राजनीतिशास्त्र विभाग में अपनी रिसर्च प्रारम्भ करनी थी।

प्रशान्त पिछले कुछ वर्षों से अपने गाँव रामनगर में रह रहा था, जो लखनऊ-हरदोई मार्ग पर सण्डीला के पास पड़ता था। रामनगर के ही प्राइमरी स्कूल में स्वेच्छा से अध्यापनकार्य करते हुए प्रशान्त ने एक प्राइवेट प्रत्याशी के रूप में बी० ए० तथा एम० ए० की परीक्षाएँ प्रथम श्रेणी में पास की थीं, कानपुर विश्वविद्यालय के हरदोई केन्द्र से। अपनी शैक्षणिक योग्यता के आधार पर लखनऊ विश्वविद्यालय के राजनीतिशास्त्र विभाग के अध्यक्ष से पत्रव्यवहार करके डाक द्वारा ही उसने रिसर्च स्कालर के रूप में विश्वविद्यालय में प्रवेश की अनुमति प्राप्त कर ली थी और अब वह प्राइमरी स्कूल की नौकरी छोड़कर स्थायी रूप से लखनऊ में रहते हुए 'समाजवाद एक राजनीतिक अध्ययन' विषय पर अनुसन्धान करने जा रहा था।

प्रशान्त घर का धुला खादी का कुर्ता और पायजामा पहने हुए था,

उसके परो मे गाँधी आश्रम की बनी डबल सोलवाली चप्पलें थी और उसके कन्धे पर लटक रहा था खद्दर का झोला। शीतल पुरवाई अब और भी शीतल हो चली थी और आकाश पर मानसून की पहली घटा घिरकर छायी हुई थी। एकाएक एक बूंद प्रशान्त के माथे पर गिरी और फिर शुरू हो गया पतली-महीन बूदो का क्रम। इससे पहले कि प्रशान्त भीगता, एक विशालकाय आयातित शेवरले इम्पाला गाडी बिना किसी आवाज के मन्थर गति से आकर उसके पास रुक गयी और बायी ओर की स्टीयरिंग पर बैठी एक नवयुवती ने सहज भाव से हाथ बढाकर गाडी का पिछला दरवाजा खोल दिया।

"तुम शायद लखनऊ जा रहे हो और पानी मे भीग जाओगे। मैं तुम्हे छोड दूगी।" नवयुवती ने कहा।

प्रशान्त पहले तो कुछ स्तब्ध हुआ युवती के इस सहृदय व्यवहार से, फिर वह निस्पृह और तटस्थ भाव से गाडी की पिछली सीट पर धीरे से धँस गया। नवयुवती ने ही हाथ बढाकर दरवाजा बन्द किया और गाडी पूरी रफ्तार से लखनऊ की ओर भागने लगी।

"तुमने अनजान आदमी को गाडी मे बैठाकर ठीक नहीं किया नीलिमा।" अगली सीट पर दाहिनी ओर बैठी युवती ने गाडी चलानेवाली युवती से अग्रेजी मे कहा।

"तुम बडी शक्की हो", नीलिमा ने कहा, "देहात के लोग भले और ईमानदार होते हैं। और फिर बेचारा भीग रहा था न।"

बातचीत अग्रेजी मे हो रही थी और प्रशान्त चुपचाप खिडकी से बाहर के दृश्य देखता हुआ बातचीत को सुन रहा था।

"तुम नही जानती", दूसरी नवयुवती ने गाडी की चालिका से कहा, "यह देहाती लोग बडे बदमाश होते हैं। मेरे डैडी को तो इन्ही देहातियो ने कार रुकवाकर लूट लिया था।"

"तुम बेकार परेशान हो रही हो", नीलिमा बोली, "यह सीधा-सा आदमी डाकू नही हो सकता। यह तो मानवता है कि हमारी गाडी मे जगह है और मैं इसमे एक गरीब आदमी को लिफ्ट दे देती हूँ।"

"क्षमा कीजिएगा", प्रशान्त ने कान्वेण्टो के उच्चारणवाली विशुद्ध

अंग्रेजी मे चल रहे वार्ताक्रम को शुद्ध हिन्दी मे तोडते हुए कहा, "यह आपकी बडी महानता है कि आपके मन म गरीबो के लिए इतनी सहानुभूति और दया है लेकिन आपकी सहेली ठीक कहती हैं, अनजान आदमियो का कोई भरोसा नही होता। मेरे झोले मे कोई हथियार है यह आप जान भी नही पायेंगी, और फिर आप लोग तो नारियाँ हैं, सामना भी नही कर पायेंगी। आप गरीब आदमियो को बडा सीधा समझती हैं यह भी आवश्यक नही है, क्योंकि बहुत से अपराध इन्ही गरीबो के हाथो होते हैं। आप मुझे अगली बस्ती आने पर उतार दें। वहाँ मैं पानी से बच सकूगा और बस भी मुझे वहीं स मिल जायगी।"

प्रशान्त की बातो मे इतनी सादगी थी कि उसमे व्यग्य है अथवा नही, इसका निणय दोनो सहेलिया नही कर पायी। परन्तु वे दोनो इस बात से अवश्य स्तब्ध थी कि प्रशान्त ने उनकी सारी बातचीत समझ ली थी।

"हमारा यह मतलब नही था।" दूसरी युवती ने कहा।

'आप हम माफ कर दीजिए।" नीलिमा ने कहा।

'किस बात के लिए माफ ?" प्रशान्त ने कहा, "जो बात आपकी सहेली ने कही वही मैं भी कह रहा हूँ। युग बदल चुका है देवीजी और अब किसी पर भरोसा नही किया जा सकता। यह बस्ती मेरी जानी हुई है—आप कृपया मुझे यहाँ उतार दीजिए जिसमे हम सभी निश्चिन्त हाकर अपने-अपने रास्ते जा सकें।"

नीलिमा ने बेमन से गाडी रोकी और प्रशान्त 'धन्यवाद' कहकर उतर गया।

पानी अब जोरो से बरसने लगा था और प्रशान्त ने एक हलवाई की दूकान की शरण ली। वहाँ उसने अपने लिए एक कुल्हड म अधिक दूध और चीनीवाली एक स्पेशल चाय बनवायी। चाय पीने के बाद प्रशान्त ने बस की प्रतीक्षा करने के इरादे स एक हिन्दी का समाचारपत्र खरीदा, पर तभी एक रोडवेज की बस आयी और कण्डक्टर ने सवारियों को आवाज दी। प्रशान्त अन्य यात्रियो के साथ बस पर बठ गया। उसने एक पाँच का नोट कण्डक्टर की ओर बढाया जिसे कण्डक्टर न बडी लापरवाही के साथ अपनी जेब मे ठूस लिया और सभी सवारियों को बैठा चुकने के बाद

सीटी बजाकर बस चलवा दी। बिना टिकट के बस मे बैठे प्रशान्त को कुछ असुविधा हो रही थी परन्तु कण्डक्टर महोदय कोई हिसाब किताब कर रहे थे। कुछ देर अन्य यात्रियो से गुफ्तगू करने के बाद कण्डक्टर साहब प्रशान्त के पास आये और उन्होंने प्रशान्त की मुट्ठी मे बडे आग्रहपूर्वक चार रुपये रखकर मुट्ठी धीरे से दबा दी।

"लेकिन टिकट तो डेढ रुपये का होता है यहा से !" प्रशान्त ने कुछ सकोचपूर्वक कहा।

"होने दो जी", कण्डक्टर बोला, "टिकट से क्या लेना देना—तुम्हे तो लखनऊ पहुँचने से मतलब !" और इतना कहकर कण्डक्टर ने एक अर्थपूर्ण मुस्कान फेंकी प्रशान्त की ओर।

प्रशान्त प्रत्युत्तर मे खिसियाके मुस्कुराया पर साथ ही उसने अपनी जेब से एक चमकती हुई अठन्नी निकाली और कण्डक्टर की हथेली मे मुट्ठी बन्द करके उसके हाथ मे थमा दी।

"यह अठन्नी और रख लो दोस्त", प्रशान्त ने कहा, "टिकट देना न देना तो तुम्हारा काम है—हमे तो किराया देने से मतलब।" और इस बार प्रशान्त आत्मविश्वास के साथ मुस्कुराया, कण्डक्टर ने अठन्नी रखते हुए एक निलज्ज सी खिसियाहट व्यक्त की।

प्रशान्त ने अपने अखबार पर ध्यान बँटाने की चेष्टा की और प्रथम पेज के शीर्षको का उसने जायजा लेना शुरू किया। टोकियो मे बैंक लुटा था, पाकिस्तान में भयकर तूफान आया था और अमरीका ने फिर एक राकेट छोडा था बम्बई के फिल्मी कलाकारो के घर से काला धन बरामद हुआ था, एक केन्द्रीय मन्त्री ने बरसो से इनकम टैक्स नही दिया था और एक प्रदेश के मन्त्री के लडके ने उसी प्रदेश के शासन से करोडो रुपयो का ठेका ले रखा था इन्दौर मे लडको ने बसें फूक डाली थी, तेजपुर के एक प्रिसिपल को छात्रो ने पीटा था और हिप्पियो का एक दल गाजे की तस्करी करते हुए वाराणसी मे पकडा गया था। प्रशान्त ने तीसरा पृष्ठ खोला—सडक-दुर्घटनाओ राहजनियो, राजनीतिक बलवो और अपहरण के किस्सो से यह पेज भरा हुआ था। प्रशान्त ने पाँचवाँ पेज नही खोला, क्योकि उसे पता था कि उस पर योजना की उपलब्धियो और मुकद्दमो तथा विधान

सभाओं के वाद-विवाद की खबरें होंगी। और तभी प्रशान्त का ध्यान बस में खड़े कुछ यात्रियों के शोर से बँट गया।

एक स्कूल का अध्यापक सा लगनेवाला व्यक्ति एक दादा टाईप आदमी का हाथ पकड़कर जोर-जोर से चिल्ला रहा था और कह रहा था कि दादा ने उसके बटुए को खींचने की कोशिश की थी और उसे वह पुलिस के हवाले कर देगा। दादा प्रतिवाद में गालियाँ बक रहा था और उसके साथी धमकियाँ दे रहे थे। बस में पुलिस का एक सिपाही भी बैठा था जो खिड़की से बाहर के दृश्य देख रहा था। कुछ लोगों ने उससे बीच बचाव करने की माँग की तो वह बोला कि वह दूसरे जिले का है और फिर इस समय तो वह छुट्टी पर है और घर जा रहा है।

कण्डक्टर ने आगे बढ़कर अध्यापक लगनेवाले व्यक्ति से पूछा कि उसका बटुआ सही-सलामत है या नहीं और उसके 'हाँ' कहने पर कण्डक्टर ने कुछ झिड़कने की मुद्रा में कहा, "तब आप कैसे कहते हैं कि इन्होंने आपका बटुआ छीनने की कोशिश की? भीड़भाड़ में धोखे से भी हाथ लग जाता है—आपको इस तरह गरम नहीं होना चाहिए।" और इतना कहकर वह दादा की ओर घूमा। हाथ जोड़कर उसने दादा से विनती की कि वे शान्त हो जायें और फिर बड़े ही आदर के साथ दादा को कण्डक्टर-सीट पर बैठा दिया। प्रशान्त का ध्यान अचानक अपने अखबार के एक बाक्स (कोष्ठक) वाले समाचार पर गया जिसमें दिल्ली की एक बस पर हुई एक वारदात का विवरण था। समाचार के अनुसार जेबकतरे और उसके साथियों ने पकड़े जाने पर यात्रियों पर छुरे के अनेक गम्भीर वार किये थे और हजारों की भीड़ में से दिन दहाड़े भाग निकलने में सफल हुए थे। प्रशान्त यहाँ बस कण्डक्टर की व्यवहारकुशलता देखकर चकित रह गया।

बस अब काकोरी पार करके लखनऊ की सीमा में प्रवेश कर चुकी थी। बादल छँट चुके थे और आकाश पर स्वच्छ सुनहली धूप का साम्राज्य था। प्रशान्त ने घड़ी देखी, सुबह के दस बजे थे। लखनऊ प्रशान्त के लिए नितान्त अजाना जगह थी पर उसे यहाँ के भूगोल के बारे में समुचित जानकारी थी और उसे ज्ञान था कि उसे डालीगंज के लोहे के पुल पर उतरना था (हालाँकि पुराना लोहे का पुल सन साठ की बाढ़ में साथ बह गया था),

पुल से उसे रिक्शा लेना था जिससे उसे विश्वविद्यालय पहुँचना था। प्रशान्त डालीगंज के पुलवाले टीले पर उतर गया और इस ऊँचाई से जब उसने अपने नये परिवेश के चारों ओर अपनी दृष्टि दौड़ायी तो वह गोमती नदी के किनारे बसे इस नव प्राचीन नगर के विहगम दृश्य को देखकर एक क्षण के लिए हतप्रभ हो गया।

प्रशान्त का ध्यान तोड़ा एक रिक्शेवाले ने। "कहाँ चलिएगा बाबू?" रिक्शेवाले ने खड़ी बोली में सवाल किया।

"विश्वविद्यालय चलोगे ?" प्रशान्त ने प्रत्युत्तर में पूछा, "और पैसे कितने होंगे ?"

"जो ठीक समझिएगा दे दीजिएगा।" रिक्शेवाले ने कहा और वह रिक्शे का हुड खोलने लगा पर प्रशान्त ने वैसा करने से मना कर दिया।

विश्वविद्यालय पहुँचकर प्रशान्त सीधे राजनीतिशास्त्र विभाग पहुँचा और विभागीय अध्यक्ष डॉक्टर रंगनाथन को उसने अपना परिचय दिया। प्रोफेसर रंगनाथन ने उससे मिलकर अपनी प्रसन्नता व्यक्त की और एक पत्र पोस्ट ग्रेजुएट होस्टल के प्रोवोस्ट के नाम लिखकर दे दिया ताकि उसे अपने लिए तुरन्त ही कमरा मिल सके। अगले दिन सुबह का समय लेकर प्रशान्त ने डाक्टर रंगनाथन से विदा ली और रिक्शे पर बैठकर वह पोस्ट ग्रेजुएट होस्टल पहुँचा।

"कोई सर्वोदयी नेता आया है।" एक माड छात्र ने अपनी झाड़नुमा मूँछों को हिलाते हुए व्यंग्य किया। गन्दी वेशभूषा में हिप्पी से दिखनेवाले उसके एक साथी छात्र ने कहा, 'पर साला पदयात्रा करके नहीं आया है—ठाठ से रिक्शे पर बैठकर आया है। मुझे तो यह मंजन बेचनेवाला लगता है।" प्रशान्त की नाक गाँजे की महक से परिचित थी और ये दोनों विद्यार्थी सिगरेटों में गाँजा मिली तम्बाकू भरकर दम पर दम लगा रहे थे। प्रशान्त चुपचाप आगे बढ़ गया।

वाडन साहब के कमरे में पहुँचकर प्रशान्त को पता चला कि उनसे उसकी भेंट शाम के चार बजे से पहले नहीं हो सकेगी। प्रशान्त चलने के लिए मुड़ा ही था कि चपरासी ने उसे हिदायत दी कि वह पाँच बजे से पहले ही आ जाये, क्योंकि वाडन साहब पाँच बजे के बाद रुकते नहीं थे।

२

प्रशान्त के सामने सारा दिन था और एक अनिश्चय के भाव से वह युनिवर्सिटी रोड की ओर चल पडा। सामने ही उसे एक बस मिल गयी और उसने चारबाग का टिकट ले लिया। चारबाग पर उतरकर कुछ क्षणों तक वह लखनऊ जक्शन के ब्रिटिशकाल मे निर्मित भवन को देखता रहा। अपनी विशाल अट्टालिकाओ के कारण वह सहज ही कोई राजमहल सा प्रतीत हो रहा था। बुकिंग विण्डो से एक प्लेटफार्म टिकट लेकर वह स्टेशन की लिफ्ट से ऊपर पहुँचा और वहा के एक आधुनिक वेटिंग रूम मे उसने जमकर स्नान किया फिर कपडे बदलकर वह प्लेटफार्म नम्बर एक पर पहुँच गया। वहा उसने एक पूडीवाले से गरम पूडी और आलू का साग लेकर जलपान किया।

स्टेशन से बाहर निकलते ही प्रशान्त को कुछ रिक्शेवालो और होटलो के गाइडो ने घेर लिया। प्रशान्त सभी से कतराता हुआ चारबाग अमीनाबाद मार्ग पर बढ चला। ए० पी० सेन रोड के चौराहे पर उसे एकाएक ध्यान आया कि उसके बाडन का मकान इसी सडक पर है और वह बँगले का नम्बर ढूढते हुए बाडन साहब के घर पहुँच गया। बाडन साहब अपने दोस्तो के साथ ब्रिज खेल रहे थे और उन्होने प्रशान्त को अन्दर बुलवा लिया।

"क्या चाहते हो ?" प्रशान्त से बाडन साहब ने पूछा।

"मेरा नाम प्रशान्त मोहन है", प्रशान्त ने कहा, "मेरा प्रवेश राज-नीति शास्त्र विभाग में रिसर्च स्कालर के रूप में हो गया है। प्रोफेसर रंगनाथन ने बताया है कि आपके छात्रावास में मेरा एडमीशन होना है।"

"तुम ?" वार्डन साहब कुछ चौंके, "क्या तुम्हारा नाम ही प्रशान्त मोहन है ?"

"जी हाँ", प्रशान्त ने कहा, "आपको शायद आश्चर्य हो रहा है ?"

"आश्चर्य तो नहीं पर खुशी हो रही है कि मेरे सामने एक बहुत ही ब्रिलियण्ट विद्यार्थी खड़ा है। हम सबको तुमसे मिलकर बहुत ही प्रसन्नता हुई—बैठ जाओ न !" वार्डन साहब ने कहा।

"क्षमा कीजिएगा सर", प्रशान्त ने कहा, "मैं लखनऊ के लिए अज-नबी हूँ इसलिए यदि आप मेरे रहने का प्रबन्ध जल्दी करा सकें तो बड़ी कृपा होगी।"

"देखो बन्धु", वार्डन साहब अब तक अपनी स्वाभाविक मुद्रा में आ चुके थे, "तुम्हारी दरख्वास्त और डीन की रिकमण्डेशन मुझे पिछले महीने ही मिल चुकी थी पर तुम्हारा फार्मल एडमीशन मैं होस्टल में इसलिए नहीं करवा पाया कि कुछ विद्यार्थी नेता रिसर्च स्कालरों के कमरों में जमे हुए हैं और उनसे कमरों को खाली करवाना मेरे बस की बात नहीं है। तुम इस सम्बन्ध में वाईस चान्सलर से बात कर सकते हो पर वह कुछ कर पायेंगे इसमें मुझे शक है।"

प्रशान्त ने चुपचाप वार्डन साहब की बात सुनी। "ठीक है", उसने कहा, "मैं अपनी व्यवस्था कहीं और कर लूंगा।"

'मेरा मतलब यह नहीं था", वार्डन साहब प्रशान्त की निस्पृहता से कुछ विचलित हो गये थे, "मैं पूरी कोशिश कर रहा हूँ उन कमरों को खाली करवाने की और मुमकिन है इस बारे में मुझे पुलिस की भी सहा-यता लेनी पड़े" उन्होंने कहा।

प्रशान्त के चेहरे पर एक विनय और नम्रतापूर्ण मुस्कान खेल गयी। "आप परेशान न हों सर", उसने कहा, "यहाँ मेरे अनेक सम्बन्धी हैं जहाँ मैं अपना अस्थायी प्रबन्ध कर लूंगा और इस बीच आपसे मिलता रहूँगा।" और इतना कहकर सभी का सादर अभिवादन करते हुए प्रशान्त सड़क पर

निकल आया।

एक रिक्शा उधर से निकल रहा था जिसे प्रशान्त ने रोका। रिक्शे वाले ने अपने अँगोछे से रिक्शे की सीट को झाड़ा और बड़े अदब से बोला, "तशरीफ रखिए हुजूर।"

"काउन्सिलस रेसीडेंस चलना है।" प्रशान्त ने कहा, पर रिक्शेवाले की शक्ल पर प्रश्नवाचक चिह्न देखकर उसने स्वयं को सुधारा, "मेरा मतलब विधायक निवास से है—समझते हो न?"

"जी नहीं सरकार", रिक्शेवाले ने कहा, "लेकिन आप फिक्र न करें, किसी शरीफ आदमी से दरियाफ्त कर लेंगे। वैसे यह किस मुहल्ले में पड़ता है हुजूर?"

प्रशान्त रिक्शेवाले की बातचीत के लहजे को सुनकर चौंका, पर लखनऊ के बारे में उसने इतना पढ़ रखा था कि वह समझ गया कि यह रिक्शेवाला कौन हो सकता है। "इक्का क्या किया बड़े मियां?" प्रशान्त ने छूटते ही प्रश्न किया।

'बुरा हो इस महँगाई का हुजूर—न तो इक्के की मरम्मत करवा सका और न ही नयी घोड़ी मोल ले सका। अब तो इसी शैतानी चक्कर के सहारे बुढ़ापे में अपना और बच्चों का गुजारा चल रहा है गरीबपरवर! बड़ा लड़का दिन-भर नौकरी करता है ईमामबाड़े में और रात को वह रिक्शा चलाता है और शाम तक मैं खींचता हूँ।" अधेड़ उम्र के, पुरानी लखनवी सभ्यता के प्रतीक इस व्यक्ति का उत्तर सुनकर प्रशान्त को कुछ धक्का-सा लगा।

'विधायक निवास रायल होटल की इमारत के पास पड़ता है बड़े मियां, और एम० एल० ए० लोग वहां रहते हैं।" प्रशान्त ने बताया।

"वाह हुजूर", बड़े मियां प्रसन्न भाव से बोले, तो गोया आपका इशारा दारुलशफा की ओर है—एमेले तो वहीं रहते हैं! क्या कहने हैं वहाँ की शान और शौकत के अभी मिनटों में पहुँचाता हूँ। क्या सरकार कहीं बाहर से तशरीफ लाये हैं?"

"रहनेवाले तो हम भी लखनऊ जिले के हैं, पर ज्यादातर मैं बाहर ही रहा और आज पहली बार लखनऊ आया हूँ—आपकी तारीफ जान

सकता हूँ ?" प्रशान्त ने पूछा।

"हुजूर शर्मिन्दा करते हैं।" कैण्टोनमेण्ट रोड के चौराहे की लाल बत्ती पर रिक्शे को ब्रेक लगाते हुए बड़े मियाँ बोले, "इस तीन पहिये के मजदूर की क्या तारीफ सरकार—दो टके का गुलाम समझिए। वैसे इस नाचीज़ को अख्तर कहते हैं। वैसे आज भी सरकार की ओर से दस रुपये का वसीका बँधा है और लखनऊ की तवारीख में हमारे बुजुर्गों के नाम गिनाये जाते हैं। वैसे सुना है कि गवर्नमेण्ट इस वसीके को बन्द करने पर गौर कर रही है—क्या यह सच है गरीबपरवर ?"

प्रशान्त जानता था कि राजाओं के प्रिवीपर्स बन्द हो चुके हैं और उसका यह अनुमान था कि सरकार सामन्तवाद के अवशेष इन गरीब और पिसे हुए लोगों का भी वसीका कभी-न-कभी बन्द अवश्य कर देगी, पर यह बात कहकर वह उस बुजुर्ग की उम्मीद को तोड़ना नहीं चाहता था। उसने कहा, "अजी भगवान का नाम लीजिए बड़े मियाँ, सरकार क्यों ख्वामख्वाह आपके हक को खत्म करेगी? और फिर सरकार पुराने नवाबों और जमींदारों के असर से भी वाकिफ है—उसे वसीका बन्द करके क्या अपने वोट खोने हैं ?'

"ठीक कहते हो बेटा", बूढ़े रिक्शेवाले के स्वर में प्रशान्त के लिए असीम स्नेह का भाव था, "सभी की तनख्वाहों और भत्तों में महँगाई को देखते हुए इजाफा हो रहा है और हमारे वसीके पचास सालों से वैसे ही चले आ रहे हैं। अगर तुम किसी 'एमेले' को जानते हो तो यह सवाल एसेम्बली में जरूर उठवाना—खुदा तुम्हारा भला करेगा।"

प्रशान्त ने विधायक निवास पहुँचकर बड़े मियाँ को एक रुपया दिया जिसे पाकर वह बेहद खुश हुए। विधायक निवास के 'बी' ब्लाक के कमरा नम्बर दो सौ बारह के सामने जब वह पहुँचा तो उसे अन्दर से बड़े जोर के वाद विवाद का स्वर सुनायी पड़ा। एक चपरासी किस्म के छुटभइये नेता को कमरे में आता देख प्रशान्त ने उससे कहा कि वह श्री राजेन्द्रपाल, एम० एल० ए० का भाई है और रामनगर से आया है। छुटभइये नेता ने तुरन्त सूचना अन्दर पहुँचायी और श्री राजेन्द्रपाल फौरन बाहर आये।

"कहो प्रशान्त, ठीक हो ?" प्रशान्त के चचेरे भाई राजेन्द्रपाल ने

कहा, 'तुम्हारे दादाजी का पत्र मुझे कल ही मिला और इसी फ्लट मे मैंने तुम्हारी व्यवस्था करवा दी है। हमारी पार्टी की मीटिंगें ही होती हैं इसम और वह भी महीने म एकाध बार, बाकी समय यह फ्लट खाली ही रहता है—तो तुम इसमें आराम से रह सकते हो। खाना बनाने की सारा व्यवस्था है और अगर चाहो तो मासिक बोडर बन सकते हो तुम यहाँ के होटल के।'

'यह आपकी कृपा है।" प्रशान्त ने कहा, "मैं खाना होटल ही म पसन्द करूँगा, क्योंकि खुद बनाने मे बडी झझट होगी।'

'ठीक है', राजेन्द्रपालजी बोले, "तुम अन्दर आ जाओ। अभी कुछ देर म यह मीटिंग समाप्त हो जायेगी और मैं भी एसेम्बली चला जाऊँगा। जहाँ से शाम की ट्रेन से मुझे सीधे गोरखपुर जाना है। हमारी पार्टी उप चुनाव वही से लड रही है और आज से यह फ्लट तुम्हारे जिम्मे।"

प्रशान्त राजेन्द्रपालजी के साथ ड्राइगरूम म जाकर एक कोने म चुपचाप बैठ गया।

'आप लोग निश्चिन्त होकर बात कर सकते है।' राजेन्द्रपाल बोले, 'यह मेरा चचेरा भाई प्रशान्त है यही विश्वविद्यालय म रिसच करने आया है और अब यही रहेगा।"

'तो राजेन्द्रपालजी', एक लम्बे और तन्दुरुस्त नता बोले, "मेरी योजना यह है कि कल जब शिवमोहन उपाध्याय के कमरे मे वह अध्यापिका आये तब हम चुपके से उनके कमरे म ताला बन्द कर दें और विधान सभा म शोर मचाकर रंगे हाथो अध्यापिका के साथ उन्हे पकडवा दें। इससे बच्चू की वह बदनामी होगी कि उपचुनाव म जमानत ही जब्त हो जायगी और हमारा उम्मीदवार भारी बहुमत से जीतेगा।"

"पर वह अध्यापिका तो शिवमोहन की रिश्तदार है और विधवा भी है। इस काण्ड से उस बचारी बेवा की जो बदनामी होगी, इसका आप लोगो को अनुमान है?" एक कमजोर-से नता न धीमी आवाज म कहा।

'राजनीति म सब चलता है।" पहलवान नेता बोले, हम तो शिव-मोहन और उनकी पार्टी को चुनाव म धूल चटाना है और इसके लिए हम

सबकुछ कर सकते हैं—राजनीति में सही-गलत सोचना मूर्खता है ।"
अन्य नेताओ पर इस पहलवान नेता का प्रभाव स्पष्ट था और सभी ने उनकी योजना का अनुमोदन किया ।

"और सुनो रामलोचन", पहलवान नेता ने कमजोर नेता से कहा, "अगर तुमने भण्डाफोड किया तो समझ लेना मुझसे बुरा कोई न होगा । अगले चुनाव मे तुम्हे टिकिट मिलना न मिलना मेरे हाथ में है, यह याद रखना ।"

प्रशान्त के मस्तिष्क में प्रजातन्त्र की अनेक परिभाषाएँ गूज रही थी जिन्हे उसने प्रारम्भिक कक्षाओ से लेकर एम० ए० तक की परीक्षाओ के दौरान समय समय पर याद किया था, परन्तु जनतन्त्र के इस व्यावहारिक रूप को प्रत्यक्ष अपने सामने देखकर वह किंकर्त्तव्यविमूढ हो गया । थोडी ही देर में सभा समाप्त हो गयी और सभी नेतागण अपनी कलफदार गाधी टोपियाँ लगाकर कमरे से बाहर चले गये ।

"यह चाभी है", राजेन्द्रपालजी ने प्रशान्त से कहा, "तुम्हारे लिए मैं नीचे होटल के ठेकेदार से कह दूगा कि वह तुम्हे खाना यही भेज दे और तुम तब तक आराम करो । मैं शायद अगले सप्ताह के अन्त तक लौटू—मुझे आशा है कि तुम्हे कोई कष्ट नही होगा ।"

प्रशान्त ने सन्तुष्ट भाव से चाभी ले ली और राजेन्द्रपालजी के जाने के बाद कमरा अन्दर से बन्द कर लिया । फिर कुछ आराम करने के इरादे से वह तख्त पर लेट गया और शीघ्र ही उसे नींद आ गयी । प्रशान्त की नींद तब खुली जब होटलवाला लडका दरवाजा पीट-पीटकर चिल्ला रहा था । प्रशान्त ने उठकर दरवाजा खोला, एक पहाडी बालक एक बडी सी थाली लिये उसके सामने खडा था ।

"इतना सारा खाना ?" प्रशान्त ने थाली मे रखी रोटियो की गड्डी और चावल के पहाड को देखकर पूछा ।

"थाल में इतना ही होता है शाब", लडका बोला, "एमेले लोग इसे भी कम बताते हैं ।"

प्रशान्त ने आधी रोटियाँ और आधा चावल वापस भेजकर अपना भोजन समाप्त किया । भरपेट भोजन के बाद उसे आलस्य ने आ घेरा ।

इस नये वातावरण मे वह जिन अनुभवो से गुजर रहा था उनकी गति कुछ तेज अवश्य थी, परन्तु उसे यह सब अप्रत्याशित नही लग रहा था। उत्तर प्रदेश की राजधानी लखनऊ का वातावरण उसे राजनीति से 'चार्ज्ड' लगा। अपनी पुस्तका मे पढे राजनीतिशास्त्र और इस यथार्थ जीवन की राजनीति मे उसे घोर विरोधाभास प्रतीत हो रहा था, परन्तु शायद वह पहले से ही आभास पा चुका था कि यथार्थ और आदर्शों मे बडा व्यापक अन्तर होता है। प्रजातन्त्र और समाजवाद पर पढी हुई अपनी पाठय पुस्तको के मतमतान्तरो मे उलझा हुआ वह कब सो गया, यह उसे याद नही रहा।

३

कुछ मधुर स्वरा की तीखी बहस से प्रशान्त की नीद जब टूटी तो उस समय आकाश पर धुधलका छा चुका था। घडी देखने पर तो उसे पता चला कि वह कई घण्टे सो चुका है। उसने खिडकी से बाहर झाका और पाया कि उसके पडोस के कमरो की कुछ औरतें अपने कमरो से बाहर निकलकर वाक्युद्ध मे व्यस्त हैं और शुद्ध अवधी, भोजपुरी और ब्रजभाषा मे एक-दूसरे के पतियो और खानदानो के अवगुणो का बखान कर रही हैं। प्रशान्त ने उठकर बत्ती जलायी और तौलिया लेकर वह सीधे स्नानगृह मे घुस गया। शावर खोलते ही पानी की तेज फुहारो ने उसके सारे आलस्य, थकान और कुण्ठाओ को पल-भर मे ही धो डाला। घर के धुले खादी के कपडो को पहनकर जब वह बाहर निकला तो पडोस का झगडा तब तक समाप्त हो चुका था और अब बगल के फ्लटो से शाम के भोजन की छौंक-बघार की मिली-जुली खुशबू वातावरण मे फैली हुई थी। प्रशान्त अपने कमरे मे ताला लगाकर घूमने के इरादे से हजरतगज की ओर निकल पडा।

लालबाग के गोल चौराहे से हजरतगज की ओर आते-आते प्रशान्त ने अपनी कल्पना के हजरतगज से वास्तविक हजरतगज का मिलान करना चाहा और उसे लगा कि वह उस हजरतगज से पूरी तरह परिचित है। नियोन रोशनियो पर थिरकते हुए तरह-तरह की शराबो और विलासिता

के विज्ञापनो के बीच जीवन बीमा, छोटी बचत और परिवार नियोजन के भी जलते बुझते विज्ञापन, सकडो माडन युवक-युवतियो के बीच खद्दरधारी नेता और फटेहाल मजदूर, बडे-बडे कीमती रेस्तराओ के बीच खोमचे वाले और चाय कॉफी के सस्ते स्टाल, सूचना केन्द्र के सामने समाचार सुननेवाले राजनीतिक रूप से जाग्रत क्लर्कों की भीड और देशी घी की मिठाई की दूकानो पर काले धन को खच करते हुए उच्चवर्गीय लोग और इन सब के बीच एक अन्धा भिखारी, एक भीख मागनेवाली ईसाई बुढिया, मेम-साहब और एक सिगरेट मागनेवाला भिखारी—यह सभी कुछ प्रशान्त को नितान्त परिचित लगा। नरही के चौराहे पर पहुँचकर प्रशान्त की इच्छा उस प्रसिद्ध कॉफी हाउस मे जाने की हुई जिसके माहौल के बारे मे उसकी जानकारी समुचित थी, जहा उत्तर प्रदेश ही नही, राष्ट्रीय स्तर के बौद्धिक लोग एक प्याला काफी पर न जाने कितने ही मूल्यवान विचार व्यथ ही व्यक्त कर जाते हैं और इन्ही अफवाहो और चर्चाओ मे बडे-बडे पत्रकार अपनी राजनीतिक समीक्षाओ के लिए सामग्री खोजते हैं।

प्रशान्त चुपचाप कॉफी-हाउस के एक कोने की खाली टेबुल पर बठ गया और रसोई के धुएँ से काली हो गयी दीवारो का जायजा लेने लगा। उसे पता था कि इस कॉफी हाउस के बरे ग्राहको को खामख्वाह तग नही करते क्योकि अनेक ग्राहक तो यहाँ केवल पानी पीकर बौद्धिकता का आनन्द लेने आते हैं। एक बरा आकर पानी के गिलास उठा ले गया और दो गिलास पानी प्रशान्त के लिए रख गया। सारे कॉफी-हाउस म ताजी भुनी हुई कॉफी और स्नक्स की सोधी महक फल रही थी और एक ऐसा मिला-जुला कोलाहल उठ रहा था बातो का, जो कभी-कभी एकरसता का धोखा दे रहा था।

प्रशान्त की बगलवाली मेज पर दो व्यक्ति आकर बठ गये थे जिनमे एक बढी हुई कलमो और जुल्फोवाला व्यक्ति किसी प्राइवेट कम्पनी का एक्जीक्यूटिव मालूम दे रहा था और दूसरा स्थूलकाय व्यक्ति कोई व्यौपारी लगता था। प्रशान्त अपने लिए कॉफी का आडर देना चाहता था और बैरे की तलाश मे था कि तभी उसका ध्यान बगलवाली टेबुल पर हो रहे वार्तालाप की ओर गया।

"मिस्टर मल्कानी," बडे बालोवाले व्यक्ति ने अपने साथी से कहा, "आप हमारे बॉस के ठहरने और उनकी खातिरदारी का शानदार इन्तजाम भर कर दीजिए और बाकी मेरे ऊपर छोड दीजिए।"

"अरे खातिर की बात करते हो प्यारे!" मिस्टर मल्कानी ने कहा, "तुम्हारे साहब की तो मैं तबीयत तर कर दूंगा। बस एक बार मेरे को एजेंसी भर दिलवा दो, फिर देखो मजा। हम तुम्हारा बिग बॉस को फाईव स्टार होटल में टिकायेगा, खास स्कॉच शराब पिलायेगा मगर प्यारे एजेन्सी हमारे को ही मिलनी चाहिए। तुम्हारे कम्पनी का टायर पर तो सारे हिंदुस्तान की पब्लिक साली मरती है।"

"आप बेफिक्र रह," बडे बालोवाले व्यक्ति ने कहा, "और फिर टायरो मे तो हमारी कम्पनी की मोनोपली है सारे हिंदुस्तान म लेकिन मुनाफा पीटते वक्त मेरा पर्सेंटेज न भूल जाइएगा।"

"तुम भी छोटा बात बोलता है मिस्टर सक्सेना!" मिस्टर मल्कानी ने एक आयातित विदेशी ब्राण्ड की सिगरेट पेश करते हुए कहा, "तुम बोलेगा तो हम तुम्हारा कमीशन का शेयर एडवांस में देगा, बस तुम मिस्टर राजराजन को हमारा माफिक कर दो।"

प्रशान्त को अजीब उबकाई-सी महसूस हुई निजी स्वामित्व के इस घिनौने रूप को देखकर और चूकि बैरा अभी तक कॉफी का आडर भी नही ले गया था, प्रशान्त ने उठ पडने मे कोई दिक्कत नही महसूस की। वह कॉफी-हाउस से बाहर आया और हजरतगज चौराहे पर उसे काले पाषाण की महात्मा गाधी की वह मूर्ति दिखायी पडी जिसका अनावरण कभी स्वय पण्डित नेहरू ने किया था। प्रशान्त को इस भयकर गर्मी के मौसम में भी गांधीजी की वह मूर्ति बेहद ठण्डी मालूम पडी। उसके ऊपर जलती हुई धुंधली पीली रोशनी उस मूर्ति को और भी डिप्रेसिव बनाती-सी प्रतीत हुई। प्रशान्त उस महामानव के दयनीय अस्तित्व को देखकर कुछ विचलित अवश्य हुआ, पर उन मूल्यो को नही नकार पाया जिनका प्रतीक थे गाधी। उसी मूर्ति के सामने विदेशी शराब बिक रही थी, एक सिनेमा हॉल के बाहर गुण्डे स्त्रियो पर आवाजें कस रहे थे और कुछ अन्य दादा लोग सिनेमा के टिकटो का खुले आम ब्लैक कर रहे थे। एक पुलिसवाला बिना

वजह एक रिक्शेवाले को घटिया किस्म के अपशब्द कहते हुए डण्डे के जोर से अपना रिक्शा आगे बढाने को कह रहा था और वह दरिद्र रिक्शेवाला गिडगिडा रहा था कि उसे एक सवारी से मजदूरी लेनी है जो दस का नोट तुडाने गया है। प्रशान्त को यह सब एक ऐसे क्रम से बंधी हुई घटना प्रतीत हुई जिसे सब लोग चाहते हैं कि रोका जाये पर रोक कोई नही पा रहा है। ऐतिहासिक धाराओ पर विचार करते हुए प्रशान्त अपने कमरे म पहुँच गया जहा होटल का खाना खाने के बाद एक अंग्रेजी उपन्यास पढता हुआ वह सो गया।

प्रशान्त की आँख शास्त्रीय सगीत की मधुर तान से सुबह साढे पाच बजे ही खुल गयी। पहले तो उसे लगा कि किसी रेडियो पर मगलध्वनि का कार्यक्रम हो रहा है, पर तभी उसे प्रतीत हुआ कि स्वर पडोस के कमरे में तानपुरे पर गाती हुई किसी युवती का है। शास्त्रीय सगीत के माधुर्य का जीवन्त प्रभाव प्रथम बार प्रशान्त ने अनुभव किया और वह प्रफुल्ल मन से बिस्तर से उठ गया। शीघ्र ही नहा-धोकर वह तयार हो गया और दारुल शफा मे नीचे उतरकर एक देशी होटल म चाय-टोस्ट खाकर हजरतगज की ओर चल पडा जहाँ से बस पकडकर उसे विश्वविद्यालय जाना था।

विधान भवन के बस अड्डे पर पहुँचते ही उसे नौ नम्बर की एक बस मिल गयी जिस पर छात्र-छात्राओ की भीड थी। प्रशान्त चकित था छात्रो की वेशभूषाएँ और हेयर स्टाइलें देखकर। प्रशान्त को लगा कि छात्रो के यह कपडे और केशविन्यास ठीक वसे हैं जसे बडी-बडी कपडा मिलो के विज्ञापनो मे होते हैं। सजे सँवरे खूबसूरत माडलोवाले उन विज्ञापनो से देश भर की रगबिरगी कीमती पत्रिकाएँ भरी रहती हैं। प्रशान्त की निगाह से यह भी नही छुप सका कि अधिकाश कपडे विदेशी और देशी सिन्थेटिक फाईबर से बने हुए थे और उनकी सिलाई भी कम खर्चीली न थी। इन वेशभूषाओ मे शालीनता का अभाव उसे बुरी तरह से महसूस हुआ और लगा कि शायद इन्हें पहनते ही युवको और युवतियो के व्यवहार और व्यक्तित्व म एक अजीब सी उच्छ खलता अनावश्यक रूप म प्रवेश कर

जाती है।

चलती हुई बस मे भीड के बीच सहमी-सिमटी भली-सी छात्राएँ असहाय स्थिति मे खडी थी और महिला सीटो मे बैठे युवा छात्र भद्दे मजाक कर रहे थे। दो चार बुजुग भी बस मे थे जो छात्रो के परिहास और मनोरजन का लक्ष्य बने हुए मौन भाव से अपमान के कडुए घूट पी रहे थे। कुछ देहाती किसान भी बठे थे जिन्हे या तो पीछे से नोचा-खसोटा जा रहा था या जिन्हे 'मग्घे', 'कुल्हड' या हाऊलट' जसे नामो से सम्बोधित किया जा रहा था। बस का कण्डक्टर निरीह भाव से अपना काम कर रहा था। अनेक छात्र टिकट नही लेना चाहते थे और कण्डक्टर से उनकी बहस हो रही थी। कुछ अन्य छात्र केवल दस का एक सिक्का देकर बिना टिकट यात्रा करना चाहते थे। हलवासिया मार्केट से छात्रो का एक दल ऐसा चढा जिसने कण्डक्टर से टिकट के पसे मागने पर उसे 'उडा देने' की धमकी देते हुए अपना रामपुरिया चाकू भी दिखा दिया। कण्डक्टर से निबट चुकने के बाद इस दल के युवको ने अशोभनीय भाषा का प्रयोग करते हुए बस मे प्रवेश किया। प्रशान्त को एक अजीब सी घुटन महसूस हुई इस वातावरण मे और वह सेण्ट्रल स्पोटस स्टेडियम के पासवाले बस स्टाप पर उतर पडा।

अब प्रशान्त पैदल ही विश्वविद्यालय की ओर चल पडा था। गोमती नदी पर बने हुए पुल पर चढते ही उसे लखनऊ विश्वविद्यालय की विशाल इमारतो के दशन हुए जो किसी खिलौने की माडेल सी प्रतीत हो रही थी। पूव की ओर उसे हनुमानजी की मूर्तिवाला सकट मोचन मन्दिर दिखायी पडा जिसके कारण इस ब्रिज का नाम हनुमान सेतु पडा था। पश्चिम की ओर गोमती के किनारे बनी इतिहास प्रसिद्ध इमारत 'छतरमजिल' दिख-लायी पडी जो समय के थपेडो को झेलने के बाद भी अपने अस्तित्व का बोध करा रही थी और ठीक उसके पीछे वह विशाल स्तम्भ खडा था जिसे शासन ने अज्ञात शहीदो की स्मृति को सुरक्षित रखने के लिए बनवाया था। इस सारे दृश्य का आनन्द लेते हुए प्रशान्त विश्वविद्यालय की ओर बढ़ता चला गया।

साइकिलो, रिक्शो, स्कूटरो और मोटर गाडियो पर छात्रो का काफिला युनिवर्सिटी की ओर बढ रहा था, पर इनके बीच ही उसे अनेक

६६६ उपन्यास

साधनविहीन छात्र ऐसे भी दिखायी पडे जो धोती, पायजामा और मोटे सूती कपडे की घर म धुली बिना प्रेस की हुई कमीजें पहने थे। सस्ती चप्पलें या पुराने बूट पहने वे सडक पर पैदल जा रहे थे। प्रशान्त छात्रो में व्याप्त इस वर्गभेद को देखकर स्तब्ध था, पर साथ ही उसे यह भी पता था कि यह असमानता सारे देश मे फली आर्थिक और सामाजिक असमानता के मुकाबले कुछ भी नही है। उसे अनुभव हुआ कि इस समस्त व्यवस्था में एक व्यापक और आमूल परिवतन की आवश्यक्ता है।

विश्वविद्यालय के प्रथम गेट से प्रवेश कर प्रशान्त कनिंग कालेज के मुख्य भवन मे पहुँचा। कला सकाय की इस प्राचीन इमारत के दक्षिण पूर्वी कोने मे स्थित राजनीति शास्त्र विभाग के वाहर छात्र छानाओ की भीड थी जो शायद एडमीशन के लिए इण्टरव्यू देने आये थे। प्रशान्त ने चपरासी को एक स्लिप पर अपना नाम लिख दिया और कुछ ही क्षणा म प्रोफेसर रगनाथन न उसे अ दर बुलवा लिया।

'देखो प्रशा त," रगनाथन ने कहा, "वसे तो मैं तुम्हे किसी भी सीनियर टीचर गाइडेन्स मे रिसच करवा सकता था पर तुम्हारे सबजेक्ट और तुम्हारी मेरिटस को देखकर मैंने खुद तुम्ह गाइड करने का निणय लिया है।"

"सर," प्रशान्त ने कुछ हिचकिचाते हुए कहा, "हायर सेकेण्डरी स्तर तक ता मेरा शिक्षा-माध्यम अग्रेजी रहा है, पर तु उच्च शिक्षा मैंने स्वेच्छा से हि दी भाषा के माध्यम से ग्रहण की है और अपनी रिसच भी मैं हिन्दी मे ही करना चाहता हूँ।"

प्रोफेसर रगनाथन मुस्कुराये। "ठीक है," उ होंने कहा, "वसे मेरा हि दी ज्ञान सामा य ही है पर सस्कृत मैंने भी बी० ए० तक पढी है—तो तुम्हारे साथ हि दी की थीसिज गाईड करना मेरे लिए भी एक दिलचस्प अनुभव होगा। क्या तुम अपनी सिनाप्सिस साथ लाये हो ?"

'जी सर !" प्रशा त ने कहा और दा टाईप्ड पष्ठा मे अपनी सिनाप्सिस फाईल से निकालकर प्रोफेसर रगनाथन को दे दी।

'इसे मैं देख लूगा," प्रोफेसर रगनाथन न कहा, "और तब तक तुम टैगोर लाइब्रेरी जाकर समाजवाद से सम्बधित बिब्लियोग्राफी तैयार

करना शुरू कर दो। आज मैं कुछ व्यस्त हूँ, लडको के एडमीशन के सिलसिले मे तो कल तुम मुझसे चौथी पीरियड के बाद यही डिपाटमण्ट मे मिलना।" और प्रशान्त प्रोफेसर रगनाथन से विदा लेकर कमरे के बाहर निकल आया।

"आप ?" प्रशान्त के मुख से अनायास ही यह शब्द निकल गया, उसी नवयुवती को अपने सामने देखकर जिसने लखनऊ रोड पर उसे अपनी कार मे लिफ्ट दी थी।

"यही सवाल मैं आपसे करनेवाली थी।" नवयुवती ने कहा, "इतनी जल्दी आपसे मुलाकात हो जायेगी यह सोचा भी नही था। वैसे मेरा नाम नीलिमा है और मैं पॉलिटिक्स के एम० ए० क्लास मे एडमीशन के लिए कैण्डीडेट हूँ। क्या आप प्रोफेसर रगनाथन को जानते हैं ?"

"कल ही मैं उनसे पहली बार मिला हूँ," प्रशान्त ने कहा, "अपनी रिसर्च के सम्बन्ध मे और आज वे स्वय मुझे गाईडेन्स देने के लिए सहमति दे चुके हैं।"

"ओह—हाऊ लकी !" नीलिमा ने कहा, "प्रोफेसर रगनाथन तो इण्टरनेशनल रिप्यूट के पॉलिटिक्ल साइण्टिस्ट है आप उनसे कहकर मेरा ऐडमीशन करवा सकते हैं। वसे मेरा टोटल एग्रीगेट पचास परसेण्ट है, पर पॉलिटिक्स मे मेरे सिक्सटी परसेण्ट है।"

-"पॉलिटिक्स नही," प्रशान्त ने कहा, "आधुनिक विद्वान इसे पॉलिटिकल सायन्स कहने का आग्रह करते हैं।"

"ओह—आई एम सो सारी !" नीलिमा बोली, "बात यह है कि मैं कुछ घबरायी हुई सी हूँ आई मीन आई एम नवस मिस्टर !"

"प्रशान्त !" प्रशान्त ने वाक्य पूरा किया, "वैसे आपके नम्बरो के हिसाब से तो आपका ऐडमीशन होना कठिन नही लगता है। भाग्य पर भरोसा रखिए और दृढता के साथ इण्टरव्यू दीजिए।"

"मिस नीलिमा !" चपरासी ने आवाज लगायी।

"आपका नाम पुकारा जा रहा है," प्रशान्त ने कहा, 'और मुझे भी लाईब्रेरी जाना है। कल सवेरे चौथे पीरियड के बाद मुझे प्रोफेसर रगनाथन से मिलना है। यदि आपके ऐडमीशन मे कोई कठिनाई हो तो

आप मुझे वतला दीजिएगा।"

प्रशान्त दिन भर लाईब्रेरी में बठा पुस्तकों की सूचियों और उनके शीर्षकों में उलझा रहा। प्लेटो के पूर्ववर्ती सोफिस्ट विचारकों से लेकर मार्क्स और गांधी तक एक बहुत लम्बी पर दिलचस्प यात्रा थी समाजवाद की और इस सारी अवधि के बीच बिखरे और खोये हुए ऐतिहासिक दस्तावेजों की सूची बनानी थी प्रशान्त को। यह प्रारम्भिक कार्य काफी लम्बा और कई दिनों का था। घडी में जब चार के घण्टे बजे तो प्रशान्त को लगा कि अब तक वह काफी थक चुका है और वह धीरे धीरे टहलता हुआ विश्वविद्यालय के बाहर निकल गया।

४

प्रशान्त जब दारुलशफा के अपने कमरे में पहुँचा, उस समय पाच बज चुके थे। कमरे में प्रवेश करके उसने सिटकिनी लगायी ही थी कि किसी ने धीरे से बाहर से साँकल खटखटायी। प्रशान्त ने दरवाजा खोला और वह स्तब्ध रह गया। सोलह-सत्रह साल की एक लडकी कुछ अजीब सकोच में खडी थी।

"क्षमा कीजिएगा, मैं पावती हूँ।" लडकी बोली, "मेरे पिताजी एम० एल० ए० हैं और हम लोग आपके बगलवाले फ्लैट में रहते हैं। होटल-वाला लडका आपका दिन का खाना हमारे यहाँ रख गया है अम्मा ने कहा है कि आप हाथ-मुह धो लें और तब तक वह आपका खाना गरम कर देंगी।' इतनी सारी बातें वह एक ही सास में कह गयी।

प्रशान्त को एकाएक लगा कि उसे जोरो की भूख लगी हुई है और वह कृतज्ञ भाव से बोला, "आप लोगो को मेरे कारण कष्ट हुआ, मैं क्षमा चाहता हूँ। मैं जल्दी से मुँह हाथ धोकर आता हूँ तब तक आप खाना भिजवा दीजिए।" बडी साधारण-सी लगनेवाली यह गौरवण लडकी वसे तो धोती पहने हुए थी परन्तु प्रशान्त को बहुत छोटी लगी।

"अम्मा न कहा था, कि आपका नाम पूछ लेना।" वह सकुचाते हुए बोली।

'मेरा नाम प्रशान्त है।' प्रशान्त ने कहा "राजेन्द्रपाल जी मेरे दूर के

भाई लगते हैं और अब मैं कुछ दिन इसी घर म रहूँगा। अपनी अम्माजी से कहिएगा कि मैं स्वय उनसे मिलने आऊँगा।"

प्रशान्त को लगा उस लडकी के चेहरे पर प्रसन्नता की एक हल्की सी झलक आयी, पर उसने शीघ्र ही अपने को सन्तुलित करते हुए उसे छुपा लिया और 'मैं अभी पाँच मिनट मे आपका खाना लाती हूँ', कहते हुए वह अपने घर की ओर चली गयी।

बाथरूम की ओर जाते हुए प्रशान्त को अचानक यह याद आया कि भोर को जो मधुर स्वर उसने तानपूरे पर सुना था वह उसी लडकी के फ्लट से आ रहा था। कौन है यह पावती, वह सोचने लगा, जो नितान्त अपरिचित होते हुए भी न जाने कितनी परिचित लगी थी। और तभी पावती थाली लेकर आ पहुँची। होटल के खाने के साथ खीर तथा अचार और गरम-गरम फुल्के देखकर प्रशान्त चौंका।

पावती मानो उसके आश्चय को समझ गयी और बोली, "अचार हमारे गाव का है और खीर आज घरपर बनी थी। होटल की रोटी ठण्डी हो गयी थी तो अम्मा ने उसे महरी को दे दिया और आपके लिए ताजे फुल्के सेंक दिये।"

प्रशान्त ने प्रेम से भरपेट भोजन किया और इस बीच पावती लगातार बातें करती रही। प्रशान्त को उसकी बातो से पता चला कि उसके पिता काग्रेस के पुराने नेता रह चुके हैं, पर इधर कुछ वर्षों से पार्टी के कार्यों से असन्तुष्ट होकर निदलीय विधायक के रूप मे विपक्ष मे बैठते हैं। उसे यह भी पता चला कि पावती की शिक्षा घर पर ही हुई है और दूसरी श्रेणी मे मेट्रिक पास करके वह इण्टरमीडिएट की तैयारी कर रही है।

जूठे बतन बिना किसी सकोच के बटोरते हुए पावती बोली, "कल सवेरे आप हमारे यहा ही चाय पीजिएगा", और फिर तुरत उसने वाक्य को पूरा किया, अम्मा ने कहा है। पिताजी से भी आपकी तभी भेंट हो जायेगी।"

पावती के चले जाने के बाद प्रशान्त को लगा कि वह इन दो दिनो मे ही लखनऊ से काफी परिचित हो गया है। एक अजीब-सी आत्मीयता महसूस की उसने इस अनजाने नगर के प्रति। शाम अपने पूरे लावण्य के

साथ घिरी आ रही थी और उसे लगा कि अवध की शामें बड़ी सुहानी और मोहक होती हैं। खाना खाने के कोई एक घण्टे बाद प्रशान्त ने पन्द्रह मिनट का एक शावर बाथ लिया और कपड़े बदलकर वह निरुद्देश्य घूमने निकल पड़ा।

हजरतगंज की गुलजार सड़क को पार करते हुए वह पैदल ही टहलता हुआ महात्मा गांधी मार्ग पर बढ़ता चला गया। शाम के अँधेरे में यह तमाम इलाका बिजली की नियोन ट्यूब लाइटों से जगमगा रहा था। हिंदी भवन के सामने से होता हुआ वह फुहारवाले मुकर्जी फौव्वारे के गोल चौराह को पार करता हुआ रिवर बैंक रोड की ओर बढ़ता गया। रास्ते में उसे तमाम ड्राईव इन-रेस्त्राँ मिले जहाँ कारों पर बैठे हुए आधुनिक धनाढ्य स्त्री-पुरुष ठण्डे पेय पी रहे थे या आईसक्रीम और कबाब आदि खा रहे थे। एक विशाल फाईवस्टार होटल के प्रांगण में उसने कारों का हुजूम देखा और साथ ही उसे एक 'बार' (मदिरालय) का जगमगाता हुआ साईनबोर्ड भी दिखा। इस ऐय्याशी से भरपूर वातावरण से तालमेल बठाती हुई छतरमंजिल उसे दिखायी पड़ी जहाँ किसी जमाने में अवध के नवाबों की रंगरेलियाँ होती थीं।

टहलते-टहलते प्रशान्त शहीद स्मारक पहुँच गया। उसे यह स्थल बड़ा ही शान्त और पवित्र प्रतीत हुआ। सफेद संगमरमर के एक ऊँचे स्तम्भ पर कमल का एक विशाल फूल बना हुआ था जिसकी धवल पखुड़ियों से धीमा प्रकाश बिखर रहा था। स्मारक के सामने ही गोमती नदी अपनी बरसाती उफान के साथ हरहराती हुई बह रही थी और कुछ मल्लाह अपनी नावों पर लोगों को सैर करा रहे थे। सामने दूसरे तट पर दूर एक मन्दिर से आरती के घण्टों की ध्वनि वातावरण को कुछ दिव्य-सा बना रही थी।

प्रशांत स्तम्भ के चबूतरे पर खोया-सा न जाने कब तक बैठा रहा और उसका ध्यान टूटा मिली जुली आवाजों के शोर से। उससे कुछ ही दूरी पर आधुनिक युवक-युवतियों की एक टोली आकर सुव्यवस्थित हो गयी थी और उनके साथ था बैटरी द्वारा संचालित एक हाई फिडेलिटी-वाला स्टीरियोफोनिक रिकार्डप्लेयर।

"बॉबी, लेट्स बिगिन।" शर्ट और पैण्ट पहने हुए एक छात्रा ने अपने

साथी को सम्बोधित किया और बॉबी ने "ओके वेबी" कहते हुए रिकाड प्लेयर चालू कर दिया।

"वेट विनीटा", एक बडे बाल और दाढी-मूछोवाले भारतीय हिप्पी ने नारा लगाया "फस्ट लेट्स हैव ए किक।" और उसने अपने हिप्पी बग से एक वेशकीमती राजस्थानी चिलम निकाली और उसमे भरे हुए द्रव्य को अपने गस लाईटर से जलाया। शीघ्र ही सभी युवक युवती उस हिप्पी 'महात्मा' को घेरकर बठ गये और बारी बारी से सभी ने चिलम के कश लगाने शुरू कर दिये। कुछ नौसिखुए थे जिन्हे हल्के से कश पर ही खाँसी आ रही थी, जबकि कुछ पुराने गँजेडियो की भाँति चिलम से लपट पर लपट निकाल रहे थे।

और इसके बाद ही शुरू हो गया वह नत्य जो किसी तेज पश्चिमी सगीत पर चल रहा था पर जिसकी कोई शास्त्रीय परिभाषा नही थी। ससार के सभी नत्यो का मिश्रित रूप था वह जो कभी-कभी बबर और जगली आदिवासिया के नृत्य-सा मालूम पड रहा था। इसी बीच एक छोटी मोटी दशको की भीड भी इकट्ठी हो गयी थी, पर उससे इस युवागुट को अपनी निद्वन्द्वता मे प्रोत्साहन ही मिल रहा था। चीखो और चीत्कारो से पूण यह आदिम नत्य काल और परिस्थितियो की समस्त सीमाओ को तोडकर अनन्त काल तक चलता रहेगा, एसा प्रशान्त को लगा।

प्रशान्त अधिक समय तक उस स्थान पर रुका नही रह सका। अपने विचारो मे उलझा हुआ वह आईरन ब्रिज की ओर चल पडा। पुल के बस स्टण्ड पर कुछ देर उसने हजरतगज की बस की प्रतीक्षा की, पर तभी एक ताँगा आकर रुका जिसन सवारियो के हिसाब से नालबाग चलने की पेशकश की और अन्य कुछ लोगो के साथ प्रशान्त भी महज अनुभव प्राप्त करने के इरादे स उचककर ताँगे की अगली सीट पर बठ गया।

ताँगा सिटी स्टशन होता हुआ पुरान लखनऊ के वजीरगज, बारूद खाना गोलागज, ग्विन रोड, रूयालीगज और कैसरबाग कातवाली होता हुआ अपनी मरियल चाल से चला जा रहा था और इस बार प्रशान्त के सामन अभाव, गरीबी और दरिद्रता की एक लम्बी दृश्यावली एक घिसी पिटी पुरानी कटी हुई आधी दर की कालो-सफेद फिल्म की भाँति गुजर

रही थीं। एक ओर इम्पाला गाडियो और वैभव का राज था और दूसरी ओर निधनता और रोटी के सघष का विशाल साम्राज्य था। कैसरबाग चौराहे पर प्रशान्त तागे से उतर गया और एक बहुत ही मामूली सी धनराशि बूढ़े ताँगेवाले को किराये के रूप मे अदा कर वह एक छोट-से कॉफी हाऊस मे कॉफी पीने के इरादे से प्रवेश कर गया।

प्रशान्त की मेज पर दिल्ली से निकलनेवाले एक अखबार का हवाई जहाज से आनेवाला प्रात कालीन सस्करण रखा था। इस समाचारपत्र को पढकर प्रशान्त को लगा कि वह किसी विदेशी राजधानी का अखबार पढ रहा है। एयरकण्डीशनरो, रेफ्रीजरेटरो, टेलीविजनो, रिकाडप्लेयरो, टेपरिकाडरो, सिनेमा प्रोजेक्टरो और कीमती वस्त्रो तथा फशन की सामग्री के विज्ञापनो से भरा हुआ था अखबार। कीमती होटलो मे ठहरने और डिनर खाने के आमन्त्रण थे, एयरकण्डीशण्ड रेस्त्राँओ मे होनेवाले अद्ध - नग्न नतकियो के कैबरे डासो के अश्लील चित्र छपे थे, महँगे सिनेमाहॉलो मे विदेशी और भारतीय फिल्मो की उच्च श्रेणियो के एडवास बुकिंग के निमन्त्रण थे और रात को एक विशाल स्टेडियम मे फिल्म स्टार नाईट का आयोजन था जिसके टिकटो की दरें इतनी ऊँची थी कि आदमी अचम्भे मे पड जाये। समाचारो मे भी वभव झलक रहा था। सरकारी स्कूटर फैक्ट्री, गर-सरकारी छोटी कारो तथा बड बडे औद्योगिक घरानो के विस्तार की खबरें थी, आयात कायक्रम मे विस्तार के सवाद थे, गरीब पडोसी राज्यो को आर्थिक तथा अन्य सहायता दिये जाने के समाचार थे, रेलवे के एयरकण्डीशण्ड कोचो मे सुधार करने का सरकारी आश्वासन था, भारत मे दस नये टेलीविजन केन्द्र खोलने की सूचना थी और एयर इण्डिया का 'महाराजा' एक विज्ञापन के माध्यम से सप्ताह मे तीन बार लण्डन जाने का अनुरोध कर रहा था। प्रशान्त को लगा कि इस देश का समस्त शिक्षित समुदाय एक विशिष्ट वग यानी एक प्रिविलेज्ड क्लास बनता जा रहा है जो अपनी उच्च शिक्षा की विशेषज्ञता के कारण जन समुदाय की मुख्य धारा से अलग हटकर एक निहित स्वाथ के रूप मे सगठित होता जा रहा है।

प्रशान्त की विचारधारा टूटी एक मुक्के से, जो उसकी बगलवाली

टेबुल पर एक लेनिनकट दाढ़ीवाले युवक ने अपनी मेज पर मारा जिसके परिणामस्वरूप सारी क्रावरी झनझना उठी।

"हमे चीनी टाईप का समाजवाद लाना होगा। यह भारतीय समाजवाद एक फास है और पूजीवादी व्यवस्था का एक फरेब है गरीब जनता को उल्लू बनाने के लिए। हमे लेनिन और माओ के नेतत्व को स्वीकार करना ही होगा कामरेड।" उस युवक ने कुछ भाषण दने की मुद्रा म कहा।

"पर कामरेड मिश्रा", दूसरा व्यक्ति बोला जो अवस्था मे पहले युवक से कुछ बडा मालूम पडता था, "भारतीय समाजवाद तो सोवियत समाजवाद का ही अनुकरण करेगा। आज सोवियतसघ मे समाजवाद म जो सशोधन हो रहे हैं वे समय के अनुरूप हैं और जनतान्त्रिक भावना से प्रेरित हैं।"

"सोवियत्स?" कामरेड मिश्रा कुछ आवेश मे आते हुए बोला, "रिविजनिस्ट डॉग्स। आप रूसियो की बात करते हैं प्रोफेसर शर्मा, जिन्होने कम्युनिस्ट आन्दोलन का सेबोटेज किया। और आप जिस डेमोक्रेसी की बात कर रहे हैं वह कम्युनिज्म की विरोधी विचारधारा है। डेमोक्रेसी और साम्यवाद साथ साथ नही चल सकते हैं प्रोफेसर शर्मा। डेमोक्रेसी पूजीवादी समाज का ही दूसरा नाम है और समाजवादी व्यवस्था म उसका कोई स्थान नही है।"

"मैं तुमसे असहमत हूँ कामरेड मिश्रा।" प्रोफेसर शर्मा नामक युवक ने कहा, "मेरी पॉलिटिकल सायन्स मुझे बताती है कि समानता का अस्तित्व बिना स्वतन्त्रता के निरथक है। कोई भी समाजवादी समाज, जहाँ आत्मा की अभिव्यक्ति का अवसर न हो, एक सैनिक शिविर यानी एक कनसण्ट्रेशन कम्प है जहाँ प्रत्येक नागरिक एक गुलाम है।"

"स्वतन्त्रता?" कामरेड मिश्रा ने एक ठहाका लगाया, "उस व्यक्तिवादी मिल की बकवास? स्वतन्त्रता का सिद्धान्त पूजीवाद के 'मुक्त बाजार' का प्रतीक है। स्वतन्त्रता हमेशा शक्तिशाली और शोषको की होती है प्रोफेसर शर्मा।"

"स्वतन्त्रता के लिए ही सारी क्रान्तियाँ हुई हैं कामरेड मिश्रा", प्रोफेसर शर्मा ने कहा, "यह शायद मनुष्य का सबसे पहला अधिकार भी

है—स्वतन्त्र जीवन बिताने का अधिकार। पूंजीवादी व्यवस्था जिस स्वतन्त्रता का समर्थन करती है उसे हम बौद्धिक लोग प्राकृतिक स्वतन्त्रता कहते हैं—वास्तविक स्वतन्त्रता तो वह है जो सभी को समान रूप से मिल सके।"

"जनतन्त्र, स्वतन्त्रता, अधिकार", कामरेड मिश्रा ने व्यंग्यात्मक लहजे में कहा, "ये सभी शब्द बुर्जुआ क्लास के वे शस्त्र हैं जिनके माध्यम से भोले-भाले मेहनतकश लोगों पर शासन किया जाता है। ये वे झूठे वादे या नारे हैं जिनकी आड़ में निहित स्वार्थ शासकीय वर्ग तथा नौकरशाही से साँठ-गाँठ करके आम जनता का शोषण करते हैं। कम्युनिस्ट आन्दोलन के आप जैसे सिम्पेथाइजर से मुझे ऐसी आशा नहीं थी कि आपके विचार इतने प्रतिक्रियावादी होंगे।"

"यदि मेरी विचारधारा प्रतिक्रियावादी है तो आपकी विचारधारा भी मुझे फासिस्ट तथा अराजकतावादी लग सकती है।" प्रोफेसर शर्मा ने चाय का बिल चुकाते हुए कहा, "अब मैं चलूँगा क्योंकि मुझे अपनी साइकिल का पंक्चर ठीक कराना है।"

प्रशान्त की बगलवाली टेबुल खाली हो चुकी थी और बैरा उसकी काफी मेज पर रख गया था। प्रशान्त अभी तक उसी बौद्धिक वादविवाद में उलझा हुआ था जिसे प्रोफेसर शर्मा और कामरेड मिश्रा असमाप्त छोड़ गये थे। प्रशान्त को एक अजीब-सी वितृष्णा हुई इस देश के बौद्धिक वर्ग के प्रति जो अपने समस्त विचारों, सिद्धान्तों और धारणाओं को विदेशी और पाश्चात्य परिप्रेक्ष्य और पृष्ठभूमि में अपनाता है।

प्रशान्त को लग रहा था कि समाजवाद की एक नयी परिभाषा की आवश्यकता है। एक ऐसी परिभाषा जो ग्रीस के और भारतवर्ष के प्राचीन नगर-राज्यों और जनपदों से लेकर आधुनिक युग के मार्क्सवादी राज्य-विहीन समाज तथा गांधीवादी सर्वोदयी समाज के समग्र रूप को अपने में शामिल कर सके। और इस विचार से उसकी समस्त कुण्ठा एकदम से विलुप्त हो गयी और उसका स्थान ले लिया एक ऐसी आशा ने जो समस्त प्रकार की सम्भावनाओं से पूर्ण थी। कॉफी हाउस से बाहर आते समय प्रशान्त पूरी तरह से स्वस्थ, प्रसन्न तथा चैतन्य था।

५

अगले दिन सुबह जब प्रशान्त की आंख खुली तो उस समय तक सूरज आकाश पर काफी ऊँचे चढ आया था। कमरे में पूरब की खिडकी से आती हुई धूप ने ही उसे जगाया। प्रशान्त ने अपनी घडी देखी जो आठ बजा रही थी। उसे तभी याद आया कि सुबह की चाय अपने पडोस के फ्लैट पर पीनी थी। वह तुरन्त नहा-धोकर तयार हो गया। ज्यो ही उसने दरवाजा खोला उसे पावती दिखायी दी, जो कॉलबेल बजाने ही वाली थी।

'चाय ठण्डी हो रही है और बाबूजी आपकी प्रतीक्षा कर रहे हैं।" पावती ने कहा।

"मैं भी तैयार हूँ।" कहते हुए प्रशान्त ने अपना दरवाजा बाहर से लॉक कर दिया और पावती के साथ वह बगलवाले फ्लट में प्रवेश कर गया।

मेरा नाम प्रशान्त है।' प्रशान्त ने पावती के पिताजी और माताजी को सादर नमस्कार करते हुए कहा।

"बठो—बठो।" पावती के पिताजी ने प्रशान्त को बठाते हुए कहा, 'मैं नशिकान्त शास्त्री हूँ—गगानगर से विधान सभा का सदस्य, और निदलीय होते हुए भी विपक्ष में बठता हूँ।'

"मुझे मालूम है।" प्रशान्त ने कहा, "आप प्रारम्भ मे कांग्रेस में थे

और काग्रेस सोशलिस्ट पार्टी के संस्थापक सदस्यो मे एक थे।"

"ठीक कहते हो," शास्त्रीजी बोले, "और आजादी के बाद हम लोग आचार्य नरेन्द्र देव, जयप्रकाश जी और डा० लोहिया के साथ काग्रेस से अलग हो गये और फिर वही हुआ जिसका हमे डर था। नेहरू के व्यक्तित्व की विशालता और काग्रेसी प्रजातन्त्र के सामने हमारा समाजवादी-आन्दोलन बिखर गया और हम सोशलिस्ट निराश्रित हो गये।"

"सोशलिस्ट पार्टी का विघटन क्या रोका नही जा सकता था?" प्रशान्त ने प्रश्न किया।

"सोशलिस्ट पार्टी की स्थापना ही गलत आधारो पर हुई थी।" शास्त्रीजी बोले, "आजादी के बाद जब हम समाजवादी लोग काग्रेस से अलग हुए तो उसी समय समाजवादी आन्दोलन बिखर गया था क्योकि हमारे अनेक योग्य और ईमानदार साथी, जो समाजवादी ग्रुप की स्थापना के समय हमारे साथ थे, हमसे बिछुड गये। सच तो यह है कि हम काग्रेस के अन्दर ही रहकर समाजवाद के लिए सघर्ष करना चाहिए था।"

'आप तो हरेक के सामने राजनीति ले बैठते हैं।" श्रीमती शास्त्री ने बातचीत मे बाधा डालते हुए कहा, 'चाय ठण्डी हो रही है।"

"यह 'हरेक' नही हैं," शास्त्रीजी अपनी पत्नी से बोले, "यह राजनीति मे एम० ए० करके उसी मे रिसर्च कर रहे हैं।"

"और मेरे रिसर्च का विषय भी समाजवाद है।" प्रशान्त ने कहा।

'देखो प्रशान्त," शास्त्रीजी ने मुस्कुराते हुए कहा, "यह पार्वती की मा जो है न, इसने मेरे कारण जीवन-भर बडे कष्ट उठाये हैं। यह सोचा करती थी कि देश जब स्वतन्त्र होगा तो हमारे भी दिन बदलेगे और हम आराम की जिन्दगी बितायेंगे। लेकिन मैं समझता हूँ, यह अच्छा ही हुआ कि मैं सत्ता से दूर रहा—कोई ग्लानि नही, कोई पश्चाताप नही। सुख की नींद सोता हूँ, इज्जत है, प्रतिष्ठा है।"

इस परिवार के लिए अजनबी होते हुए भी जब प्रशान्त चाय पीने बैठा तब उसे लगा जैसे वह उनका पुराना सम्बन्धी है। बडी ही आत्मीयता के साथ पार्वती की माताजी ने प्रशान्त को जलपान कराया। प्रशान्त

को भी इतना अपनापन लगा कि वह सारा सकोच छोडकर नाश्ते पर जुट गया था। चलते समय जब पावती उसके साथ दरवाजा व द करने आयी तब प्रशा त ने उससे कह दिया कि वह दोपहर का खाना नही खायगा और उसका खाना होटलवाले लडके को दे दिया जाये।

"सुनिए", पावती ने कुछ हिचकिचाते हुए कहा, "नागरिक शास्त्र मेरी समझ म नही आता। क्या कभी-कभी आप मुझे समझा दिया करेंगे?"

क्यो नही?" प्रशा त ने सरल भाव से कहा, ' तुम्हें नागरिक शास्त्र के अलावा भी जो विषय कठिन लगे, उसके बारे में तुम मुझसे पूछ सकती हो। इण्टर तक तो सभी विषयो का मुझे ज्ञान है।"

प्रशान्त जब युनिवर्सिटी पहुँचा, उस समय कला सकाय के प्रागण मे एक विशाल छात्र सभा हो रही थी जिसके श्रोता विश्वविद्यालय के अधिकाश नये प्रवेश लेनेवाले छात्र मालूम पड रहे थे।

' दोस्तो," एक छात्र नेता कह रहा था, "यह बडे अफसोस और ताज्जुब की बात है कि इस युनिवर्सिटी मे केवल प्रथम और द्वितीय श्रणी के छात्रो को ही भरती किया जा रहा है जबकि ज्यादातर दरख्वास्तें थड डिवीजन मे पास होनेवाले विद्यार्थियो ने ही दी हैं। मैं विश्वविद्यालय के अधिकारियो से पूछना चाहता हूँ कि यह भेदभाव क्यो? सच बात तो यह है कि अधिकाश फस्ट और सेकेण्ड डिविजन के छात्र उन पढ लिखे अमीर घराना के होते हैं जहा धन की बहुतायत है, कीमती स्कूल तथा कालेज हैं, महँगी से महँगी किताबें हैं, ऊँची ऊँची तनख्वाहो पर टयूशन देनेवाले प्रोफेसस हैं और इसके बाद सिफारिश है दौड धूप है और घूसखोरी है। दूसरी तरफ, इस देश का आम विद्यार्थी फटे कपडे पहन कर टूटी चप्पलें घिसकर, टयूशन करके, सडक की बत्तियो या लाल टेनो के नीचे पुस्तको के अभाव मे घटिया बाजारू नोटस पढकर आधा पेट खाकर, फीस की भारी भारी किश्तें जमा करके जब जी-जान लगाकर परीक्षा देता है तो बडी मुश्किल से उसे थड डिवीजन मिलता है। बोलिए—क्या मैं गलत कह रहा हूँ? "

प्रशान्त चुपचाप एक दशक की भाँति इस सभा को सुन रहा था। अब एक दूसरा छात्र नेता माइक पर आ गया था और वह रहा था,

"साथियो, हमारी माँगें अनेक हैं। तृतीय श्रेणी में पास विद्यार्थियों का प्रवेश, फेल किये गये छात्रों का पुन: प्रवेश और साथ ही हाजिरी तथा फीस की छूटें। आपको पता होगा कि हमारे बहुत-से साथी केवल इसलिए परीक्षा नहीं दे पाते हैं कि या तो उन्होंने साल भर की पूरी फीस नहीं दी होती है या क्लासों में उनकी ऐटेण्डेंस पचहत्तर प्रतिशत से कम लगायी गयी होती है। यही नहीं, हमारी एक माँग यह भी है कि परीक्षाओं के समय हमारे साथ जो सख्ती होती है उसे बन्द किया जाये। एक तो अध्यापक साल भर हमें पढ़ाते नहीं हैं और उस पर अगर हम अन्य साधनों का प्रयोग करते हैं तो पुलिस, पी० ए० सी० आदि की सहायता से हमारी बेइज्जती होती है, हमारी जिन्दगी बर्बाद कर दी जाती है।" प्रशान्त स्तब्ध था विद्यार्थी आन्दोलन का यह रूप देखकर, पर तभी चौथा पीरियड समाप्त हुआ और प्रशान्त अपने विभाग की ओर चल पड़ा।

प्रोफेसर रंगनाथन उस समय कमरे में अकेले ही थे जब प्रशान्त ने अन्दर आने की आज्ञा माँगकर कमरे में प्रवेश किया।

"आओ प्रशान्त, मैं तुम्हारी ही प्रतीक्षा कर रहा था।" प्रोफेसर साहब बोले, "कितना काम हो पाया कल तुम्हारा?"

"सर", प्रशान्त ने विनयपूर्वक कहा, "पुस्तकों की सूची तैयार करने में काफी समय लग जायेगा क्योंकि हर किताब में अन्य किताबों का उल्लेख होता है। फिर भी मुझे विश्वास है कि चार-पाँच दिन में यह काम मैं पूरा कर ही लूँगा।"

"ठीक है", प्रोफेसर रंगनाथन प्रशान्त द्वारा तैयार सूची को देखते हुए बोले, "मैंने तुम्हारी सिनाप्सिस देख ली है और उसमें कहीं-कहीं थोड़े चेंजेस भी कर दिये हैं। मेरी इच्छा है प्रशान्त, कि तुम समाजवाद के एक ऐसे सिद्धान्त को खोज निकालो जो हर देश, काल और परिस्थिति में लागू हो सके। आज समाजवाद के अनेक रूप संसार भर में प्रचलित हैं, पर ये सभी रूप इस हद तक परस्पर-विरोधी हैं कि इनमें संघर्ष और टकराव की हालत पैदा हो गयी है। तुम्हें समस्त समाजवादी विचारकों के सिद्धान्तों का अध्ययन करते हुए राजनीतिक दर्शन के इतिहास से समाजवाद के शाश्वत सिद्धान्तों को खोज निकालना होगा।"

प्रशान्त ने प्रोफेसर रगनाथन की बात बडे ध्यान से सुनी और फिर उसने एक प्रश्न किया, "एक जिज्ञासा है सर", उसने कहा "राज्य के कार्यक्षेत्र के लिए क्या समाजवाद ही सबसे सन्तोषजनक सिद्धान्त है ?"

प्रोफेसर रगनाथन ने मुस्कराते हुए उत्तर दिया, "तुम्हारा यह प्रश्न बडा ही स्वाभाविक है। हम पॉलिटिकल साइण्टिस्ट किसी भी सिद्धान्त के सम्बन्ध मे जल्दबाजी मे किसी निष्कर्ष पर नही पहुँचते हैं, और इसी लिए तुम पाओगे कि सत्य की खोज की जो प्रक्रिया एरिस्टोटल के समय मे प्रारम्भ हुई थी वह आज भी जारी है। तुम्हे बिना किसी प्रेज्यूडिस यानी पूर्वाग्रह के यह सिद्ध करना होगा कि 'समाजवाद' भी 'लोकतन्त्र' की भाति एक अकाट्य राजनीतिक सत्य है या नहीं।"

प्रशान्त प्रोफेसर रगनाथन से विदा लेकर बाहर आ गया। डिपार्टमेण्ट के बरामदे मे कुछ उद्दण्ड किस्म के छात्रो की एक छोटी मोटी भीड एक जापानी नवयुवक को घेर हुए खडी थी। लडके उससे अग्रेजी मे तमाम किस्म के प्रश्न पूछ रहे थे, पर वह दीवाल के सहारे घबराया-सा निरुत्तर खडा अपने माथे का पसीना पोछ रहा था। प्रशान्त को उस निरीह-से दिखायी देनेवाले युवक से सहानुभूति हुई और वह भी चुपचाप बरामदे की उस भीड के पास रुक गया। अब तक एकाध छात्र उस जापानी युवक को हिन्दी मे अपशब्दो से सम्बोधित करने लगे थे और दो एक ने तो उस टीप लगानी भी शुरू कर दी थी। तभी घण्टा बजा और भीड बिखर गयी।

प्रशान्त ने आगे बढकर उस जापानी युवक के कन्धे पर हाथ रखा और कहा, "आप मेरे साथ चलिए यहाँ ये लोग आपको झूठमूठ तग करेंगे।" और वह जापानी युवक कृतज्ञ भाव से प्रशान्त के साथ चल पडा।

'मेरा नाम प्रशान्त है।' प्रशान्त ने कहा, क्या मैं आपका शुभनाम जान सकता हूँ ?"

"अवश्य" जापानी युवक ने हिन्दी मे कहा, 'मेरा नाम सुजीकी है।" युवक रुक रुककर शब्दो को जोडते हुए कह रहा था, "मैं जापान की तोक्यो युनिवर्सिटी से राजनीतिशास्त्र का अध्ययन करने भारत आया हूँ।"

"आपको हिन्दी आती है ?" प्रशात ने पूछा।

"जी हाँ", सुजीकी ने कहा, "परन्तु हिन्दी का मेरा ज्ञान केवल पुस्तकों के माध्यम से है—बोलचाल की हिन्दी समझने में अभी थोडी कठिनाई होती है।"

"और अंग्रेजी ?" प्रशात ने पुन प्रश्न किया।

"अंग्रेजी मुझे नही आती।" सुजीकी ने कहा, "सत्य तो यह है कि अंग्रेजी का हमारे देश मे प्रचलन बहुत सीमित है और मुझे अंग्रेजी भाषा मे कोई रुचि नही थी, अत मैंने उसका विधिवत् अध्ययन ही नही किया।"

"आपका विषय क्या है ?" प्रशान्त ने पूछा।

"मैं गाधीवाद तथा भारतीय सस्कृति पर शोध करने आया हूँ और व्यक्तिगत रूप से योगविद्या का भी थोडा ज्ञान प्राप्त करना चाहता हूँ।"

"आप क्या बौद्ध धम को मानते हैं ?" प्रशात ने जानना चाहा।

"धम का प्रभाव जापान मे विश्वयुद्ध के बाद कम हो गया है", सुजीकी ने उत्तर दिया, "परन्तु बौद्ध धम आज भी जापान का प्रमुख धम है और मेरे पिता एक बौद्ध मठ के पुजारी हैं। मेरी आस्था बौद्ध धम के प्रति बचपन से ही रही। भारत के प्रति जापानियो मे आदर भाव है, क्योंकि यह देश भगवान बुद्ध का जन्म स्थान है।"

"क्या जापान मे महात्मा गाधी नाम सामान्य लोगो मे प्रचलित है ?" प्रशान्त अपनी जिज्ञासा रोक नही पा रहा था।

"जी हाँ", सुजीकी ने कहा ' गाधीजी के प्रति सामान्य शिक्षित वग म श्रद्धा और सम्मान का भाव है, क्योंकि गाधीजी का अहिंसा, दया, प्रेम और अपरिग्रह का दशन बौद्ध धम के अनुरूप है। राजनीति मे नैतिकता को प्रमुख स्थान देकर गाधीजी ने ऊँचे आदश स्थापित किये, इसीलिए जापान मे गाधी के राजनीतिक दशन को विशेष महत्व दिया जाता है।"

"मैं भी रिसच मेरा मतलब है, अनुसधान कर रहा हूँ 'समाजवाद' पर" प्रशात बोला "और मुझे आपसे मिलकर बडी प्रसन्नता हुई।" इतना कहने के बाद सुजीकी को प्रोफेसर रगनाथन के कमरे तक पहुँचा-

कर उसने विदा ले ली।

प्रशान्त अपने विभाग से लाईब्रेरी की ओर चल पड़ा, तभी उसे नीलिमा की लाल इम्पाला कार दिखायी पड़ी जिसे वह खुद चला रही थी।

"आइए।" नीलिमा ने कार उसकी बगल में रोककर अपनी दाहिनी ओरवाला दरवाजा खोलते हुए कहा।

"पर मैं तो लाइब्रेरी जा रहा हूँ।" प्रशान्त ने कहा।

'मैं आपको लाइब्रेरी छोड़ दूंगी, आप बैठिए तो सही।" नीलिमा ने आग्रह किया और प्रशान्त अनमने भाव से बैठ गया।

'आज मैं आपके साथ अपनी खुशी सेलेब्रेट करना चाहती हूँ। नीलिमा ने कार को बढ़ाते हुए कहा, "मेरा एडमीशन एम० ए० प्रीवियस में हो गया है।" और इतना कहकर प्रशान्त के लाख मना करने पर भी नीलिमा ने अपनी गाड़ी हजरतगंज की ओर मोड़ दी।

नीलिमा ने प्रशान्त के साथ हजरतगज के एक फैशनेबल कैफे मे प्रवेश किया। कफे के अन्दर अँधेरेपन मे मद्धिम और अदृश्य प्रकाश-व्यवस्था एक रहस्यमयता का वातारण प्रस्तुत कर रही थी और उसके ऊपर ब्रास-बण्ड पर बजती हुई एफ्रीकन ड्रम म्युजिक और क्राकरी तथा कटलरी की धीमी सगीतमय टकराहट उसमे रोमाच पैदा कर रही थी। सारा कफे सिगरट, सिगारो तथा समिप भोजन की तीव्र गन्ध से और बीच-बीच मे खूबसूरत युवतियो के परिधानो से उठती हुई इम्पोर्टेड कास्मेटिक्स की सुगन्ध से गमक रहा था। नीलिमा प्रशान्त के साथ एक कोने मे टेबुल पर बैठ गयी। प्रशान्त को एकाएक लगा कि उसकी कुरते-पायजामेवाली वेशभूषा के कारण कफे मे बैठे सारे लोग उसे और नीलिमा को बीच-बीच मे घूर रहे हैं और विशेषकर बैण्ड के पासवाली टेबुल पर बैठे युवक और युवतियाँ प्रशान्त और नीलिमा की ओर देखकर इशारो मे कुछ बातें भी कर रहे हैं।

"आप क्या लेंगे ?" नीलिमा ने प्रशान्त से पूछा, "क्या आप कॉफी पसन्द करते हैं ?"

"आप मुझे पूरा देहाती ही समझती हैं न ?" प्रशान्त ने उत्तर दिया।

"जी नही", नीलिमा को अपनी भूल का अहसास हुआ, "मेरा मतलब था कि सभी लोग शुरू-शुरू मे कॉफी पसन्द नही करते।" वह बोली।

"सच तो यह है कि मुझे दही की लस्सी का अधसेरा गिलास सबसे अधिक पसन्द है पर वह आपके इस कैफे मे तो मिलने से रहा।"

नीलिमा वेटर को इशारा करके बुलाने ही जा रही थी कि वण्ड के पासवाली मेज से एक लम्बे बाला तथा कलमोवाला युवक एक अजीब सी गिलाफनुमा कमीज तथा ढीली ढाली तामझामी पतलून पहने नालिमा की टेबुल पर आ पहुँचा और बोला, "हाई नीलिमा—लुकिंग सो चार्मिंग इन सारी ! वाई द वे हू इज़ दिस कण्ट्री फेलो ?" ("वाह नीलिमा साडी मे कितनी खूबसूरत लग रही हो ! वैसे ये देहाती कौन है ?")

'तुम्हे मैनस बिल्कुल नही आये मनजीत", नीलिमा ने तीखे स्वर म कहा, "यह मेरे दोस्त और गेस्ट है और तुम्हारी तरह जाहिल नहीं हैं। तुमने इनकी इनसल्ट की है, इनसे माफी मागो।"

'हा हा हा", मनजीत नामक उस उद्दण्ड युवक ने एक ठहाका लगाया 'यह सच है कि हम तुम्हारी कदर करते हैं पर इसका यह मतलब नही कि तुम्हारे साथ के हर टाम डिक या हैरी के हम मक्खन लगायें।" वह बोला।

'यू आर ए स्टुपिड स्काउड्रेल।" कहते हुए नीलिमा उठ पडी, 'आइए प्रशान्तजी, यह जगह अब भले आदमियो के लायक नहीं रह गयी है।'

प्रशान्त भी नीलिमा के साथ उठ खडा हुआ, पर तभी एक युवती, जो स्ट्रेच नामलान की पैण्ट और एक रगीन शट पहने हुए थी, नीलिमा के पास आ पहुँची।

'व्हाट्स रौंग ?" युवती बोली "लगता है मनजीत ने फिर तुम्हें टीज किया बट यू नो, यह अपन एफेक्शन को इसी तरह जाहिर करता है।"

"मनजीत न मेरे गेस्ट की इनसल्ट की है', नीलिमा बोली, 'मैं उस कभी माफ नहीं कर सकती।'

'यह ?" युवती प्रशान्त की आर एक हिकारत की दृष्टि फेंकता हुई बोली "यह तुम्हारे गेस्ट हैं ? वेरी सरप्राइजिंग ! पर तुम्हें अपने गस्ट को यहाँ लान से पहले ये भी देखना चाहिए था कि इनका हुलिया कसा

है। इनने दाँबिली ड्रेस्ड आदमी को तो यहाँ का मैनेजमेण्ट भी बाहर निक्लवा सकता है। तुम्हे तो पता ही होगा कि यहाँ पर राईट्स आफ एडमीशन रिजर्व्ड है।"

"वीना", नीलिमा लगभग चीख पडी, "विल यू शट अप ?"

"देखा वीना ?" मनजीत मुस्कराते हुए बोला, "लगता है इस 'गगाराम' ने हमारी नीलिमा पर वशीकरण कर दिया है। आओ, हम लोग इन्हे अकेला छोडकर चलें।"

"आइए प्रशान्तजी", नीलिमा ने प्रशान्त का हाथ पकडकर लगभग उसे घसीटते हुए कहा, "चलिए।"

"आपको मेरे लिए अपने साथियो से झगडा नही करना चाहिए था।" प्रशान्त ने क्फे से बाहर आकर नीलिमा से कहा।

"यह लोग बडे घटिया और नीच हैं।" नीलिमा बोली, "मुझे माफ कर दीजिए प्रशान्तजी।"

"आप उन पर क्रोध बेकार कर रही हैं।" प्रशान्त निर्विकार भाव से बोला, "उनके व्यवहार मे दोष उनका नही है। वे जिस वातावरण मे पले और बडे हुए है, वहाँ के लिए यही सत्य है।"

नीलिमा को आश्चय हो रहा था प्रशान्त की तटस्थता देखकर। वह बोली, "आइए, मेरे घर चलिए, मेरे डडी और मम्मी आपसे मिलकर बहुत खुश होगे।"

प्रशान्त मुस्कराया। वह बोला, "नीलिमाजी, आपकी दुनिया और मेरी दुनिया मे बडा अन्तर है। मुझे आप जान दीजिए क्योकि बेहतर यह होगा कि हम अपने ही दायरे और परिवेश मे रहे।"

'प्रशान्तजी", नीलिमा ने कहा, 'क्या इन दोनो दुनियाओ का कोई कामन ग्राउण्ड नही बन सकता ?"

"जी नही', प्रशान्त का उत्तर था, "एक बहुत बडी खाई है इन दो दुनियाओ के बीच मे। एक दुनिया सम्पन्न तथा समृद्ध लोगो की दुनिया है और दूसरी दुनिया है अभावग्रस्त और दरिद्र लोगो की दुनिया। अपनी दुनिया मैंने स्वय चुनी है नीलिमाजी और मैं इसमे सुखी हूँ। अब मुझे अनुमति दीजिए, लाइब्रेरी म मुझे बहुत काम है।"

नीलिमा के बहुत अनुरोध करने के बावजूद प्रशान्त कार से नहीं लौटा, बस से ही वह विश्वविद्यालय लौट आया और दिन भर लाइब्रेरी में पुस्तकों में उलझा रहा। शाम को चार पुस्तकें अपने नाम लेकर वह एक प्याला चाय पीने के इरादे से यूनियन कैण्टीन की ओर बढ गया।

"कहो दोस्त ?" एक अजनबी स्वर सुनकर प्रशान्त चौंक पड़ा, "इतनी किताब पढकर क्या करोगे ?"

'मैं रिसर्च कर रहा हूँ' प्रशान्त ने कहा, "लेकिन आपको मैंने पहचाना नहीं।"

'अभी पहचान जाओगे अगर पहचाना नहीं है।" कुर्त्ता पायजामा पहने बढी दाढी और रूखे बालोंवाले युवक ने कहा, "मेरा नाम अहमद है, कामरेड अहमद। मैं स्टूडेण्ट फेडरेशन का सेक्रेट्री हूँ और यहाँ की कानून की फैकल्टी में धक्के खा रहा हूँ। काहे पर रिसर्च कर रहे हो दोस्त ?"

'राजनीति शास्त्र में 'समाजवाद' पर।" प्रशान्त ने कहा।

'वाह कामरेड", अहमद बोले, 'समाजवाद पर रिसर्च तो बड़े काम की साबित होगी। तुमने मार्क्स और लेनिन को पढा है ?"

मार्क्स और लेनिन के विचारों को मैं एम० ए० के राजनीतिक दर्शन में पढ चुका हूँ। लेकिन समाजवाद मार्क्सवाद के अलावा भी बहुत-कुछ है।" प्रशान्त ने उत्तर दिया।

'मैं तुम्हें 'कम्प्लीट वर्क्स आफ मार्क्स एण्ड लेनिन' दूंगा। कम्यूनिज्म पर मेरे पास बहुत-सा साहित्य है।" कामरेड अहमद ने कहा।

अब तक प्रशान्त और कामरेड अहमद यूनियन भवन पहुँच गये थे जहाँ भवन के बाहर छात्रों के दो दल 'अमरीकी पिट्ठू हाय हाय' और 'रूसी कुत्ते हाय हाय' के परस्पर विरोधी नारे लगा रहे थे। कामरेड अहमद इस हंगाम को देखकर एकाएक उत्तेजित हो गया।

'यह साले जनसंघी हमारे जलसे में बलवा खड़ा करने को आ पहुँचे हैं।' कामरेड अहमद ने कहा, 'मैं अभी निपटता हूँ इन हरामजादों से। तुमसे फिर मिलूंगा।' इतना कहते हुए कामरेड अहमद भीड़ में घुस गया।

साथियो", एक मुंडेर पर चढ़कर कामरेड अहमद ने बिना माईक वाला बुलन्द आवाज में बोलना शुरू किया, 'आज स्टूडेण्ट फेडरेशन की

ओर से आपकी माँगो को लेकर एक खास सभा होनेवाली थी जिसे कुछ अमरीकी सी० आई० ए० के एजेण्ट असफल कराने के लिए आ पहुँचे हैं। मैं स्पष्ट शब्दो मे कहना चाहता हूँ कि आप इनके बहकावे मे न आयें। क्या आप भूल गये वह दिन जब इन्ही के साथियो ने राष्ट्रपिता महात्मा गाधी का गोलिया से भून दिया था ? धर्म के नाम पर राजनीति मे लूट मचानेवाले ये जनसघी उसी अमरीका के पिटठू हैं जो अपने जासूसो का जाल सारे ससार मे फलाये हुए है। मेरी आपसे प्राथना है साथियो, कि आप इनकी बातो मे न आयें और इन साम्प्रदायिक्तावादियो और प्रतिक्रियावादियो को साफ-साफ बतला दें कि आप इतने भोले नही कि इनकी बाता से बहक जायें। आप लोग आइए हमारे साथ और नारे लगाते हुए यूनियन हाल में चलिए और हमारे महान आयोजन को सफल बनाइए।"

प्रशान्त स्तब्ध था कामरेड अहमद की वक्तृता शैली और उसकी शुद्ध हिन्दी पर, और शीघ्र ही छात्रो का एक बडा समुदाय कामरेड अहमद के साथ छात्र एकता के नारे लगाता हुआ यूनियन भवन के अन्दर प्रवेश कर गया।

"मित्रो", बचे हुए छात्रा को सम्बोधित करते हुए एक दूसरे छात्र नेता ने अपना भाषण शुरू किया, "अभी आपके सामने जो तथाकथित छात्र नेता भाषण दे रहे थे उनकी असलियत क्या आप जानते है ? नहीं ? तो मैं बतलाता हूँ। यह वही कामरेड अहमद हैं जिनके बाप-दादे भारत के बँटवारे के पूव कट्टर मुस्लिम लीगी थे और आज यह अपने को प्रगतिशील बताते हैं। हमे अमरीकी एजेण्ट बतानेवाले यह कामरेड अहमद खुद रूस की कम्युनिस्ट पार्टी के वेतनभोगी छात्र नेता हैं जिन्हें इनकी पार्टी की भाषा मे 'होल टाईमर' कहा जाता है। इनका एकमात्र उद्देश्य या लक्ष्य है देश म अराजकता फलाकर रूस का आधिपत्य स्थापित करवाना। विदेशी धन से भारत की पवित्र भूमि पर विदेशी शासन के स्वप्न देखना, इससे बढकर देशद्रोह और क्या हो सकता है ? मित्रो, तुम्हें महाराणा प्रताप, वीर शिवाजी, शहीद भगतसिंह और चन्द्रशेखर आजाद के पवित्र रक्त की सौगन्ध है—तुम्हे यह प्रतिज्ञा करनी होगी कि इस विद्या मन्दिर से पचमागियो और विदेशी एजेण्टो को निकालकर ही दम लो।"

इसी बीच सभा म कुछ और छात्र भी आ गये थे जो मन्त्रमुग्ध होकर इस युवक नेता का भापण सुन रहे थे। और कुछ ही देर म छात्रो का यह समूह भी यूनियन भवन म नारे लगाता हुआ घुस गया। ऊपर हाल से आनेवाले शोर और कुर्सियो के उठाने-पटकने की आवाजो स प्रशान्त को यह अनुमान लगान म दिक्कत नही हुई कि ऊपर क्या हो रहा है।

प्रशान्त ने यूनियन कैन्टीन म प्रवेश किया। कूपन खरीदकर गरम चाय का एक प्याला उसने लिया और पखे के नीचेवाली टेबुल पर बठ गया।

'क्या मैं यहाँ बठ सकता हूँ ?" धुली और महीन खादी के कपड पहने, एक प्याला चाय हाथ म लिये हुए एक नवयुवक ने प्रशान्त से पूछा।

'अवश्य ' प्रशान्त ने कहा, "मैं अकेला ही हूँ।"

मेरा नाम रमाकान्त तिवारी है।" नवागन्तुक युवक ने बठते हुए कहा मैं यहाँ सस्कृत विभाग म रिसच कर रहा हूँ और प्रादेशिक समाजवादी युवक सभा का मन्त्री हूँ। आपका परिचय जान सकता हूँ ?"

मेरा नाम प्रशान्त है और मैं राजनीति शास्त्र मे प्रोफसर रगनाथन की गाईडन्स म समाजवाद पर रिसच कर रहा हूँ।" प्रशान्त ने कहा।

'यह तो बडी खुशी की बात है। रमाकान्त ने कहा, समाजवादी आन्दोलन से मेरा निकट का सम्पर्क रहा है पर अब लगता है कि यह समाजवादी आन्दोलन बिखरता ही जायगा। आज समाजवाद केवल एक सुविधा का नारा रह गया है जिसकी न कोई परिभाषा है और न ही कोई सिद्धान्त। जिस समाजवादी समाज का सपना किसी जमाने म नहरू, जयप्रकाश नरेन्द्रदेव और लोहिया ने देखा था वह अब जसे बिल्कुल विलुप्त होता जा रहा है। अब तो केवल दो ही वाद दिखलायी पडते हैं—एक अमरीकी पूजीवाद और दूसरा रूसी साम्यवाद।

'मैं आपका अभिप्राय ठीक स नही समझ पाया। प्रशान्त न कहा।

'वह भारतीय समाजवाद की धारा थी', रमाकान्त ने कहा, 'जो आज केवल सिद्धान्त बनकर रह गयी है। नेहरू जयप्रकाश, आचाय नरेन्द्र दव और डाक्टर लोहिया ये सभी गाधी के मानस पुत्र थे। गाधीवाद के बुनियादी सिद्धान्तो के अन्तगत ही इन्होने एक ऐसे समाजवाद की परि-

कल्पना की थी जो आधुनिक समाजवाद को एक मानवतावादी धरातल प्रदान करता है।"

"लेकिन मेरा अनुमान है कि आजादी से पहले स्थापित कांग्रेस सोशलिस्ट पार्टी के ये सभी विचारक कार्ल मार्क्स के द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद से प्रेरित होकर समाजवादी बने थे।" प्रशान्त ने कहा।

"आपका अनुमान ठीक है", रमाकान्त ने कहा, "इन्हें मार्क्स और अन्य यूरोपीय विचारकों ने प्रभावित अवश्य किया था, परन्तु भारत में गांधीजी के सम्पर्क में आकर इन्होंने अनुभव किया कि मार्क्स तथा अन्य पाश्चात्य विचारकों के विचार एकपक्षीय हैं अतः इन भारतीय समाजवादियों ने गांधीजी के आदर्शों से प्रेरित होकर एक ऐसे समाजवादी समाज की परिकल्पना की जो लक्ष्य और साधन, दोनों के औचित्य को स्वीकार करता हो।"

प्रशान्त को रमाकान्त की बातें बहुत ही दिलचस्प लग रही थीं और उसे उनमें एक अनोखी खासियत भी दिखलायी पड़ रही थी। "तो क्या आपका मत है कि मार्क्सवाद में जो कमियाँ थीं उन्हें इन गांधीवादी समाजवादियों ने सुधारा है।" प्रशान्त ने पूछा।

"नहीं", रमाकान्त बोला, "वरन् इन विचारकों ने समाजवाद की एक नवीन परिभाषा कर डाली—एक ऐसी परिभाषा जो शाश्वत होने के साथ-साथ समय से बहुत आगे है। सच कहें तो मार्क्स का समाजवादी सिद्धान्त आज 'आउट आफ डेट' हो चुका है। वर्गसंघर्ष के जिस सिद्धान्त की मार्क्स बात करते हैं वह अठारहवीं और उन्नीसवीं शताब्दी के यूरोप पर तो लागू होता था, परन्तु आज वह निरर्थक हो गया है। आज का समाज स्पष्ट रूप से उन वर्गखण्डों में विभाजित ही नहीं किया जा सकता जैसा कि मार्क्स चाहते थे।'

प्रशान्त और रमाकान्त बड़ी देर तक भारतीय समाजवाद पर बातें करते रहे। रमाकान्त ने प्रशान्त से विदा लेते समय उससे यह वादा किया कि वह भारतीय समाजवाद पर समुचित सामग्री प्रशान्त को देगा जो वर्षों से उसके पास सुरक्षित रखी है। वहाँ से चलकर प्रशान्त कुछ ही देर में युनिवर्सिटी रोड पहुँच गया जहाँ से उसे बस पकड़नी थी।

७

प्रशान्त जब शाम का अपने घर पहुँचा तो उसे एक अपरिचित नारी का लिखावटवाला बन्द लिफाफा अपने दरवाजे के नीचे पड़ा हुआ मिला। पत्र नीलिमा का था और उसने दिन को कैफे में हुई घटना के सम्बन्ध में माफी माँगते हुए रात का खाना अपने घर में खाने की दावत दी थी। पत्र में उसके घर का पूरा और स्पष्ट पता तथा टेलीफोन नम्बर भी थे। प्रशान्त ने उपेक्षित ढंग से लिफाफे को मेज पर रख दिया पर तभी दरवाजे की घण्टी सुरीले स्वरों में बज उठी। दरवाजा खोलने पर प्रशान्त ने पार्वती को अपने सामने पाया।

'एक लड़की दो बार आपसे मिलने आयी थी", पार्वती ने कहा, "और वह मुझसे कह गयी है कि आज रात आपको उनके यहाँ खाना खाने अवश्य भेज दूँ।"

"वह नीलिमा थी।" प्रशान्त ने निस्पृह भाव से कहा, "वही युनिवर्सिटी में पढ़ती है। लेकिन उनके यहाँ मैं जा नहीं पाऊँगा क्योंकि आज रात मुझे अपनी रिसर्च का काफी काम करना है।"

"नहीं, नहीं", पार्वती ने इस बार नीलिमा का पक्ष लेते हुए कहा, 'आपको उनके यहाँ जाना ही होगा नहीं तो उनकी सारी दावत चौपट हो जायेगी।'

'लेकिन पार्वती", प्रशान्त ने पार्वती को समझाते हुए कहा, "नीलिमा

को मैं बहुत कम जानता हूँ और फिर उसके समाज में और मुझमें बहुत अन्तर है—नीलिमा जिस वर्ग की लड़की है उसे मैं नकली, झूठा और दम्भी मानता हूँ—वह जिस वातावरण में रहती है उसमें मैं स्वयं को अजनबी पाता हूँ।"

"मैं आपकी यह बात नहीं मानती", इस बार पार्वती के स्वर में प्रशान्त ने एक परिपक्वता का अनुभव किया, "अगर आप किसी वर्ग या समाज को बुरा समझते हैं तो उसके लिए किसी एक को तो दोषी नहीं ठहराया जा सकता है। फिर मनुष्यता के नाते भी आपको *किसी का आग्रह* इस तरह नहीं ठुकराना चाहिए।" और पार्वती के तर्कों के सामने प्रशान्त ने मानो हथियार डाल दिये, उसने नीलिमा के घर जाने की सहमति दे दी।

स्नान आदि करके प्रशान्त अन्यमनस्क भाव से एक रिक्शे पर जा बैठा। वह रिक्शा माल रोड होते हुए उस कालोनी की ओर चल पड़ा जिसका पता नीलिमा ने दिया था। उस कालोनी में बी फिफ्टीफोर नम्बर मकान ढूंढने में उसे कोई असुविधा नहीं हुई। उसने धीरे से कालबेल दबा दी।

"आइए प्रशान्तजी!" नीलिमा ने दरवाजा खोलते हुए कहा, "मम्मी और डैडी को अचानक कार से नैनीताल जाना पड़ गया और आपको 'वैलकम' करने के लिए केवल मैं ही हूँ।"

"तो क्या आप बिल्कुल अकेली हैं घर पर?" प्रशान्त ने नीलिमा के ड्राइंगरूम में प्रवेश करते हुए पूछा।

"हमारे घर का पुराना नौकर रामू है जो इस समय बाजार गया है", नीलिमा ने कहा, "लेकिन आपके लिए खाना मैंने खुद बनाया है।"

"आपने व्यर्थ में इतना कष्ट किया।" प्रशान्त ने फोम रबर के कीमती रेशमी टैपेस्ट्रीवाले रंगीन सोफे पर बैठते हुए कहा।

"मुझे पूरा विश्वास था कि आप आयेंगे।" *नीलिमा* बोली, "आज सुबह जो कुछ हुआ उसका मुझे सख्त अफसोस है। आप बैठिए, आपके लिए एक कप गरम कॉफी लाती हूँ।" और इतना कहकर नीलिमा घर के अन्दर चली गयी।

प्रशान्त ने एक विहंगम दृष्टि नीलिमा के ड्राइंगरूम पर डाली जो

अत्यन्त मूल्यवान फर्नीचर, कालीनों और वस्त्र-सामग्रियों से सुसज्जित था। वार्निस के ऊपर विदेशी खिलौने सजे थे। कमरे में स्टीरियो रिकार्ड प्लेयर, कई बैण्डवाला एक विशाल केबिनेट रेडियो, एक मल्टी चैनल टेलीविजन सेट तथा एक इम्पोर्टेड ब्रिटिश टेप रिकार्डर रखे हुए थे। एक बहुत ही कीमती एयर कण्डीशनर बिना किसी आवाज के कमरे के ताप-मान को जबरदस्त रूप से गिरा रहा था।

प्रशान्त मेज पर रखी मैगजीनें देखने लगा जो सभी अंग्रेजी की थीं और जिनका प्रमुख विषय था—फैशन, स्त्रियां और फिल्में। प्रशान्त ने कुछ पत्रिकाएँ उलटनी चाहीं पर उसे उनमें कहीं भी असली भारतवर्ष की झलक तक नहीं मिली। इन पत्रिकाओं के फीचरों, लेखों तथा विज्ञापनों में एक ऐसे भारत की झांकी थी जहां धन और ऐश्वर्य का बाहुल्य था। नये-नये कपड़ों की डिजाइनों, फैशन परेडों, शरीर का भोंडापन प्रदर्शित करती हुई माडेल लड़कियों, फिल्म कलाकारों के मुक्त आचरण के चित्रों, कबरे नाचनेवाली नर्तकियों के भड़कीले पोज़ों और स्त्री पुरुष सम्बन्धों और उनकी समस्याओं पर आधुनिक पश्चिमी दृष्टिकोण का समर्थन करने वाली व्याख्याओं और प्रश्नोत्तरों से भरी हुई थी ये पत्रिकाएँ। और तभी नीलिमा के कमरे में रखा हुआ गुलाबी टेलीफोन एक अत्यन्त मधुर संगीत-मय सुर में बज उठा।

"हैलो!" प्रशान्त ने फोन उठाते हुए कहा।

"इज़ इट डबल फोर डबल फाइव एट?" एक लड़की ने पूछा।

'जी हां यही नम्बर है" टेलीफोन पर उभरे हुए अंकों को देखते हुए प्रशान्त ने कहा, "क्या आप नीलिमाजी से बात करेंगी?"

"हाँ, हाँ, नीलिमा को बुलाओ।' इस बार वह लड़की फोन पर कुछ रुखाई के साथ बोली। नीलिमा अब तक काफी का प्याला हाथ में लेकर स्वयं ही कमरे में आ गयी थी और प्रशान्त ने प्याला अपने हाथ में लेते हुए फोन का रिसीवर नीलिमा को पकड़ा दिया।

"हैलो,' नीलिमा बोली, यस सुनीटा क्या? नो ना सुनीटा इटस इम्पासिबल यू सी मेरे घर एक गेस्ट आये हुए हैं ओह सुनीटा, प्लीज़ पोस्टपोन इट टुडे बट लिस्सेन सुनीटा अरे उसने तो फोन ही

काट दिया।"

'प्रशान्तजी," नीलिमा ने फान रखते हुए प्रशान्त से कहा, "आइए, हम लोग खाना खा लें क्योंकि सुनीता अपने फ्रेण्डस को लेकर कुछ ही देर में यहाँ पहुँचनेवाली है।"

"लेकिन इस समय रात म ?" प्रशान्त ने आश्चय के साथ पूछा।

"देखिए ऐसा है," नीलिमा ने समझाते हुए बताया, "हम लोगो का एक ग्रुप है जो बारी-बारी से फ्रेण्ड्स के घरो म इक्ट्ठा होता है, खासकर उन घरो मे जहा बुजुग लोग नही होते हैं। तो मेरे डडी और मम्मी के 'आऊट आफ स्टेशन' जाने की खबर इन लोगो को मेरे पडोस के मकान की सहेली आशा न दे दी है और टेलीफोनो की मदद से सारे ग्रुप को इनफाम किया जा चुका है और सबके सब आधे पौने घण्टे म यहा पहुँच जायेंगे।"

"नीलिमाजी," प्रशान्त ने उठन का उपक्रम करते हुए कहा, "मुझे रात को भोजन करने की आदत नहीं है और काफी तो मैं पी ही चुका हूँ आपको अपने दोस्तो को भी एण्टरटेन करना है, तो ऐसी हालत में मेरा चला जाना ही अच्छा होगा।"

"आप हमारे ग्रुप के सभी लोगो से ज्यादा एजुकेटड और इन्टेलीजण्ट है।" नीलिमा न कहा, 'फिर भी आप माडन लागो स मिलने मे कतराते हैं। आपको समय के साथ चलना चाहिए प्रशा तजी। मेरी आपसे विनती है कि आप भी हमारी पार्टी म शामिल हो।'

प्रशान्त को नीलिमा की बात का उत्तर देने के लिए एक पल रुकना पड़ा, शायद यह तय करने के लिए कि वह अपनी बात किन शब्दा मे कहे।

"नीलिमाजी " प्रशान्त ने सक्षेप मे कहना चाहा, "जिसे आप माडन या आधुनिक कहती हैं उसे मैं एक बहुत ही पिछडा हुआ और रिएक्शनरी समाज मानता हूँ। क्या आप यह समझती हैं कि पब्लिक स्कूलो या कान्वेण्टो मे पढ लेने से और मॉड फशनो और मुहावरो को अपना लेने से आदमी आधुनिक हो जाता है ? यह आधुनिकता कृत्रिम है आर्टीफिशियल है और पूजीवाद तथा काले धन का परिणाम है। जिस आधुनिकता को आपके वग न अपनाया है वह भोगवाद और अतिसुखवाद है और इसकी

तेज रफ्तार मे आप और आपके माडन साथी तेजी से विनाश की ओर बढते जा रहे हैं। दुख तो इस बात का है कि 'अस्वीकार' के इस युग मे कोई भी ईसा, बुद्ध या गाधी इस पीढी को नष्ट होने से नही बचा पायेगा।"

"प्रशान्तजी" नीलिमा ने कुछ सोचते हुए कहा, "आपका आउटलुक मुझे कुछ बायस्ड लग रहा है। बगैर पास से देखे आपको कैसे पता कि यह माडन सोसायटी इतनी बुरी है ?"

"आपकी इस माडन सोसायटी को शायद मैं आपसे भी अधिक निकट से जानता हूँ।" प्रशान्त ने सहज भाव से मुस्कुराते हुए कहा, "मैं यह भी जानता हूँ कि यह माडन सोसायटी सारे भारत की जनसख्या का पाँच प्रतिशत भाग भी नही है और मुझे यह भी पता है कि यह माडन कहलानेवाले तथाकथित लोग ही इस देश की शेष पिच्यान्वे प्रतिशत जनता की गरीबी और उत्पीडन के लिए जिम्मेदार हैं।"

और इसी समय नीलिमा के बँगले के बाहर तमाम तरह के सुरीले और कक्श मोटर हार्नों ने वातावरण मे एक विचित्र-सा तनाव उत्पन्न कर दिया।

"वह लोग आ गये हैं और मैं चल रहा हूँ।" प्रशान्त ने चलते हुए कहा, "आप मुझे क्षमा कर दीजिएगा और बुरा मत मानिएगा। आपकी दुनिया और है और मेरी दुनिया और, और मैं अपनी दुनिया मे सतुष्ट तथा प्रसन्न हूँ।"

प्रशान्त नीलिमा के घर से बाहर निकला ही था कि सामने से आता हुआ तगडा युवक उससे टकरा गया। चोट लगने पर भी प्रशान्त ने 'क्षमा कीजिएगा' कहा पर वह युवक जो दो युवतियों के साथ था, अत्यन्त तिरस्कारपूण लहजे मे बोला, "यू स्टुपिड—अधा है क्या ?" एकाएक प्रशान्त की तबियत हुई कि वह उस मोटे युवक के दाँत तोड दे पर दूसरे ही क्षण विवेक ने उसके क्रोध पर विजय पा ली और उस निजन चौडी सडक पर वह चुपचाप आगे बढ गया।

एक छोटी-सी पान की दूकान पर पान खाकर प्रशान्त चलना ही चाहता था कि एक रिक्शा तेजी से आकर रुका और उसमे से एक युवक

और एक युवती उतरे। पान की दूकान पर खडी छोटी-सी भीड को सम्बोधित करते हुए वह युवती घबराये हुए स्वर मे बोली, "प्लीज़, हमे बचा लीजिए।"

"दो पुलिसवाले हमारे पीछे लगे हुए हैं," युवती के साथवाले युवक ने कहा, "और वे हमे थाने ले जाने को कह रहे हैं।"

"पर आपने किया क्या था ?" एक नेताजी ने पान की पीक थूकते हुए पूछा।

'कुछ भी नही," युवक ने कहा, "हम लोग सिर्फ साथ-साथ घूम रहे थे।" और इतने मे दो पुलिस के सिपाही एक और रिक्शे पर सवार वहाँ आ पहुँचे। उस रिक्शे का चालक कुछ कमजोर था, इसीलिए कुछ पिछड गया था।

"चलो सीधे थाने, नही तो वह लप्पड दूगा कि तबियत हवा हो जायेगी।" एक पुलिसवाला बोला।

"पर मामला क्या है ?" नेताजी ने पूछा।

"मामला ?" दूसरा पुलिसवाला बोला, "यह साला इस लौण्डिया के साथ खुलेआम सडक पर इश्क फरमा रहा था। रात भर जहाँ हवालात मे बन्द हुए कि सारा हरामीपन भूल जायेंगे।"

"पर ये लोग तो अच्छे और शरीफ खानदान के मालूम पडते हैं।" नेताजी बोले।

"हमे पता है इनकी शराफत," पहला पुलिसवाला बोला, "यह छोकरियाँ अच्छे-अच्छे घराना से पढने आती हैं और सिनेमा, होटल, क्रीम पाउडर और लिपिस्टिक के शौक पूरा करने के लिए इन शरीफजादा के साथ रासलीला रचाती हैं। इनके माँ बाप इन्हें होस्टल मे भरती कराके डेढ-सौ रुपये हर महीने भेजकर बेफिक्र हो जाते हैं और ये सालियाँ इन हरामजादो को फाँसकर रँगरेलियाँ मनाती हैं। इन्ही हरामजादियो की वजह से जो दरअसल शरीफ लडकियाँ हैं वे भी बिगड रही हैं।"

"पर हो सकता है कि इनकी शादी तय हो चुकी हो।" नेताजी बोले।

"शादी होनेवाली हो या मियाँ-बीवी हो", दूसरा सिपाही बोला,

"सडक पर इस फरमाना कानूनन जुम है।"

"हमें छाड दीजिए, प्लीज," युवक हारी हुई मुद्रा मे बोला, "आप जो कुछ भी कहेंगे वह मैं करने को तयार हूँ।"

'पहले यहाँ से चलो तब बतायेंगे कि क्या करना है।" पहले पुलिस वाले ने कहा और फिर दोनो पुलिसवाले युवक और युवती को साथ लिये पदल ही चल पडे।

'मैं भी थाने पहुँचता हूँ।' कहते हुए नेताजी भी अपनी साइकिल लेकर चल पडे।

'आज साले की खबर ली जायेगी। बडा नक्शेबाज बनता था, आज सारी रगबाजी घुस जायेगी।" एक व्यक्ति बोला।

"कुछ नही जी" दूसरा व्यक्ति बोला, 'अभी रास्ते मे सौदा पट जायेगा, घडी अँगूठी और पास की रकम देकर साले छूट जायेंगे।"

प्रशान्त उस भीड को विवाद मे पडा छोडकर मन ही मन अनेक नतिक और वधानिक समस्याओ से जूझता हुआ पदल ही आगे बढ गया। धनी वग का यह मोहल्ला नीली नियोन-ट्यूबो की रोशनी से जगमगा रहा था और कोठियो, बँगलो तथा माडन फ्लटो के कीमती दरवाजो और खिडकियो के अन्दर से ऐश्वय का भीना भीना प्रकाश छनकर बाहर आ रहा था। कीमती मोटरें तरती हुई आ जा रही थी जिनके अन्दर से नुमाइशी कपडे पहने स्त्री-पुरुषो के आमोदपूर्ण स्वर खनक रहे थे। शीतल पेय तथा आइसक्रीमो का स्टालो पर कुछ मोटरें ठहरी हुई थी और कलफ लगी धुली वर्दी पहने बेयरे दौड दौडकर खाने पीने के कीमती पदाथ गाडियो पर पहुँचा रहे थे। पान की दूकानो पर सोने चाँदी के वर्कों म लिपटे मीठे पान के बीडो तथा चमकते रैपरो म बन्द कीमती सिगरेटो और डी लक्स माचिसो की बिक्री जारी थी। कारो के रेडियो इस अय्याशी के आलम को अपनी तेज गतिवाले सगीत से मादकता प्रदान कर रहे थे।

प्रशान्त सोच रहा था कि क्या यही भारत है। महात्मा गाधी ने जिस स्वाधीन भारत की कल्पना की थी क्या वह ऐसा ही था! नही प्रशान्त जानता था कि यह भारत नही है। वास्तविक भारत तो अभाव की आग मे जल रहा है भूख और गरीबी से निरन्तर सघष कर रहा है। ये अमीर

और सम्पन्न वस्तिया, यह ऐश्वय और भोग का साम्राज्य, ये टूटते हुए नैतिक और मानवीय मूल्य—यह सब कुछ उत्तरदायी है, उन गरीब वस्तियो की व्यथा के लिए जहा बत्ती नही जल रही है जहाँ चूल्हा ठण्डा पडा है, जहा शैशव और यौवन बाझ है जहा बुढापा और बीमारी अभिशाप है। प्रशान्त सोच रहा था कि क्या वास्तविक भारत इन जगमगाती हुई अमीर वस्तियो मे रहनेवाले शोषक वर्गों म अपने दुर्भाग्य का हिसाब माग सकेगा ?

"कहो मियाँ कहा घूम रहे हो ?" एक परिचित आवाज सुनकर प्रशान्त चौंका और उसने देखा—कामरेड अहमद अपनी साइकिल पर सवार पीछे से उसके पास आ पहुँचा है।

"यू ही घूमने निकल आया था," प्रशान्त ने कहा, "और आप कसे ?" प्रशान्त ने पूछा।

"मेरे फादर का बँगला है यहा।" कामरेड अहमद ने कहा "वह आई० सी० एस० अफसर हैं, उन्हें मेरी शक्ल से भी नफरत है पर मेरी अम्मी मुझसे मिलने के लिए बेचन रहती ह। तो अक्सर अम्मीजान से मिलने चला आता हूँ इसी वक्त क्योंकि यह वक्त अब्बाजान का क्लब में शराब, जुए और फशनेबुल रईसजादियो के साथ गुजरता है। ही इज ए डीबाच —समझे ?"

"आपके पिता आई० सी० एस० हैं और आप कम्युनिस्ट ?" प्रशान्त ने आश्चर्य से पूछा।

"इसमे ताज्जुब क्या है मिया ?" कामरेड अहमद ने कहा, "वह आई० सी० एस० होते हुए भी पूरे लीगी हैं। मुझे भी वह लीगी बनाना चाहते थे और इसी इरादे से उन्होने मुझे अलीगढ यूनिवर्सिटी मे पढ़ने के लिए भेजा था पर वहाँ मैं लीगी बनने की बजाय कम्युनिस्ट बन गया और इसका नतीजा यह हुआ कि मैं अपने बाप से ही नफरत करने लगा। उधर उन्होने मुझे घर से बाहर निकाल दिया और इधर मैं पार्टी मे होल टाईमर हो गया।"

'बडी एडवेंचरस रही है आपकी जिन्दगी।" प्रशान्त ने कहा।

"खाक एडवेंचरस।" कामरेड अहमद बोले," पहले तो बडी रोमा-

टिक लगती थी यह जिन्दगी पर सच तो यह है कि पालिटिक्स के पिछले बारह-पन्द्रह बरसों में सारे सपने टूट गये। जिस क्रान्ति की हम तैयारी कर रहे थे, क्या हम उसके नजदीक जरा भी पहुँचे हैं ? नहीं दोस्त, क्रान्तिकारियों के भी बहुत से तबके यानी वर्ग हैं। एक वे हैं जो क्रान्ति के नाम पर भोग विलास की जिन्दगी बिता रहे हैं, जो स्काच व्हिस्की की बोतलों के बल पर ही वर्गविहीन समाज की स्थापना की बातें करते हैं, जो अपने को बड़ा नेता और फिलासफर कहते हैं, जो कीमती होटलों में ठहरते हैं हवाई जहाजों और मोटर-कारों में घूमते हैं। और दूसरे वे हैं जो इन उच्च और कुलीन वर्ग के बागियों की जी-हुजूरी करते हैं, उनकी मुसाहिबी और चमचागीरी करते हैं और ये हैं पार्टी के वे गरीब वर्कर जिनके घरों में रोशनी नहीं है, तालीम नहीं है और जो सौ पचास रुपयों के स्ट्राइपेण्ड या चन्दे पर अपनी जवानी और जज्बातों को उन ऊँचे नेताओं की नेतागीरी बरकरार रखने के लिए बरबाद कर रहे हैं। नेताओं के बच्चे अंग्रेजी स्कूलों में पढ़ते हैं, उनकी बीवियाँ कीमती साड़ी पहन कर मोटरों पर सैर करती हैं। हर लीडर का अपना मकान है, फार्म या और कोई कारोबार है। तो क्या तुम ये समझते हो कि ये नेता क्रान्ति लायेंगे ? अवाम की तकदीर को बदलना इनके बस की बात नहीं है दोस्त।"

अजीब तरह की ठण्डक-सी लगी प्रशान्त को कामरेड अहमद के स्वर में। यह तो बड़े दुःख की बात है।' प्रशान्त ने कहा, "इन प्रगतिशील राजनीतिक पार्टियों से देश को बड़ी उम्मीदें हैं।"

'बेकार है उम्मीदें रखना इनसे। कामरेड अहमद ने कहा, 'हर पार्टी का नेता मालिक और शोषक है और हर पार्टी का कार्यकर्ता नौकर या चपरासी है और उसका जमकर शोषण हो रहा है। नेताओं का स्वागत करो, उनकी खातिरदारी करो, उनकी गालियाँ और बदमिजाजी झेलो और उनके जिन्दाबाद या जयजयकार के नारे लगवाओ, महज इस उम्मीद में कि शायद किसी नेता की नजरे इनायत तुम्हारे ऊपर पड़ जाये और तुम एक चपरासीनुमा वर्कर से एक छुटभइया किस्म के नेता बन सको। नहीं दोस्त, यह राजनीति का पेशा बड़ा ही गन्दा है। दूर से यह बहुत ही लुभा

८

प्रशान्त के अगले कई दिन अपनी रिसर्च को व्यावहारिक रूप देने में व्यतीत हो गये। विश्वविद्यालय की टैगोर लाइब्रेरी के अतिरिक्त उसने पब्लिक लाइब्रेरी और विधानसभा पुस्तकालय की सदस्यता भी ले ली, और प्रोफेसर रंगनाथन के सुविज्ञ निर्देशन में उसका काम द्रुतगति से चल पड़ा।

"इसी लगन और परिश्रम के साथ अगर तुम अपना काम करते रहे तो मुझे विश्वास है कि निर्धारित समय से पहले ही तुम अपनी थीसिस जमा कर सकोगे।' प्रोफेसर रंगनाथन ने उस थीसिस के प्रथम अध्याय 'समाजवाद की पृष्ठभूमि' पर अपनी सहमति प्रदान करते हुए कहा, "लेकिन डिगरी तुम्हें पूरी अवधि बीतने के बाद ही मिल पायेगी। और हाँ, इस बीच तुम्हें किसी विदेशी भाषा में प्रोफिशिएन्सी का कोर्स भी पूरा करना पड़ेगा।'

फ्रेंच भाषा का तो मुझे ज्ञान है", प्रशान्त ने कहा, "मेरी रुचि जर्मन सीखने के प्रति है।"

'ठीक है', प्रोफेसर रंगनाथन ने कहा, 'मैं एक पत्र प्रोफेसर गुन्थर को लिख देता हूँ और तुम आज ही से जर्मन सीखने का क्लास ज्वाइन कर लो।'

जर्मन भाषा की कक्षाएँ शाम को लगा करती थीं। प्रशान्त ने

लाइब्रेरी से उठकर लाल बारादरी की कैण्टीन में चाय पी और तब वह प्रोफेसर गु थर से मिला। उन्होंने तमाम औपचारिकताओं की उपेक्षा करते हुए उसे क्लास में बठने की आज्ञा दे दी।

"कहो प्रशान्त, तो तुमने भी जमन पढने का निर्णय ले लिया?" एक परिचित स्वर सुनकर प्रशान्त ने अपनी सीट से मुडकर पीछे की ओर देखा और उसने पाया कि यह परिचित स्वर रमाकान्त का है, जिससे उसकी भेंट कुछ ही दिन पहले यूनियन कण्टीन में हुई थी। संक्षिप्त अभिवादन के बाद वे क्लास में दिलचस्पी लेने लगे। क्लास से छूटने पर प्रशान्त और रमाकान्त साथ हो गये।

"क्या रिसच में ही व्यस्त रहोगे और युनिवर्सिटी की अतिरिक्त गतिविधियों में भाग नहीं लोगे?" रमाकान्त ने पूछा।

"चाहता तो हूँ", प्रशान्त ने कहा, "पर छात्र-राजनीति में भाग लेना मेरे वश की बात नहीं है।'

"आज की युवा राजनीति सचमुच गाली-गलौज और मारपीट की राजनीति है और इसका प्रभाव सभी युवा सगठनों पर पडा है। इसीलिए खुद युवा राजनीति से जुडे होने पर भी मैं तुम्हारे-जसे सुलझे हुए और बुद्धिमान युवक को इससे दूर रहने की सलाह दूगा। वैसे मेरी इच्छा शुद्ध विचारधारा के स्तर पर एक समाजवादी फोरम या मच बनाने की थी जिसमें हम सद्धान्तिक परिचर्चाओं और वाद विवाद द्वारा समाजवाद की स्थापना में योग दे सकें।' रमाकान्त ने कहा।

"समाजवाद केवल एक विचारधारा ही तो नहीं है", प्रशान्त ने कहा, "वह एक कायक्रम और आन्दोलन भी है। समाजवाद की स्थापना में योगदान के लिए किसी-न-किसी मच को सक्रिय राजनीति में आना ही होगा।"

"तुम ठीक समझे प्रशान्त", रमाकान्त ने मुस्कराते हुए कहा, "समाजवाद केवल एक राजनीतिक दर्शन ही नहीं, वह एक सघर्ष है। हमारा मच अगर इस सघर्ष को प्रेरित कर सके तो हम अपने लक्ष्य के और निकट पहुँच सकते हैं—एक वर्गविहीन और समाजवादी समाज की स्थापना का लक्ष्य।"

संघर्ष को प्रेरित करना ही होगा, प्रशान्त ने सोचा। पर क्या केवल मानसिक या मौखिक प्रतिबद्धता ही पर्याप्त होगी? प्रशान्त को शंका हुई। तो क्या आवश्यकता पड़ने पर वह वास्तविक राजनीति में आ सकेगा? उसने स्वयं से प्रश्न किया और उत्तर में उसके मुख पर एक आत्मविश्वासपूर्ण मुस्कान आ गयी।

"ठीक कहते हो रमाकान्त", प्रशान्त बोला, "हमें एक योजना बनाकर इस संघर्ष का सूत्रपात करना होगा। तुम अपना कार्यक्रम बनाओ, मैं तुम्हारे साथ हूँ।" और रमाकान्त से विदा लेकर प्रशान्त विश्वविद्यालय से पैदल ही हजरतगंज की ओर चल पड़ा।

हर तरफ लूट बेईमानी और धोखाधड़ी—प्रशान्त को लगा कि सारा समाज एक ऐसे रोग से ग्रस्त हो चुका है जिसे ठीक करना यदि असम्भव नहीं, तो लगभग असम्भव जरूर है। कालाबाजारी, मुनाफाखोरी, जखीरेबाजी, तस्करी, टैक्सों की चोरी, काला धन, कृत्रिम अभाव और मिलावट का बोलबाला। प्रत्येक व्यक्ति शीघ्र से शीघ्र धनी बन जाने को उत्सुक और धन-वैभव प्राप्त करने के लिए तमाम ऐसे हथकण्डे जिन्हें हम अनैतिक और गैरकानूनी ही कहेंगे। और कानून? कानून तो सिर्फ उन्हीं की ओर है जो समर्थ हैं, शक्तिशाली हैं, धनवान हैं, प्रतिष्ठित हैं। राजनीतिक नेता और सरकारी कर्मचारी भी व्यापारियों और उद्योगपतियों की इस लूट, बेईमानी और धोखाधड़ी में शामिल रहते हैं। क्या इतने विशाल पैमाने पर संगठित इन निहित स्वार्थवालों से जनसाधारण की रक्षा कभी भी हो पायेगी? प्रशान्त इन्हीं उलझनों में उलझा हुआ पैदल ही म्यूजिक कालेज की ओर से होकर कैसरबाग की ओर निकल आया।

डाक्टरों की दूकानों पर भीड़ देखकर प्रशान्त चौंका। वर्षा हो चुकी थी और ऋतु अपनी स्वाभाविक गति से बदल रही थी। फिर बीमारी का यह मौसम कैसा? और तब प्रशान्त को समाचारपत्र की वह खबर याद हो आयी जिसे उसने सुबह ही पढ़ा था और जिसका सार यही था कि सारे देश में एक ऐसी बीमारी चल पड़ी है जिसे कोई डाक्टर पहचान नहीं पा रहा है। यह बुखार इन्फ्लुएंजा, टाइफायड मलेरिया, निमोनिया और ब्रोंकाइटीस का मिला-जुला रूप बताया गया था। मिस्ट्री डिजीज,

वाइरस फीवर, एलर्जी, डेंगू फीवर आदि अनेक नाम दिये जा रहे थे इस बुखार को, जो व्यापक रूप से सारे देश के स्त्री पुरुषों को अपनी लपेट में लेता जा रहा था।

"आज की ताजा खबर शाम का समाचार पढ़िए", की आवाज़ लगाता हुआ एक हाकर निकला और प्रशान्त ने अखबार की एक प्रति खरीद ली। उसे पढ़ने के इरादे से वह सड़क के किनारे की एक चाय की दूकान में बैठ गया लेकिन प्रथम पृष्ठ की खबर पढ़ते ही सन्नाटे में आ गया। पत्र के विशेष संवाददाता का कहना था कि सारे देश में जो रहस्यमय बीमारी फैली है वह मौसमी नहीं है और न ही किसी अन्य देश से आयी है वरन उसका मुख्य कारण है खाने-पीने की चीजों में मिलावट। अनेक डाक्टरों और स्वास्थ्य अधिकारियों से लिये गये इण्टरव्यू का हवाला देते हुए कहा गया था कि बीमारी का प्रमुख कारण जहरीले पदार्थों की खाद्य सामग्रियों में मिलावट है, जैसे तेल और वनस्पतियों में जला हुआ मोबिल आयल, दालों में दाल के सदृश जहरीले बने, गेहूँ के आटे में सड़ा आटा और खड़िया, चीनी में यूरिया खाद, मसालों में गेरू, गधे या घोड़े की लीद या लकड़ी का बुरादा और ईंट की सुर्खी, मक्खन और घी में मरे हुए जानवरों की चर्बी, मिठाइयों में जहरीले रंग, सैकरीन और आटा, दही में ब्लाटिंग पेपर और शराब, तम्बाकू में स्पिरिट और एसिड, और न जाने क्या-क्या! और इस सबके बाद यदि कोई बीमार पड़े तो नकली दवाइयाँ, कैप्सूल्स और इन्जेक्शन!

प्रशान्त का सर चकरा गया इन खबरों को पढ़कर! अभी तक तो पूँजीवाद अपने अहिंसक तरीके से जनता को चोरबाजारी और मुनाफाखोरी से मार रहा था—लोग केवल गरीबी और अभाव से ही पीड़ित थे परन्तु अब पूँजीवाद अपने घिनौने और हिंसक रूप में सामने आ गया था। वह खुलेआम लोगों को जहर देकर मारने पर उतारू हो गया था और यह जहर भी ऊँचे मुनाफे और ऊँची कीमत पर बिक रहा था। इस जहर की भी कालाबाजारी हो रही थी और निरीह जनता की हत्या करते हुए पूँजीपति अपनी तिजोरी को दिन दूनी रात चौगुनी रफ्तार से भरता जा रहा था। कानून, सरकार और नेता, सभी उसके साथ थे।

प्रशान्त के मन में अचानक एक नये तर्क ने जन्म लिया—क्या इस पूंजीवाद जैसे विशाल राक्षस को 'अहिंसा' के द्वारा परास्त किया जा सकता है ? क्या गांधी जी का 'हृदय परिवर्तन' वाला फार्मूला आज के सन्दर्भ में भी सम्भव है ? क्या पूंजीवाद को केवल हिंसात्मक और रक्तपूर्ण क्रान्ति के द्वारा ही नष्ट किया जा सकता है ? और तभी प्रशान्त विचलित हो उठा इस रक्तपूर्ण क्रान्ति की सम्भावना पर। प्रशान्त ने विश्व की क्रान्तियों का इतिहास पढ़ा था और उसे पता था कि रक्तपूर्ण क्रान्ति का अर्थ होता है नरसंहार—एक ऐसा नरमेध जिसके परिणामस्वरूप दोषी को तो दण्ड मिलता ही है पर उसके साथ ही अनेक निर्दोष, निरीह निरपराध लोग भी बलिवेदी पर चढ़ा दिये जाते हैं। प्रशान्त इन्हीं गुत्थियों में उलझा हुआ था कि उसका ध्यान एक समाचार की ओर आकृष्ट हुआ जिसमें सूचना थी कि उसी दिन शाम को अमीनाबाद के झण्डेवाले पार्क में एक प्रख्यात गांधीवादी विचारक गांधीजी की अहिंसा पर भाषण देंगे। प्रशान्त ने घड़ी देखी, भाषण में आधे घण्टे का समय था। चाय के पैसे चुकाकर वह जिज्ञासावश झण्डेवाले पार्क की ओर चल पड़ा।

बहुत छोटी-सी भीड़ थी पार्क में यही कोई चार-पाँच सौ लोग थे। गांधीवादी विचारक माईक पर बहुत धीरे धीरे बोल रहे थे पर सभी लोग ध्यान से उनके विचार सुन रहे थे। उनका कहना था कि गांधीजी की अहिंसा गौतम बुद्ध या साधु सन्यासियों की अहिंसा से भिन्न है और वह निष्क्रिय न होकर सक्रिय है। उसका प्रयोग सामाजिक पैमाने पर एक अस्त्र के रूप में किया जा सकता है। गांधीजी ने व्यापक पैमाने पर अपने अहिंसात्मक अस्त्रों का प्रयोग ब्रिटिश शासन के विरुद्ध सफलतापूर्वक किया था।

'गांधीजी की अहिंसा एक अस्त्र है जिसका उद्देश्य सामाजिक अन्याय का प्रतिरोध करना है और सत्य और न्याय को प्रतिष्ठित करना है।" गांधीवादी विचारक का कहना था, 'अहिंसा शक्तिशाली और वीर का गुण है और उसमें कायरता या दुर्बलता का कोई स्थान नहीं है। गांधीजी का कहना था कि जहाँ चुनाव केवल कायरता और हिंसा के बीच सीमित होगा वहाँ मैं हिंसा का समर्थन करूँगा अर्थात समाजविरोधी तत्त्वों और

अपराधियो के विरुद्ध कायवाही करना अहिंसा का विरोध नही है।"

प्रशात को अपनी शकाओ का समाधान मिल गया था। गाधीजी की अहिंसा के सामूहिक प्रयोग से बडी से बडी सगठित हिंसात्मक शक्तियों को पराजित किया जा सकता है। अन्याय और अत्याचार के विरुद्ध विद्रोह, सघष और क्रान्ति और इस क्रान्ति के प्रमुख अस्त्र हुए—सभाएँ भाषण, प्रकाशन, प्रचार, जुलूस, आन्दोलन, सत्याग्रह, नागरिक अवज्ञा असहयोग, बहिष्कार, धरना, हडतालें और अनशन। यदि विशाल और नशस ब्रिटिश साम्राज्यवाद के खिलाफ इन हथियारो का प्रयोग स्वय महात्माजी ने किया था तो आज अपने देश मे पनपते हुए घिनौने और विषले पूजीवाद के विरुद्ध भी इनका प्रयोग किया जा सकता है, प्रशान्त ने सोचा।

गाधीवादी विचारक का भाषण लगभग डेढ घण्टे तक चलता रहा और वह छोटी सी भीड उनके विचारो को ऐसे सुन रही थी जसे किसी कक्षा के विद्यार्थी अपने अध्यापक का प्रवचन सुनते हैं। गाधीजी के राजदशन की सम्पूण व्याख्या उन्होने कर डाली इस अल्प समय म। पाक से लौटते समय प्रशान्त के मस्तिष्क मे गाधी का 'रामराज्य' और 'सर्वोदय'—यह दो शब्द लगातार कौधने रह। पर क्या हम वास्तव में इस आदश लक्ष्य तक पहुँच सकेंगे ? प्रशान्त के सामने यही प्रश्न था और इस प्रश्न का उत्तर एक बहुत बडी चुनौती थी उसके लिए।

९

प्रशान्त दारुलशफा के अपने कमरे मे बिस्तर पर लेटा सुबह का अखबार पढ ही रहा था कि दरवाजे पर तेज घण्टी बज उठी। उसने उठकर दरवाजा खोला और वह दग रह गया। कीमती इम्पोर्टेड सौन्दय प्रसाधना की तेज खुशबू से गमकती हुई नीलिमा खडी मुस्कुरा रही थी।

'आपको ताज्जुब हो रहा होगा न मुझे देखकर ?" नीलिमा ने किसी मशहूर टूथपेस्ट की मुस्कान बिखेरते हुए कहा। नीली रेशमी जरी का स्लीवलेस ब्लाउज और उसी सुनहली जरी की भडकीली बनारसी साडी जो 'स्वीटहार्ट' शैली मे नाभि के नीचे बँधी थी, उसी रग की बिन्दी, पर्स और चप्पलें और अजन्ता स्टाईल का ढीला जूडा सिर पर बाँधे नीलिमा किसी कीमती सतरगी एडवर्टीजमेण्ट की माडेल मालूम पड रही थी।

'इतनी सुबह आप उठ जाती हैं ?" प्रशान्त ने जमुहाई लेते हुए कहा, "आइए बैठिए—चाय पीजिएगा या कॉफी ?"

"कुछ भी नहीं ', नीलिमा बोली, "बात यह हुई कि मेरे फ्रेण्डस का आज पिकनिक का प्रोग्राम था पर देर हो जाने की वजह से मैं अकेली छूट गयी। नीचे मेरी छोटी गाडी खडी है जिसमे एक डोलची मे दिन भर के खाने का सामान है और एक थर्मस मे बढिया खौलती हुई क्रीम कॉफी भरी है। अब आप जल्दी से तैयार हो जाइए और हम लोग पिकनिक मनायेंगे।"

प्रशात के सामने सवेरे का अखबार पडा था जिसमे पश्चिमी उत्तर प्रदेश मे सूखे और पूर्वी उत्तर प्रदेश मे बाढ की दिल दहला देनेवाली खबरें थी—राजस्थान के रेगिस्तानो मे अति वृष्टि हो रही थी और महाराष्ट्र की हरी-भरी भूमि मे अकाल पडा था—बगाल मे अनाज के लिए दगे हो रहे थे और बलिया मे भूख से कई आदमी मर गये थे—राशन के गेहूँ की कीमत सरकार ने बढा दी थी और खुले बाजार से अनाज गायब होकर कालेबाजार मे पहुँच गया था—रोडवेज की स्ट्राइक थी, बिजलीघर पानी के अभाव मे बन्द हो गये थे, डाक्टरो और नर्सों ने अधिक वेतन की माँग पर अस्पतालो के मरीजो की उपेक्षा करते हुए प्रतीक हड्ताल कर रखी थी, अनेक रेलगाडियाँ स्टेशन मास्टरो की हड्-ताल के कारण स्थगित कर दी गयी थी और नीलिमा और उनके साथी इन सबसे बेखबर, अनभिज्ञ और अनजान थे।

प्रशान्त ने अपने मनोभावो को मन मे ही दबाते हुए कहा, "आप यह पेपर पढिए—तब तक मैं नहा लू।" और इतना कहते हुए वह बाथरूम मे प्रवेश कर गया।

प्रशान्त जब नहाकर आया तो उसने पाया कि नीलिमा एक कीमती मिल्क चाक्लेट चबाते हुए अखबार का फिल्मोवाला पेज देख रही है। प्रशान्त को धुले कुरते-पायजामे मे देखकर वह बोल उठी, "वसे अब तक मैं कुरते-पायजामे को अजीब ढीली-ढाली ड्रेस समझती थी, पर आप पर यह ड्रेस बेहद जँच रही है—लीजिए, चाक्लेट खाइए।"

"मैं चाकलेट नही खाता", प्रशात ने कहा, "कडवी होती है न!" और यह कहकर वह हँस पडा।

"आप भी अजीब हैं!" नीलिमा बोली, "बातचीत मे तो आप हाई-इण्टलेक्चुअल डेप्थ के आदमी लगते हैं पर स्वभाव से बिल्कुल देसी आदमी—यह कण्ट्राडिक्शन क्यो?"

"हम सभी विरोधाभासो मे जी रहे हैं नीलिमाजी।" प्रशात ने कहा, "आप अपने को ही ले लीजिए—आपकी यह साडी बनारस की रेशमी साडिया का उत्कृष्ट नमूना है पर आपने जो परफ्यूम, यू डी क्लोन, मेक-अप फाउण्डेशन और फेस पाऊडर लगा रखे है वह इतनी दूर स भी पेरिस,

लण्डन और न्यूयार्क की याद दिला रहे हैं। आपका हेयर सेटिंग लोशन भी किसी मल्टी नेशनल कम्पनी का बना हुआ है, जबकि आपका जूडा अजन्ता की गुफाओं के चित्रों से प्रेरित है। नाम, रंगरूप से भारतीय होते हुए भी स्वभाव, बोलचाल और संस्कृति से आप विदेशी लगती हैं।"

"आपकी सिक्स्थ सेन्स बड़ी तेज लगती है", नीलिमा ने कुछ झेंपते हुए कहा, "मैं तो समझती थी कि आपको मेरी यह ड्रेस अच्छी लगी, पर आप तो 'सरकास्म' पर उतर आये।"

"नीलिमाजी", प्रशान्त ने अपनी आवाज को अधिक से अधिक मुलायम बनाते हुए कहा, "यह जीवन ही एक 'सेटायर' है, बल्कि इसे एक 'फार्स' कहना अधिक उपयुक्त होगा और लगभग सभी कलाकार इस प्रहसन में ओवर एक्टिंग कर रहे हैं—यही कारण है कि आज प्रत्येक युवक और युवती फैन्सी ड्रेसेस में घूम रहे हैं। वही साड़ी जो कभी नारी की लाज रखते हुए उसके शरीर को ढँकती थी आज नाभि के नीचे पहुँचकर स्त्री शरीर की एनाटोमी प्रदर्शित कर रही है, ब्लाउज अपनी सूक्ष्मता में पश्चिम की बिकिनी से होड़ ले रही है, आँचल का स्थान भी अब कपड़े की मिलों के विज्ञापनों के आधार पर निर्धारित होने लगा है।"

"पर क्या एनशिएण्ट इण्डिया में इसी प्रकार की चोलियों और नाभि-दर्शना साड़ियों का चलन नहीं था ?" नीलिमा ने दलील पेश की।

"होगा।" प्रशान्त ने कहा, "अप्सराओं, देवदासियों, गणिकाओं और नगरवधुओं की वेशभूषा शायद ऐसी ही रही होगी पर भारतीय नारी के जिस आदर्श को हम भारतीय संस्कृति और इतिहास में पाते हैं उसमें कभी भी इतनी निलज्जता नहीं रही है।" और तभी दरवाजे पर घण्टी बज उठी। प्रशान्त ने उठकर दरवाजा खोला और पावती एक ट्रे में दो प्याली चाय, गरम जलेबी और पराठे लेकर अन्दर आ गयी।

"अरे—यह सब क्या ? ' प्रशान्त ने पूछा।

"अम्मा ने भेजा है", पावती बोली, ' उन्होंने देखा कि आपके यहाँ मेहमान आयी हैं।" इतना कहते हुए उसने नाश्ते की तश्तरियाँ और चाय के प्याले मेज पर सजा दिये। नीलिमा पावती को बड़े ध्यान से देख रही थी—पावती सफेद ढीली सलवार पहने थी और उस पर एक हल्के रंग

का लम्बा और ढीला कुरता था और उसी रंग का दुपट्टा। पावती ने एक चोटी कर रखी थी जो उसके घने बालों के अनुरूप घनी और लम्बी थी।

"यह पावती है", प्रशान्त ने नीलिमा से कहा, और पावती, यह हैं नीलिमाजी, जिनका उल्लेख मैं तुमसे पहले भी कर चुका हूँ।"

"मैं इनसे मिल चुकी हूँ।" पावती ने सहज भाव से कहा और "अभी आती हूँ", कहकर वह चली गयी।

"यह लडकी तो बिल्कुल सीता-सावित्री जैसी लगती है।" नीलिमा ने अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त की।

"आपके समाज के लिए सीता और सावित्री व्यंग्य की पात्र हैं।" प्रशान्त ने कहा, "पर आपको शायद यह पता नही है कि आज भी आम भारतीय परिवारों मे सीता और सावित्री के आदर्श अनुकरणीय माने जाते हैं। पावती आपके लिए किसी पिछली शताब्दी में रहनेवाली भारतीय कन्या है क्योंकि उसके कपडे चुस्त नही हैं, उसके बालों की कोई स्टाइल नही है और सौन्दर्य-प्रसाधनों से वह दूर है।"

"प्रशान्तजी", नीलिमा बोली, "समय बहुत आगे बढ गया है। आज नारी अपनी अर्थोडॉक्स सीमाओं को तोडकर खुली हवा में साँस ले रही है और पुरुष के साथ कन्धे से कन्धा मिलाकर चल रही है। वीमेन्स लिबर्टी के इस युग मे यह लडकी समय से कितने पीछे रह गयी है, यह आप सोच भी नही सकते।'

"इस तरह के आन्दोलन हर युग मे होते आये हैं", प्रशान्त ने कहा, "लेकिन भारतीय जनमानस अपनी मौलिकता को न तो छोड पाया है और न ही बदल पाया है। विदेशी शासन के एक हजार वर्षों में न जाने कितने उग्र और हिंसात्मक दौर आये परन्तु भारतीयता अपने स्थान पर बरकरार रही। क्या आप समझती हैं कि आज की नागरी सभ्यता के मुश्किल से पाँच प्रतिशत अंग्रेजी पढे-लिखे माडर्न और एडवान्स कहलाने-वाले मुट्ठी-भर घनी परिवार भारतीयता को नष्ट कर पायेंगे ? यह आपकी भूल है। आज भी आप इसी शहर के पुराने गरीब और मध्यवर्गीय मोहल्लों की ओर निकल जाइए। आपको घर घर में तुलसी की 'रामायण' के आदर्शों को माननेवाले और उस पर चलनेवाले लाखों भारतीय मिलेंगे

जो न तो आपकी आधुनिकता को एफोड कर सकते हैं और न ही उनमें आपकी इस फास्ट लाइफ के प्रति कोई आकर्षण है। खर, छोडिए इस बहस को और गरम जलेबिया और देसी घी के पराठो का आनन्द लीजिए।"

"यह नीबू का अचार है और यह बुक्नू है।" पावती ने एक और प्लेट लाकर सामने रख दी, 'अम्मा के हाथ के बने हुए हैं ये।"

'बुक्नू ?" नीलिमा ने शायद यह नाम पहली बार सुना था, "यह क्या होता है ?" उसने पूछा।

"ये दोनो चीजें पाचनशक्ति बढाती हैं।" पावती न कहा, "खाकर देखिए, स्वादिष्ट भी हैं।"

नीलिमा ने बुक्नू और अचार पराठे के साथ खाया। "वाह, यह तो बहुत मजेदार है" वह बोली और सारी औपचारिकता छोडकर नाश्ते पर जुट गयी। "तुम भी खाओ न !" नीलिमा ने पावती से कहा।

"अभी नही", पावती ने गम्भीरता से कहा, "आज अम्मा नहायेंगी नही और मुझी को तुलसी पर जल चढाना है—उसके बाद ही मैं कुछ खाऊँगी।"

नीलिमा पावती की बात समझ नही पायी पर कुछ पूछकर उसने अपने अज्ञान का प्रदशन नही किया। "प्रशा तजी", वह वोली, "पावती को भी ले चलिए न—थोडा घूम फिरकर इसका मन बहल जायेगा।"

"चलोगी पावती ?" प्रशान्त ने पूछा, ' नीलिमाजी हम लोगो को अपनी गाडी मे घुमायेंगी।"

एक क्षण के लिए पावती की आँखो मे एक कौतूहल जागा पर दूसरे ही क्षण सकोच के आवरण से उसकी आँखें नीची हो गयी, "मैं कहाँ जाऊँगी ? और फिर घर पर भी तो बहुत काम करना है मुझे।" वह बोली।

"तुम पूजा पाठ करके जल्दी से तयार हो जाओ।" नीलिमा बोली, "मैं तुम्हारी अम्माजी को राजी कर लूगी—क्यो प्रशान्तजी ? '

"ठीक है", प्रशा त ने कहा, "कोशिश करने मे क्या हज है ?"

नाश्ता समाप्त करके नीलिमा पावती के साथ उसके फ्लैट की ओर चली गयी। जब दस-पन्द्रह मिनट तक नीलिमा वापस नही आयी तो प्रशान्त ने स्थिति जानने के उद्देश्य से पावती के फ्लैट मे प्रवेश किया।

ड्राइग रूम मे नीलिमा और पावती की माताजी बातें कर रही थी और पावती अदर रसोई मे थी ।

"आओ बेटा प्रशान्त", पावती की माताजी ने कहा, "मैं इस बिटिया को यही समझा रही थी कि हम लोग पुराने खयाल के हैं और पार्वती को मैंने कभी उसके बाबू के या अपने साथ किये बिना कही नही भेजा है। उसकी पढाई भी इसीलिए प्राइवेट करवा रहे हैं, क्योकि उसके कालेज पहुँचाने या लाने का कोई प्रबन्ध नही है। साल दो साल मे उसकी शादी हो जायेगी।"

"लेकिन आण्टीजी ', नीलिमा बोली, "आजकल तो लडकियाँ चाँद पर जा रही हैं, हवाई जहाज चला रही हैं, पुलिस मे और दफ्तरा मे काम करती हैं।"

"दुनिया चाहे जितनी तरक्की कर ले पर नारी तो नारी ही रहेगी।" पावती की मा ने नीलिमा को समझाते हुए कहा, "स्त्री को प्रकृति ने ही बडा कमजोर बनाया है उसे हमेशा सरक्षण की आवश्यकता रहती है। यह हमारे देश और सभ्यता का दुर्भाग्य है कि स्त्री को आर्थिक सघर्ष करना पड रहा है। स्त्री का स्थान गृहस्वामिनी का है—वह ममता, भावना और त्याग की प्रतीक है।"

नीलिमा पावती की माँ की बाते सुनकर चकित थी क्योकि आज तक, उसने जिस समाज को जाना था वहा नारी स्वतन्त्र, उन्मुक्त, स्वच्छन्द और एक हद तक उच्छृखल हो चुकी थी। नीलिमा के सामने उसकी अपनी और सहेलियो की माताएँ थीं जो स्वतन्त्र विचरण किया करती थी, क्लबो और होटलो की जिन्दगी बिताती थी, पुरुषो के बीच विचित्र वेश-भूषाएँ धारण कर उन्मुक्त आचरण करती थी और कई तो सिगरेट, शराब और जुए से भी परहज नही रखती थी।

"लेकिन माडन सोसायटी बहुत आगे बढ चुकी है।" नीलिमा ने अपने दष्टिकोण को बनाये रखने के लिए कहा।

"यह माडन सोसायटी और उसके चाल चलन कुछ अमीर घरानो के लिए ठीक हागे', इस बार पावती की माँ के स्वर मे एक दृढता थी जो कटुता का भ्रम उत्पन्न करती थी, "लेकिन हम साधारण और गरीब

लोगों को समाज का ख्याल रखकर चलना होता है। तुम लोग कितने ही एडवान्स्ड क्यों न हो जाओ, समाज सदा ही दकियानूस रहा है। अगर हमारी लड़कियाँ मेकअप करके पीठ और पेट खोलकर बाजारों में घूमने लगें तो हमारे समाज और बिरादरी में इनके लिए लड़का ढूंढना कठिन हो जायेगा। फिर हमारे पास इतनी दौलत भी नहीं है कि हम किसी डाक्टर, इंजीनियर या आई० ए० एस० लड़के को हजारों लाखों का दहेज देकर उसके घरवालों का मुंह बन्द कर दें और लड़की को उनके हवाले कर दें।"

नीलिमा को अचानक ख्याल आया अपने पड़ोसी मिस्टर मधुसूदन का, जिनकी लड़की मधु पिछले साल जाड़ों में एक हिप्पी दल के साथ नेपाल भाग गयी थी और तीन चार महीने लापता रहने के बाद एक दिन बीमार हालत में एकाएक घर वापस आयी थी। एक महीने तक किसी हिल स्टेशन पर इलाज करवाने के बाद उसकी शादी एक आई० ए० एस० आफिसर से हो गयी जिसे मिस्टर मधुसूदन ने एक नयी कार के अलावा हजारों के अन्य प्रेजेण्ट्स तथा तिलक में नकद पचास हजार रुपये दिये थे।

"यह समाज भी बड़ा अजीब है।" नीलिमा ने कहा।

"पर समाज उन्हीं बातों पर आपत्ति करता है जो साधारण मनुष्यों की नैतिकता की कसौटी पर गलत उतरती हैं।" प्रशान्त ने कहा, "आइए, मैं आपको नीचे तक छोड़ आऊँ।'

"मैं चल नहीं पायी इसके लिए क्षमा कर दीजिएगा।' पार्वती ने दरवाजे तक नीलिमा और प्रशान्त को पहुँचाते हुए कहा, "अम्मा मुझे बहुत प्यार करती हैं और वह जो कुछ करती हैं मेरे भले के लिए ही करती हैं।"

"और आप ?" नीलिमा ने प्रशान्त के साथ सीढ़ियाँ उतरते हुए पूछा, "आप भी नहीं चलेंगे ?"

"सच पूछिए तो', ' प्रशान्त ने कहा "आपका मेरे साथ अकेले पिकनिक पर जाना मुझे उचित नहीं लग रहा है। मैं तो पुरुष हूँ—बदनामी से मेरा कुछ बिगड़ेगा नहीं पर आपको लोग मेरे साथ अकेला देखकर तरह-

तरह के अनुमान लगा सकते हैं जो आपके हित मे नही होगा।"

प्रशान्त की बात इतनी सहज और स्पष्ट थी कि नीलिमा उसका तत्काल कोई उत्तर नही सोच पायी, "क्या मतलब ?" वह यों ही प्रश्न कर बैठी।

"मतलब स्पष्ट है", प्रशान्त ने कहा, "प्रत्येक समाज में एक वर्ग 'परमिसिव' होना चाहता है पर पूरा समाज कभी भी 'परमिसिव' नही हो सकता क्योंकि समाज का सगठन ही वर्जनाओ के आधार पर हुआ है।"

"प्रशान्तजी", नीलिमा ने कहा, "आधुनिक समाज 'रेस्ट्रिक्शन्स' की परवाह नही करता।"

"तो यह सोसायटी अराजकतावादी है—'एनार्किस्ट' है।" प्रशान्त ने कहा।

"यह फ्री-सोसायटी है प्रशान्तजी", नीलिमा बोली, "और आप जिस समाज की हिमायत कर रहे हैं उसे मैं दकियानूस समझती हूँ।"

"नीलिमाजी" प्रशान्त ने जरा भी उत्तेजित हुए बिना कहा, "आपकी यह माडर्न और फ्री-सोसायटी पश्चिमी पूँजीवाद का दुष्परिणाम है। यह वह समाज है जो धनपतियो की सम्पदा और ऐश्वर्य से जन्म लेता है। लाखो करोडो गरीब और भूखे लोगो के खून पसीने पर स्थापित यह माडर्न सोसायटी प्रत्येक युग मे रही है। यह मार्डनिटी खून चूसनेवाले शोषको का एक मनोरंजन है और जिसे आप दकियानूसी समाज समझती हैं, वह शोषितो और उत्पीडितो का समाज है जिनकी मेहनत पर ही यह तथाकथित माडर्न सोसायटी कायम है।"

प्रशान्त और नीलिमा अब तक दारुलशफा की कार पार्किंग तक आ चुके थे। नीलिमा ने प्रशान्त की ओर देखा "आप शायद ठीक कहते हों", उसने कार मे बैठते हुए कहा—उसका ध्यान कार मे ही पडी एक आधुनिक 'मॉड' मगजीन पर गया जिसके कवर पृष्ठ पर किसी भारतीय महानगरी के अत्याधुनिक हॉल मे हो रहे आधुनिक युवक-युवतियों के एक सामूहिक डान्स का रंगीन चित्र था, मॉड मगजीन का यह नत्य विशेषांक नीलिमा और उसके आधुनिक साथियो के बीच एक 'क्रेज़' था, "पर जो

शामिल खड़ा रहा। उसे एक नाटकीय अनुभूति हो रही थी इन युवक युवतियों को देखकर जो अजीब बुझे हुए कातर भाव से चाय के घूट ले रहे थे। सबकी आँखों में एक विचित्र-सी निराशा थी, आभाहीन और कालिमा के घेरे में बुझे हुए फ्यूज बल्बो की भाँति थीं वे आँखों की जोड़िया। दुबले-पतले झुकी हुई कमर कमजोर और टूटी हुई-सी रीढ़ की हड्डिया। प्रशान्त को लगा कि विदेशी भिखारियों का कोई घृणित दल आ गया है नगर में और उसे एक वितृष्णा का अनुभव हुआ। वह आगे बढ़ गया।

प्रशान्त सोच रहा था। ये सभी अमरीकी युवक-युवती, उम्र इनकी बीस और तीस के बीच होगी पर सबके सब अनुभवो से ग्रस्त, सुखो से त्रस्त, कामनाहीन और बूढ़े लग रहे थे। ये लोग उस देश से आये थे जो ससार का सबसे सम्पन्न देश माना जाता है, जिसकी धन-सम्पदा का वितरण उचित अनुचित पैमाने पर सारे ससार में हो रहा था। शायद ये सब युवक-युवती जो धन और सम्पदा में भरे-पूरे थे, वास्तविक सुख की तलाश में भारत आये हैं। प्रशान्त ने सोचा, पर क्या इन्हें भारत में कुछ मिला? शायद नही, क्योकि आधुनिक भारत स्वय को भूलकर पश्चिम का अनुकरण कर रहा है।

एक जुलूस विधान सभा मार्ग की ओर जा रहा था। जुलूस के लोग मौन चल रहे थे और उनके हाथो में बैनर तथा प्लेकार्ड्स थे—नये वेतनमान की मांग, बोनस की माँग, महँगाई-भत्ते की माँग, और भी कई मागें। यह इजीनियरो का जुलूस था। सभी टेरीकाट और टेरीन की सूट टाइयाँ और रेडीमेड कमीजें पहने थे, सभी के जूतो पर कीमती क्रीम पालिश की चमक थी और चेहरे पर ताजे आफ्टर शेव लोशन' तथा विशिष्ट टेलकम पाउडरो की दमक थी। प्रशान्त के सामने एक नया प्रश्नचिह्न था। वह जानता था कि ये सभी इजीनियर सरकारी कर्मचारी हैं और देश के जन साधारण के मुकाबिले अधिक वेतन और अन्य सुविधाएँ पा रहे हैं। यही नही, इनमें से भी बहुत से अपनी शक्ति तथा विशेष स्थिति के चलते 'ऊपरी आमदनी' भी समुचित मात्रा में कर लेते हैं और तब भी असतुष्ट हैं।

प्रशान्त को लगा कि जुलूसो की यह कतार कभी भी खत्म होनेवाली

नही है। इसी के पीछे डाक्टरो का जुलूस, युनिर्वासिटी के प्रोफेसरो का जुलूस, एल० आई० सी० और बक्वालो का जुलूस, सरकारी कमचारियो का जुलूस, सभी चले आयेंगे। ये सारे कमचारी आज सडको पर अपनी मागें बुलन्द कर रहे हैं पर पशुवत् ठेला खीचनेवाले मजदूर, खेतो पर काम करनेवाले भूमिहीन किसान, दूकानो मे काम करनेवाले अद्ध-शिक्षित सेलसमन, मिलो और कारखानो मे काम करनेवाले अधमरे से श्रमिक, बेसिक स्कूलो मे काम करनेवाले भूखे अध्यापक और इन सबके अतिरिक्त बेरोजगारी से पीडित लाखो युवा और वयस्क लोग जो सघप-रत हैं, उनका क्या होगा ? क्या ऊँचे वेतनमान और नयी दरो पर महँगाई-भत्ता बाँट देने से इस देश की दरिद्रता समाप्त हो जायेगी ? प्रशान्त को लगा कि यह सारा देश और उसका समस्त बौद्धिक वग समस्या के मूल मे जाना ही नही चाहता। गरीबी और विषमता, शोषण और अत्याचार, मुनाफाखोरी और कालाबाजारी, इन्हें जड से मिटाने के मामले मे समाज का कोई भी वग गम्भीर नही है। सभी अपने-अपने स्वार्थों मे डूबे हुए इस सामाजिक व्यवस्था से समझौता करने को तैयार हैं।

प्रशान्त जुलूस को छोडकर आगे बढ गया। एक आधुनिक सिनेमा हॉल के बाहर नवयुवको की भीड किसी अश्लील फिल्म के टिकटो के लिए आपस मे जूझ रही थी। सभी नवयुवक रग-बिरगे नयी डिजाइनो के कपडे पहने किसी भी मूल्य पर टिकट लेने की कोशिश मे थे। सिनेमा के पोस्टरो पर एक सोलह साल के युवक और एक पन्द्रह साल की युवती के अनेक चित्र थे और लिखा था 'भारतीय टीन-एजम की प्रेम-कथा'। सिनेमा हॉल से कुछ दूर कुछ दादा लोग, 'डेढ वाला तीन मे' खुलेआम बेच रहे थे। प्रशान्त सोच रहा था कि क्या भारतीय किशोरों की समस्या का समाधान इसी प्रकार की फिल्मो मे मिल पायेगा ? क्या देश वाकई इतना सम्पन्न है जितना इस सिनेमाघर के पास दिखायी पड रहा है ?

प्रशान्त को याद आया कि इस तरह की भीड उसे प्रत्येक मनोरजन केन्द्र पर दिखलायी पडी। यही नही, कीमती होटलो, शराबखानो और क्लबो मे भी तो ऐसी ही भीड लगी रहती है। उसे लगा कि यह भीड कृत्रिम है, यह सम्पन्नता अस्वाभाविक है, क्योकि राशन की दूकानो पर

लाइनो मे, भीख माँगनेवालो की कतारो मे, बाढ और सूखे के लिए मिलने-वाले अनुदानो मे भी तो असख्य स्त्री-पुरुष और बच्चे एक-दूसरे के पीछे कतार बाँधे खडे रहते हैं। और वे कतारें उनकी होती हैं जिनके तन पर पूरा कपडा नही होता, जिनकी आँखो मे दरिद्रता नर्त्तन कर रही होती है। पसीने और दुर्गन्ध से भरी वे भीडें कितनी भयानक होती हैं, प्रशान्त ने सोचा। और यह भीड ? पाउडर-क्रीम तथा सेण्टो की महक से गमकती हुई, पारदर्शी जेबो से सौ सौ के नोट झाकते हुए ! आँखो मे एक बहुत ही सस्ता और घटिया भाव लिये हुए ये युवक, वास्तविकता से दूर यथार्थ से दूर एक विकृत सुख की खोज मे है—प्रशान्त का मन इस विरोधाभास से तिलमिला उठा।

प्रशान्त बढता हुआ विश्वविद्यालय की ओर निकल आया था कि यूनियन भवन के पास एक बडी भीड दिखलायी पडी। कुछ धमाके और शोर सुनकर वह रुक गया।

"उधर मत जाइएगा," एक व्यक्ति बोला, 'वहाँ लडाई हो रही है।

'लडाई ?" प्रशान्त ने पूछा "कैसी लडाई ?"

"यूनियन के चुनाव होनेवाले हैं न,' वह व्यक्ति बोला, 'इस बार शहर के दो बडे नेता की पार्टियो की आपसी टक्कर है' आज उन्ही दोनो दलो मे छुरे और तमचो की लडाई चल रही है।'

प्रशान्त को आश्चर्य हुआ, "चुनाव लडने मे तमचा और छुरो का क्या काम ?" उसने पूछा।

'आप समझे नही," वह अजनबी व्यक्ति प्रशान्त को समझाते हुए बोला, 'दोनो उम्मीदवार एक दूसरे को बठा देना चाहते हैं जिससे कि चुनाव सर्वसम्मति से और निर्विरोध हो जाये और इसीलिए ताकत की आजमाइश हो रही है।"

'निर्विरोध और सर्वसम्मति से'—प्रशान्त के दिमाग मे ये दो शब्द कौंधे, 'अनअपोज्ड एण्ड यूनानिमसली', राजनीतिशास्त्र के इन दो शब्दो का जो अर्थ अपनी टेक्स्ट बुकें पढकर प्रशान्त समझ पाया था वह आज के इस व्यावहारिक अर्थ से सर्वथा विपरीत और भिन्न था।

"पर पुलिस क्यों नहीं आकर इस झगडे को रोक देती है ?" प्रशान्त

ने एक निरर्थक-सा प्रश्न किया, "क्या उन्हें खबर नहीं है ?"

"जरूर होगी," वह व्यक्ति बोला, 'तमाम पुलिसवाले तो सादी वर्दी में हमेशा युनिवर्सिटी में रहते हैं, पर पुलिस को यह भी पता है कि झगड़ा किन ग्रुपों का है। इनमें से एक ग्रुप को एक वरिष्ठ मन्त्री का आशीर्वाद मिला हुआ है और दूसरे ग्रुप को एक बहुत बड़े व्यापारी से सहायता मिलती है। पुलिस तो तब आयेगी जब झगड़ा खत्म हो जायगा और घायलों को अस्पताल पहुँचाने और खानापूरी का काम रह जायेगा।"

प्रशान्त कला संकाय की ओर चल पड़ा। पूरा कैंशियस आफिस और आर्ट्स फैकल्टी मण्डपों की भाँति सजे हुए थे। पोस्टरों और बैनरों की झालरें लटक रही थीं, सड़कों पर और दीवारों पर प्रत्याशियों के नाम कलात्मक ढंग से लिखे हुए थे। टैगोर लाइब्रेरी के पास एक भीड़ थी जिसे एक दाढ़ीवाला छात्र नेता बिना माइक के अपनी बुलन्द आवाज तथा खौफनाक मुखमुद्रा में आक्रोश भरे स्वर से बोले जा रहा था।

"दोस्तों", छात्र नेता कह रहा था "हमारे विरोधी हमें पिस्तौलों और चाकुओं से धमकाने की बात करते हैं, तो हम भी उन्हें बता देना चाहते हैं कि हम कायर नहीं हैं और हम भी हथियारों से लैस हैं। 'सरफरोशी की तमन्ना अब हमारे दिल में है, देखना है जोर कितना बाजुए कातिल में है'—हम शर्माजी के पिट्ठुओं को बता देना चाहते हैं कि हम उन गीदड़ों में नहीं जो आपकी भभकी में आ जायें। हमें पता है कि शर्माजी ने खण्डूरी साहब और रमेश आहूजा को अमरीकी पिस्तौल दिखलाकर बैठा दिया है, पर मैं तो कहूँगा कि खण्डूरी और आहूजा डरपोक थे जो उनका कलेजा पिस्तौल देखकर दहल गया। चुनाव लड़ना कोई बच्चों का खेल नहीं है दोस्तो, हालत बिगड़ जाती है सदमे सहते-सहते ।" प्रशान्त चकित था जनतन्त्र का यह रूप देखकर जहाँ प्रत्येक प्रत्याशी के लिए पाशविक बल का सहारा लेना अनिवार्य हो गया था।

प्रशान्त लाइब्रेरी की ओर जा रहा था, तभी उसे वह पूर्वपरिचित जापानी छात्र सुजीकी एक रिक्शे पर अपने सूटकेस और बेडिंग लिये आता हुआ दिखलायी पड़ा। प्रशान्त को देखकर उसने अपना रिक्शा रुकवाया और उसे सादर अभिवादन किया।

"कहाँ चल दिये ? ' प्रशान्त ने सुजीकी से सामान की ओर इशारा करते हुए पूछा।

' हरिद्वार जा रहा हूँ।" सुजीकी ने कहा, "कुछ दिन गुरुकुल काँगडी म भारतीय संस्कृति का अध्ययन करूँगा और उसके बाद हिमालय के धार्मिक केन्द्रों की यात्रा करूँगा।"

प्रशान्त ध्यान से इस सुदूर पूर्व के नवयुवक को देख रहा था जो खद्दर का कुरता और पायजामा पहने अपने देश से हजारों मील दूर भारत आया था सत्य का प्रकाश प्राप्त करने के लिए। प्रशान्त सोच रहा था कि अज्ञान के अन्धकार में भटकता हुआ यह आधुनिक भारत क्या फिर से सारे संसार को सनातन ज्ञान दे पायेगा ?

"चलिए मैं आपको स्टेशन तक पहुँचा आता हूँ।" प्रशान्त ने सुजीकी के साथ रिक्शे पर बैठते हुए कहा।

"कैसा लगा भारत आपको ?" रिक्शे के चल पडने के बाद प्रशान्त ने पूछा।

"अत्यन्त सुन्दर।" जापानी युवक सुजीकी ने मुस्कराते हुए कहा, "यहाँ की जलवायु और वातावरण म मुझे एक प्रकार की आध्यात्मिक शान्ति मिली है। यहाँ के ग्रामीण जीवन को मैंने तनावों और चिन्ताओं से मुक्त पाया और यहाँ के सामान्य जन का सादा जीवन मुझे अत्यन्त आकर्षक लगा।" सुजीकी धाराप्रवाह शुद्ध साहित्यिक हिन्दी में वार्तालाप कर रहा था, ' परन्तु यहाँ का नागरी जीवन मुझे पश्चिम का अनुकरण करता हुआ लगा और विश्वविद्यालय, क्रयविक्रय-केन्द्रों तथा जलपान गृहों का वातावरण मुझे अनुकूल नहीं लगा। इसीलिए मैं यहाँ से प्रस्थान कर रहा हूँ और हिमालय की ओर जा रहा हूँ वास्तविक भारत को खोजने।"

प्रशान्त विस्मित था इस विदेशी युवक के घोर आशावाद को देखकर। ईश्वर से मेरी प्रार्थना है कि आप जिस उद्देश्य से आये हैं वह पूरा हो।" प्रशान्त ने कहा।

स्टेशन पहुँचकर प्रशान्त ने हरिद्वार होकर देहरादून जानेवाली एक जनता गाडी के स्लीपर में सुजीकी के लिए बैठने की एक सीट का प्रबन्ध कर दिया। इसके लिए उसे गार्ड से विशेष विनय करनी पडी। सुजीकी

से उसने उसका जापान का पता ले लिया और फिर मिलने की आशा व्यक्त करते हुए उसे विदा किया।

"एक रुपये मे लखपति बनिए !"—स्टेशन के बाहर तमाम राज्यो के लाटरी टिकट लिये हुए, एक किशोर ने प्रशान्त को घेर लिया और कहा, "उत्तर प्रदेश लाटरी—दस लाख का इनाम, हरियाणा लाटरी—पाँच लाख का इनाम, दिल्ली लाटरी—तीन लाख का इनाम ! साहब, सभी इनाम इसी सप्ताह खुलनेवाले हैं, कोई-सा भी टिकट ले लीजिए।"

"मैं लाटरी खरीदने मे विश्वास नही करता।" प्रशान्त ने कहा और आगे बढ जाना चाहा।

"बाबूजी, प्लीज", लडका, जो पढा लिखा लग रहा था, बोला, "मैं बहुत गरीब हूँ बाबूजी, आज सुबह से सिर्फ दो टिकट बिके हैं और अगर परसो तक यू॰ पी॰ लाटरी के पचास टिकट नही बिके तो बडा नुकसान हो जायगा मेरा। घर पर माँ है, बहन है, छोटा भाई है और कमानेवाला मैं और मेरा एक छोटा भाई—वह छोटी लाइन पर टिकट बेचता है। बस, एक टिकट ले लीजिए, शायद आपका ही इनाम निकल आये" लडका गिडगिडाया।

प्रशान्त ने एक टिकट ले लिया। सरकारी लाटरी का टिकट था प्रशान्त के हाथ मे। वह सोच रहा था कि यही सरकार एक ओर तो गरीबी दूर कर, विषमता मिटाकर समाजवाद लाने का वादा कर रही है और दूसरी ओर प्रत्येक महीने पूरे देश मे लाटरी का धन बाटकर दजनो लोगो को लखपति बना रही है। देश के लाखो गरीब आदमियो को एक रुपये म लाखो रुपये का रगीन सपना बेचकर क्या यह गरीबी की समस्या सुलझा पायेगी ? क्या सिद्धान्त और व्यवहार मे यह लाटरी महज एक जुआ नही है ?

११

प्रशान्त की थीसिस का काम तेजी के साथ आगे बढ रहा था। सिद्धान्तो का यह शब्दजाल बडा ही रोचक बनता जा रहा था। समस्याएँ, उनकी पृष्ठ-भूमि, उनकी व्याख्या, उनके गुण दोषो का निरूपण और अन्त मे निर्णय या समाधान—फिर नयी समस्याएँ और नये समाधान। पृष्ठ पर पृष्ठ भरते जा रहे थे और अध्याय पर अध्याय समाप्त होते जा रहे थे। सिद्धान्तो का यह गणित बडा ही मोहक और लुभावना था—विकराल और जटिल समस्याओ के सूक्ष्म और सरल समाधान।

थीसिस की समाप्ति की ओर की इस यात्रा मे जो सबसे गहन प्रश्न प्रशान्त के सामने था वह यह था कि क्या इन सैद्धान्तिक हलो के आधार पर व्यवहार को प्रभावित किया जा सकता है? प्रशान्त को कभी-कभी ऐसा लगता कि वह थीसिस लिखकर स्वय को धोखा दे रहा है। एक कृत्रिम डाक्टरेट की डिगरी लेकर उसे सन्तोष करना पडेगा और उसकी थीसिस भी उन हजारो शोध-ग्रन्थो की भीड मे खो जायगी जो धूल और दीमक से सघर्ष करती हुई पुस्तकालयो मे सुरक्षित हैं।

"मुझे विश्वास है कि तुम्हारी थीसिस एक्जामिनर्स को बहुत प्रभावित करेगी।" प्रोफेसर रगनाथन ने प्रशान्त की थीसिस के अन्तिम अध्याय पर अपनी सहमति देते हुए कहा।

'लेकिन सर', प्रशान्त ने कुछ हिचकिचाते हुए कहा, "कौन इन

सिद्धान्तो को पढ़ना और समझना चाहता है ?"

"तुम्हे इसकी चिन्ता नही करनी चाहिए।" प्रोफेसर रगनाथन ने कहा, "तुम्हारा कर्त्तव्य अपने काम को निष्ठा और परिश्रम के साथ पूरा करना था। तुम्हारी रिसर्च से सम्बन्धित जो पेपर्स पॉलिटिकल साइन्स के जर्नल्स में छपे थे उनकी बड़ी प्रशसा हुई है, और बम्बई के एक प्रख्यात प्रकाशक तुम्हारी थीसिस को प्रकाशित करना चाहते हैं।"

प्रशान्त को कुछ सन्तोष हुआ, "यदि आप कहें तो मैं अपनी थीसिस को टाईपिंग के लिए दे दू।"

"अवश्य", प्रोफेसर रगनाथन ने कहा, "और हाँ, हमारे विभाग के एक प्रवक्ता कुछ महीनो की स्टडी लीव पर अगले महीने यू० के० जा रहे हैं। यदि तुम चाहो तो मैं तुम्हारी नियुक्ति एडमिनिस्ट्रेटिव तौर पर कर लू।"

प्रशान्त चौंक गया। "लेकिन सर", वह बोला, "मैंने आज तक कभी पढ़ाया नही है।"

"योग्य तुम हो ही", प्रोफेसर रगनाथन ने कहा, "और अनुभव तो काम करने पर ही होता है। मैं नही चाहता कि तुम जल्दी मे निर्णय करो। अभी मेरे पास एक महीने का समय है, इस बीच तुम सोच लेना।"

प्रशान्त जब प्रोफेसर रगनाथन के साथ कमरे से बाहर निकला तो बाहर छात्रो की एक भीड़ मिली।

"आप लोग कैसे खड़े हैं ?" प्रोफेसर रगनाथन ने पूछा।

"पॉलिटिकल थाट के क्लास इस पूरे सेशन में केवल दो बार लगे है सर !" एक छात्र बोला।

"पालिटिकल थाट—वह तो डाक्टर उपाध्याय पढ़ाते होंगे आपको।" प्रोफेसर रगनाथन बोले, "छुट्टी वह बहुत कम लेते हैं, फिर आपकी क्लासेस क्यो नही हुई ?"

"सर, आते तो वह रोज है पर ज्यादातर वे स्टाफ क्लब या सोश्यो-लजी डिपार्टमेण्ट मे बठते हैं।" दूसरा छात्र बोला।

"अक्सर किसी जरूरी काम की वजह से वे हमारी एटेण्डेन्स लेकर छोड़ देते हैं।" एक और छात्र बोला।

"इधर कई दिनो से हाजिरी भी नही लगी है सर !" एक अन्य छात्र

ने कहा, "आप हमारे लिए कोई अन्य एरेंजमेण्ट कर दें।"

'आप लोग अपनी क्लास में चलें।' प्रोफेसर रंगनाथन बोले, "मैं अभी व्यवस्था करता हूँ।"

जब लड़के शान्त भाव से क्लास रूम की ओर चले गये तब प्रोफेसर रंगनाथन ने प्रशान्त से कहा, तुम जरा स्टाफ क्लब जाकर डाक्टर उपाध्याय को देखो और उनसे फौरन मुझसे मिलने को कहो। तब तक इन लड़कों के क्लास में जाकर मैं कुछ पढ़ाता हूँ।"

प्रशान्त जब स्टाफ क्लब पहुँचा तो उस समय डाक्टर उपाध्याय कुछ अन्य अध्यापकों के साथ पपलू रमी खेल रहे थे और अपनी पाइप से धुआँ उगल रहे थे।

"निकालो प्यारे पाँच रुपये बारह आने।" डाक्टर उपाध्याय ने एक हारे हुए खिलाड़ी के प्वाइण्ट्स गिनकर कहा।

क्षमा कीजिएगा,' प्रशान्त ने प्रोफेसर उपाध्याय के पास जाकर बड़ी ही शालीनता के साथ कहा, "मुझे प्रोफेसर रंगनायन ने भेजा है—वे आपको याद कर रहे हैं।"

"तुम ?" डाक्टर उपाध्याय ने कुछ खिन्न स्वर में कहा, "तुम वही रिसर्च स्कालर हो न जो उस खबीस के अण्डर काम कर रहे हो ? क्या काम है उस बुड्ढे को ?"

"काम उन्हें नहीं है", इस बार प्रशान्त का स्वर भी कुछ कठोर हो गया था, 'काम उन लड़कों को है जिनका पीरियड आपको लेना था और जो काफी देर तक आपका इन्तजार करने के बाद प्रोफेसर रंगनायन के कमरे में गये थे।"

"तो सालों ने मेरी शिकायत की है !" पान रुपये बारह आने गिनकर अपनी जेब में रखते हुए डाक्टर उपाध्याय ने कहा, "पर्चा भी मेरा है और कापियाँ भी मेरे पास ही आयेंगी। एक-एक को रगड़ दूंगा। आप लोग खेल जारी रखिए, मैं अभी उस बुड्ढे और उन लौण्डों से निबटकर आता हूँ।' और डाक्टर उपाध्याय उठकर चल दिये।

प्रशान्त की चाय पीने की इच्छा थी। वह स्टाफ क्लब में चाय का आर्डर देकर एक कोनेवाली टेबल पर अखबार लेकर बैठ गया। उसी

समय युवा अध्यापकों का एक झुण्ड आकर प्रशान्त के बगलवाली टेबुल पर बैठा।

"भगवानदीन", एक युवा अध्यापक ने आवाज दी, "जरा पाँच कॉफी और मटन सण्डविचेस ले आओ।" इसके बाद उस अध्यापक ने अपने पोर्टफोलियो से एक स्काचर्-व्हिस्की की बोतल निकालकर अपने साथियों को दिखायी और कहा, "ये देखो प्यारे, सीधे स्काटलण्ड से मँगवायी है उस प्रकाशक के बच्चे ने। वह कह रहा था कि अगर मैं शरण एण्ड करण की 'सरल केमिस्ट्री' खरीदने के लिए बी० एस० सी० के छात्रों को मजबूर कर दूं तो वह साल-भर स्काच की सप्लाई करेगा। तो इसी खुशी में आप सबकी पार्टी आज शाम को मौलाना के क्वाब सेण्टर में। वैसे खोल तो यहीं देता पर इन लौण्डों का कोई भरोसा नहीं—साले हंगामा खड़ा कर देंगे।" और इतना कहकर अध्यापक महोदय ने बोतल पुनः अपने पोर्टफोलियो में पहुँचा दी।

"वाह प्यारे, क्या ठाठ हैं तुम्हारे!" दूसरे अध्यापक ने अपना तकिया-कलाम उछाला, "हमें भी तो मिलवाओ उस प्रकाशक से। यहाँ तो साले नमूने की कापी तक प्रेजेण्ट करने में आनाकानी करते हैं।"

"और कहो सक्सेना", एक और अध्यापक ने कॉफी का घूंट लेते हुए कहा, "क्या हाल है उस साली हुस्न की परी का? अब भी वह तुमसे नोट्स मांगने आती है?"

"क्या बताऊँ पार्टनर", सक्सेना बोले, "लगता है उसे इन लौण्डों ने या किसी सीनियर गर्ल स्टूडेण्ट ने मेरे खिलाफ भड़का दिया है और अब तो वह कतई लिफ्ट नहीं देती।"

"ये लौण्डे साले अपने को तो फिल्मी हीरो समझते हैं और हमें चरित्र अभिनेता या विलेन बनाने को तैयार रहते हैं।" वही अध्यापक बोले।

"विलेन?" दूसरे अध्यापक बोले "अजी साहब, ये लड़के तो आपको सीधे-सीधे कामेडियन समझते हैं। मेरा बस चले तो सालों की खाल उतरवा दूं।"

एक मध्य आयु के अध्यापक ने सैण्डविच चबाते हुए कहा, "तुम सब

चूतिए हो।"

'क्या ?" बाकी अध्यापकों के मुह से निकला।

'और क्या", अधेड अध्यापक बोले, 'जो कुछ भी करना हो उसे एक सोबर और डिग्निफाइड तरीके से करना चाहिए। अब आप युनिवर्सिटी की ब्यूटी क्वीन से इश्क फरमाना चाहेंगे तो बदनामी होगी ही, जूते अलग से पड सकते हैं। अपना तो प्रिंसपुल यह है कि इश्क फरमाओ उससे जिस पर कोई शक नहीं कर सके—यानी उम्र म कुछ बडी, साँवली और साधारण नाक-नक्शवाली लौण्डिया से। इससे वह बेचारी लडकी भी खुश रहती है और लडको की गिद्ध-दृष्टि से भी बचाव होता है।"

प्रशान्त को अध्यापकों की इस बातचीत से अजीब उबकाई सी महसूस हुई। चाय को जल्दी-जल्दी गले से नीचे उतारकर बिल के पैसे उसने ट्रे पर रखे, और उठकर खडा हो गया। इसी बीच टेबुल पर दो वरिष्ठ अध्यापकों मे विश्वविद्यालय की राजनीति को लेकर अंग्रजी में एक ऐसी गाली गलौज शुरू हो गयी थी जो किसी भी समय मारपीट का रूप ले सकती थी। प्रशान्त चुपचाप क्लब के बाहर आ गया। अध्यापन-कार्य का जो प्रस्ताव अभी कुछ समय पूर्व उसके सामने रखा गया था उसके प्रति प्रशान्त के मन मे अब बहुत कम उत्साह रह गया था।

'ये अध्यापक ?" एक विद्यार्थी नेता कला संकाय के सामने यूनियन की एक सभा को सम्बोधित कर रहा था, 'ये क्या पढायेंगे हमे ? इनमे तो अधिकाश ऐसे हैं जिन्होंने खुद नकल करके, खुशामद और दौड धूप के बाद अपनी डिगरियाँ हासिल की हैं—इन्हे तो अपने विषय तक का पूरा ज्ञान नहीं है। सारा दिन कॉफी हाउस स्टाफ क्लब और मन्त्रियो के बँगलो पर अपना समय बितानेवाले, हिप्पीकट बाल और गुण्डाछाप कलमे रखे हुए ये नवशेबाज क्या हमे विद्या का दान करेंगे ? दोस्तो अब वह समय आ गया है कि हम इन अध्यापकों के काले कारनामो का भण्डाफोड कर दें और आपको यह जानकर खुशी होगी कि आपकी यूनियन ऐसे अध्यापकों की एक लिस्ट बना रही है जो अयोग्य हैं और हमारे इस विद्या-मन्दिर के लिए कलंक हैं। हमारे गुप्तचर प्रत्येक विभाग के सभी अध्यापकों के क्रियाकलापो का ब्योरा तयार कर रहे हैं जो शीघ्र ही हम आपके

सामने रखेंगे।" तालियां बज रही थी, शोर हो रहा था, सारा वातावरण हिंसात्मक होता नजर आ रहा था।

"हमारी अनेक मागें हैं", छात्र नेता कह रहा था, "जिन्हें हमने वी० सी० के सामने रख दिया है और अगर ये माँगें नही मानी गयी तो हम परीक्षा नही देंगे और विश्वविद्यालय को एक घण्टे के लिए भी नही चलने देंगे। हमारी मुख्य माँगें हैं—परीक्षा मे बैठने के लिए फीस तथा हाजिरी मे छूट, पुलिस और पी० ए० सी० के बिना परीक्षा-कार्य का सचालन और भ्रष्ट अधिकारियो तथा अध्यापको का निकाला जाना।"

प्रशान्त के सामने नयी पीढी थी—आदर्शो से रिक्त तथा मूल्यो से शून्य। प्रशान्त के सामने नयी पीढी का निर्माण करनेवाले भी थे जिनमें से अधिकाश भ्रष्ट और बेईमान थे। अव्यवस्था और अराजकता की लपटो से घिरा हुआ था यह समाज। प्रशान्त को लगा कि पूरा राष्ट्र तेजी के साथ विनाश और विध्वस की ओर बढता जा रहा है।

प्रशान्त ने महसूस किया कि निरपेक्ष और तटस्थ रहना अब असम्भव है—एक बेचनी, एक अकुलाहट उफानें ले रही थी प्रशान्त के अन्दर। उसके मन म आया कि वह दौडकर मच पर चढ जाये और माइक अपन हाथ में लेकर इस नगी पीढी को उसका कत्तव्य बताये और उसे मार्गदर्शन कराये। पर मच पर वह नही जा सका। उसे यह अहसास हुआ कि यह मच उसके लिए उपयुक्त नही है। प्राचीन रोम के भीडतन्त्र की याद दिला रही थी प्रशान्त को यह सभा। प्रत्येक श्रोता अपनी बौद्धिकता से शून्य होकर भावना की बाढ मे बह जाने को उत्सुक था और प्रत्येक वक्ता इस भीड मनोविज्ञान का लाभ उठाने को बेचैन। प्रशान्त आगे बढ गया।

उद्विग्न मन से प्रशान्त चल पडा केसरबाग की ओर। लखनऊ का केसरबाग उसे पुराने नवाबी युग की मौन दास्तान सुनाता हुआ प्रतीत हुआ, जबकि सामन्तवाद अपनी चरम सीमा पर था। ऐय्याशी और मौज-मस्ती म डूबे हुए उन नवाबो की रँगरेलियो का प्रमुख मच था यह केसर-बाग जिसके चारो ओर बनी हुई थी केसरिया रग की लखौरी इटो की तमाम इमारतें जो किसी जमाने म नवाब की तीन सौ पंसठ बेगमो का हरम थी। बीच मे वह सफेद बारादरी थी जहाँ नवाब ऐश्वर्य के मद म

चूर हो विकृत आनन्द और सुख का मजा लेने के लिए तरह-तरह के स्वांग रचा करता था। वह ऐश और आराम का मजर तब तक चलता रहा जब तक कि विदेशी सेनाओं ने लखनऊ को चारों ओर से घेर नहीं लिया था और पैरों में घुंघरू पहने हुए नवाब को अपनी बेगमों और मुसाहिबों के साथ अंग्रेजों ने कैदखाने में नहीं डाल दिया था।

प्रशान्त को आश्चर्य हो रहा था यह सोचकर कि जो घृणित और विकृत जीवन किसी जमाने में नवाब और बादशाह, राजे और महाराजे, सामन्त और उमराव जमींदार और जागीरदार व्यतीत करते थे उससे भी घिनौना और अनैतिक जीवन आज देश के कितने ही अमीर और साधनसम्पन्न व्यक्ति जगह-जगह बिता रहे हैं। नगरवधुओं, वेश्याओं और तवायफों का स्थान ले लिया है अंग्रेजी फैशनपरस्त सोसायटी गर्ल्स तथा आधुनिक भद्र की नर्तकियों ने और नवाबों-उमरावों की जगह ले ली है उद्योगपतियों, मन्त्रियों नेताओं अफसरों, ठेकेदारों तथा उनके युवा पुत्रों ने। एयरकण्डीशण्ड होटलों, क्लबों और बंगलों में विदेशी वाद्ययन्त्रों की कभी न समाप्त होनेवाली धुनों पर विदेशी शराबों और स्वदेशी कबाबों पर थिरकती हुई माडर्न पार्टियों तथा जम सेशनों में उसे नवाब वाजिद-अली शाह के सैकड़ों प्रतिरूप ऐय्याशी की उस आग को कभी न बुझने देने के लिए कृतसंकल्प दिखायी दिये जो किसी युग में इसी केसरबाग में प्रज्ज्वलित हुई थी।

प्रशान्त को केसरबाग एक वीरान खण्डहर-सा लगा। नवाब और नवाबी सामन्त और सामन्तशाही, राजा और राजतन्त्र—सभी मिट चुके थे। प्रशान्त को यह अनुभव हुआ कि इतिहास का अपना एक अलग क्रम है जो *व्यक्ति या व्यक्ति समूहों से प्रभावित न होकर स्वयं अपनी धारा* से सारे समाज को, उसकी मान्यताओं और कार्यपद्धति को बदल देता है। बड़े से बड़े तानाशाह को इसी इतिहास की धाराओं ने धूल में मिला दिया था। प्रशान्त को महसूस हुआ कि इतिहास फिर से अपना न्याय करने को बेचैन हो रहा है। अत्याचार, शोषण उत्पीडन और उन्माद का यह रंगारंग दौर कब तक चलेगा, यह प्रशान्त के अनुमान से परे था परन्तु यह 'यथास्थिति' या 'स्टेटस को' सदैव नहीं रहेगा यह निश्चित था।

१२

प्रशान्त का काम लखनऊ विश्वविद्यालय मे समाप्त हो चुका था। अक्टूबर मे होनेवाली जमन प्रोफिशिएन्सी की परीक्षा भी वह अच्छे अको से पास कर चुका था और उसने अपनी थीसिस भी टाइप कराकर रख ली थी क्योकि उसे अपनी डिग्री लेने के लिए अभी काफी समय तक प्रतीक्षा करनी थी। प्रशान्त को अपने भविष्य की योजना बनानी थी। विश्वविद्यालय मे शिक्षणकाय करने की अपनी महत्वाकाक्षा को उसन वतमान प्रसग म स्थगित कर दिया था, राजनीतिशास्त्र विभाग मे अस्थायी प्रवक्ता के पद पर काय करने से उसने इनकार कर दिया था।

"तुम राजनीति में क्यो नही आ जाते?" रमाकान्त ने एक दिन यूनियन कण्टीन मे प्रशान्त से पूछा।

'राजनीति ?" प्रशान्त ने आश्चय से पूछा, "क्या राजनीति भी करियर हो सकती है ? मेरा मतलब है कि क्या राजनीति भी कोई आजीविका है ?"

"करियर का अथ है जीवन-यापन प्रणाली', रमाकान्त बोला, "और इस अथ म राजनीति एक करियर अवश्य है। परन्तु राजनीति का पेशा अपनानेवाले को बहुत-से त्याग करने होते हैं, तो इस प्रकार इसे आजीविका नहीं कहा जा सकता।"

"लेकिन जो भी व्यक्ति राजनीति मे आयेगा, उसकी दैनिक आवश्यक-

ताओं की पूर्ति किस प्रकार होगी ?" प्रशान्त ने पूछा।

"मनुष्य की दैनिक आवश्यक्ताएँ न्यूनतम और स्वल्प भी हो सक्ती हैं।" रमाकान्त ने कहा, "कम से कम भोजन और वस्त्रों से भी जीवन बिताया जा सकता है। गांधीजी की आश्रम प्रणाली में इस समस्या का निदान निकल आया था जहां प्रत्येक राजनीतिक कार्यकर्त्ता अपनी आजीविका भर के लिए चरखा कातकर सूत तयार कर लेता था। वैसे एक बौद्धिक रूप से जाग्रत और शिक्षित राजनीतिज्ञ के लिए लेख और पुस्तकें लिखना भी आर्थिक चिंताओं से बचने का उपाय है।'

'लेकिन रमाकान्त' प्रशान्त ने गम्भीरतापूर्वक रमाकान्त की बात को समझते हुए कहा 'मैं इस दलगत शक्ति की राजनीति के अखाडे में कूदना नहीं चाहता। क्या कोई राष्ट्रीय राजनीति नहीं हो सक्ती ?"

"हो सक्ती है, रमाकान्त ने उत्तर दिया, 'कोई भी राष्ट्रीय आन्दोलन राष्ट्रीय राजनीति का ही तो अंग है। स्वतन्त्रता के पहले महात्मा गांधी के नेतृत्व में कांग्रेस की राजनीति राष्ट्रीय ही तो थी। लेकिन प्रशान्त", रमाकान्त ने दृढ स्वर में कहा, "जिस मार्ग को अपनाने की बात तुम कह रहे हो उसके लिए तुम्हें अपने निजी जीवन की अनेक सुख सुविधाओं का त्याग करना पड़ सकता है। तुम्हें अपने को समूह के प्रति समर्पित कर देना होगा। क्या तुम इसके लिए तयार हो ?"

"रमाकान्त", प्रशान्त ने आत्मविश्वास के साथ कहा, "जिस परिवेश में तुम मुझे देख रहे हो वह मैंने स्वेच्छा से ही चुना है और आत्मसंतोष पाने के लिए मैं किसी भी परिस्थिति को सहर्ष अपनाने में पीछे नहीं रहूँगा।"

'ठीक है प्रशान्त", रमाकान्त ने कहा, "इस देश की सामाजिक अव्यवस्था को समाप्त कर एक नये वर्गहीन समाज की स्थापना करने का हम युवकों पर भारी उत्तरदायित्व है। अपने संकल्प को दृढ बनाओ और अवसर की प्रतीक्षा करो। मैं तुम्हारे साथ हूँ।" प्रशान्त और रमाकान्त ने दृढता के साथ हाथ मिलाया और विदा ली।

प्रशान्त को बस हनुमान सेतु पर ही मिल गयी। बस पर वह चढ गया पर वह खड़ी रही। विश्वविद्यालय के लगभग एक दर्जन छात्र बिना

टिकट लिये यात्रा करना चाह रहे थे और कण्डक्टर गिडगिडा रहा था कि कम से कम पैसेवाला टिक्ट लेकर चाहे जहाँ तक की यात्रा वे भले कर ल, पर बिना टिकट न चलें क्योंकि इससे उसकी नौकरी के जानका खतरा था। छात्र बदले म कण्डक्टर को गालिया दे रहे थे और उसे पीटने की धमकी दे रह थे। सारी बस मे एक तनाव छाया हुआ था, औरतें और बच्चे सहमे हुए बैठे हुए थे और प्रबुद्ध नागरिक आतंकित और मौन थे।

प्रशान्त को लगा कि मूक दशक बने रहने से अब काम नही चलेगा। वह भीड को पार करता हुआ सीधे कण्डक्टर के पास आया और बोला, "ऐसा करो कि तुम इन लोगों को टिकट फाडकर दे दो और पैसे मैं दिये देता हूँ।"

"आप कौन होते हैं हमारे पैसे देनेवाले ?" एक छात्र बोला।

"मैं भी विश्वविद्यालय का एक छात्र हूँ', प्रशान्त ने कहा, 'और रिसर्च स्कालर होने के नाते आपका बडा भाई भी हूँ। आपकी आज की यह यात्रा मेरी ओर से रही।' और इतना कहकर प्रशान्त ने एक पाच का नोट बढाया।

"ठहरिए", एक छात्र बोला, "पैसे हमारे पास भी हैं, पर हम स्टूडेण्ट हैं, हमम से कोई कमाता नही है और रोडवेज से सरकार को वैसे भी काफी मुनाफा होता है, तो क्या छात्र होने के नाते गवनमेण्ट हम फ्री नही ले जा सकती ?"

प्रशान्त को प्रसन्नता हुई कि उसके व्यवहार के कारण जो छात्र अभी तक हठधर्मी और शक्ति का प्रदशन कर रहे थे उनमे कम से-कम तक करने की इच्छा तो हुई। वैसे उनका तक उसे बडा लचर लगा।

"पर इसके लिए आपको शासन से माग करनी चाहिए। आपका विवाद तो इस सामाजिक व्यवस्था से है न, तो उसके लिए आप इस साधारण कमचारी से क्यों झगडते ह ?" प्रशान्त ने कहा।

'बाबूजी", कण्डक्टर कातर भाव से बोला, 'वैसे मैं स्टूडेण्टो से कभी नही उलझता हूँ लेकिन आजकल हम लोगो पर बडी सख्ती हो रही है। अभी कल ही बिना टिकट यात्रा कराने के जुम मे अट्ठाईस कण्डक्टर सस्पेण्ड हुए हैं। मैं बडा गरीब आदमी हूँ बाबूजी—घर पर कई प्राणी हैं

और कमानवाला अकेला मैं, उस पर महँगाई का हाल तो आप देख ही रहे हैं।"

"सब पता है कितने गरीब हो!" एक छात्र बोला, "रोज बीसियो रुपये ऊपरी आमदनी के पैदा करते हो और दस पैसे मे फोकट ही कही भी ले जाते हो।"

"आप मुझे डरपोक समझें या ईमानदार", कण्डक्टर बोला, "पर चोरी मैंने कभी नही की है।"

"ठीक है", एक छात्र बोला, "हम टिकट ले लेते हैं पर अगर तुम्हें कभी बेईमानी करते हुए पाया तो बहुत बुरा होगा।" इतना कहकर उस छात्र तथा उसके साथियो ने अपने टिकट ले लिये और प्रशान्त ने अपना पाच का नोट जेब मे रख लिया।

बस जब स्टेडियम पर आकर रुकी तो सात युवको का एक झुण्ड उस पर चढा और उन युवको ने भी टिकट खरीदने से इनकार कर दिया। वे छात्र जसे नही दिखायी पडते थे पर स्वय को छात्र कह रहे थे। कण्डक्टर उनसे बात कर ही रहा था कि तभी एक पुलिस वैन आकर रुकी। कुछ पुलिसवाले तथा कुछ रोडवेज के अधिकारी उससे उतरे। कण्डक्टर के बताने पर कि ये टिकट नही ले रहे हैं और इसीलिए बस रुकी हुई है, पुलिसवालो ने बडी नृशसता के साथ उन सातो युवको के लम्बे बाल खीचते और गालिया देते हुए उन्हें बस से नीचे उतारा और वन पर लादकर चल दिये।

प्रशान्त हलवासिया मार्केट पर उतर पडा और पदल ही हजरतगज की मेन रोड पर फिल्मिस्तान सिनेमा की ओर बढ गया। आगे बढते ही उसे हजरतगज की एक आधुनिक रेडियो की दूकान पर हिंसा का नगा नाच देखने को मिला। युवको का एक दल दूकान मे तोड फोड कर रहा था, दूकान के कमचारियो को पीट रहा था और लोग भीड लगाये वह काण्ड देख रहे थे। एकाएक 'पुलिस आ रही है' की आवाजो के बीच विध्वस का यह ताण्डव कुछ ही क्षणो म समाप्त हो गया और तोड फोड करनेवाले युवक भीड में विलीन हो गये। प्रशान्त स्तब्ध था नवीन के इस नग्न प्रदर्शन को देखकर और क्षुब्ध था यह देखकर कि सामान्य

नागरिको ने इस अराजकता के आगे आत्मसमपण कर दिया है।

प्रशान्त विधायक निवास मे स्थित अपने कमरे मे पहुँचा ही था कि तभी पावती उसके कमरे मे आ पहुँची। पावती बेहद घबरायी हुई थी और बदहवास लग रही थी। प्रशान्त ने प्रश्नसूचक दृष्टि से पावती की ओर देखा।

"पिताजी की हालत बहुत खराब है।" वह एक साँस मे कह गयी, "उन्हें दिल का दौरा पड गया है। उन्ह तुरन्त अस्पताल ले जाना होगा और घर पर केवल मैं हूँ और अम्मा हैं। आप हमारी मदद करेंगे ?"

प्रशान्त ने पावती को ढाढस बँधाया और एम्बुलेन्स का प्रबन्ध करने वह सीधे टेलीफोन बूथ पर पहुँच गया, लेकिन एम्बुलेन्स के खाली न होने के कारण उसने बाहर जाकर एक टैक्सी का प्रबन्ध किया और शीघ्र ही पावती की माँ के साथ मेडिकल कालेज की ओर रवाना हो गया। एमरजेन्सी मे श्री शशिकान्त को रखा गया। उन्हे फौरन अनेक दवाइयाँ दी गयी, इजेक्शन लगाये गये और ऑक्सीजन दी गयी।

'इनकी हालत बडी गम्भीर है", डॉक्टर ने उपचार के बाद बताया, "रात-भर इन्हें खतरे से खाली नही बताया जा सकता। वैसे चिन्ता की कोई बात नही है।"

"क्या हम उनसे मिल सकते हैं ?" पावती की माँ ने पूछा।

"हा", डाक्टर ने कहा, "पर उनसे अधिक बातें न कीजिएगा। स्ट्रेन पड सकता है। सिस्टर", डाक्टर ने नर्स से कहा, "आप लोगो को अन्दर ले जाओ। मैं अपन कमरे मे हूँ—जरूरत पडने पर बुला लेना।" और तब प्रशान्त और पावती की माँ वाड के अन्दर चले गये।

"पावती की माँ", शशिकान्तजी ने शिथिल वाणी मे कहा, "यह लोग मुझे बचा नहीं सकेंगे।"

"आप ऐसा न सोचें", पावती की माँ ने कहा, "आप ठीक हो जायेंगे।"

"मुझे तुम्हारी चिन्ता नहीं है", शशिकान्तजी कहते गये, "गाँव की जायदाद से तुम्हारा खच जीवन भर चल जायेगा पर पावती की चिन्ता में मैं तडपता रहूँगा—मेरे प्राण अटके रहेगे।"

"आप चिन्ता न करें", पार्वती की माँ ने समझाते हुए कहा, "दिल्ली-वालों का पत्र आता ही होगा।"

"मैं जानता हूँ उनका पत्र नहीं आएगा।" शशिकान्तजी ने पराजित वाणी में कहा, 'उन्हें एक इतनी पढ़ी लिखी लड़की चाहिए जो नौकरी कर सके और साथ ही उन्हें दहेज में बीस पच्चीस हजार नगद चाहिए। क्या मेरे जीतेजी पार्वती के लिए कोई दूसरा लड़का नहीं मिल सकता?"

"आप फिक्र न करें", पार्वती की माँ ने अपने आँसू रोकते हुए कहा, "मैं आज ही कानपुर में भइया को पत्र लिखकर सीतापुरवाले लड़के के लिए कोशिश करवाऊँगी। आप ठीक हो जाइए तो सबकुछ हो जायगा।"

"अब आप लोग बात बन्द करें और इन्हें आराम करने दें।' नर्स ने कहा और दरवाजे तक पहुँचाते समय उसने पार्वती की माँ से कहा कि शशिकान्तजी के सामने चिन्ता और परेशानी की बातें करने से दौरा पड़ सकता है।

"माताजी", प्रशान्त ने पार्वती को शशिकान्तजी के पास बैठने के लिए भेजकर पार्वती की माँ से कहा, "आप पार्वती का विवाह अगर तय कर दें तो शशिकान्तजी जल्दी ठीक हो सकते हैं।"

"यह तो ठीक कहते हो बेटा", पार्वती की माँ ने कहा, 'पर हमलोग साधारण लोग हैं, पार्वती भी सीधी सादी है, इतनी जल्दी कहाँ से अच्छा वर मिल जायेगा? क्या तुम्हारी निगाह में कोई लड़का है?'

"यदि आप लोग उचित समझें तो मैं पार्वती से विवाह करने के लिए तयार हूँ।' प्रशान्त ने कहा।

"तुम?" पार्वती की माँ के मुख पर प्रसन्नता चमक उठी, 'तुम पार्वती से विवाह करोगे? क्या यह सच है? तुमसे अच्छा लड़का तो हमें दीया लेकर ढूँढ़ने पर नहीं मिलेगा। पार्वती के बाबू ने एक बार तुम्हारे सम्बन्ध में मुझसे चर्चा की थी पर मैंने यह सोचकर मना कर दिया था कि हम लोग मामूली लोग हैं और तुम्हारा कुल बहुत ऊँचा है। तुम्हारे घर-वालों को यह सम्बन्ध स्वीकार होगा?"

यह आप मेरे ऊपर छोड़ दीजिए और शशिकान्तजी को मेरा निर्णय बतला दीजिए।" प्रशान्त ने कहा, 'वैसे अभी कुछ समय तक मैं विवाह

करने की स्थिति में नहीं हूँ क्योंकि पहले मुझे जीवन में स्थापित होना है।"

"तुम इसकी चिंता न करो।" पावती की माँ बोलीं, "गाँव में पावती के बाबू के पास इतनी जायदाद तो है ही कि हम अभी कुछ वर्षों तक पावती को अपने पास रख सकते हैं और तब तक तुम जीवन में जमने के लिए स्वतन्त्र हो। विवाह के बाद भी पावती कभी तुम्हारे कर्त्तव्य मार्ग में बाधा नहीं बनेगी। उसके संस्कार ही ऐसे हैं। सच बेटा, पावती के बाबू यह खबर सुनकर न जाने कितने खुश होंगे—मैं अभी उनसे बताती हूँ।"

"ठहरिए माताजी", प्रशान्त ने कहा, "आप पहले पावती से तो पूछ लीजिए। उसकी राय जानना बहुत जरूरी है।"

"पावती को अपने माँ-बाप पर भरोसा है बेटा! वह जानती है कि हम लोग उसके लिए जो भी व्यवस्था करेंगे, वही उसके लिए सबसे अच्छी होगी।" पावती की माँ ने कहा।

१३

प्रशान्त के निर्णय की खबर पाते ही पार्वती के पिता की तबीयत में आश्चर्यजनक सुधार होने लगा। प्रशान्त ने पार्वती से विवाह करने का निर्णय जल्दबाजी में लिया था पर वह अपने निर्णय से सन्तुष्ट था क्योंकि पार्वती उसकी समस्त मान्यताओं पर खरी उतरती थी।

"मैं तुम्हारे पिता को पत्र लिखूंगा।" शशिकान्तजी ने प्रशान्त से कहा "उनकी सहमति अत्यन्त आवश्यक है।"

"मेरे घर के सबसे बड़े सदस्य मेरे दादाजी श्री शान्तिमोहनजी हैं।" प्रशान्त ने कहा, 'वे यहीं सण्डीला के पास हमारे पैतृक गाँव रामनगर में रहते हैं। वैसे वे मेरी इच्छा के विरुद्ध नहीं जा सकते हैं।"

शशिकान्तजी के आग्रह पर प्रशान्त ने उन्हें अपने दादाजी और पिता का पूरा पता उन्हें दे दिया और इसी के चार पाँच दिन बाद उसके पिता का एक ट्रककाल आया।

'यह शशिकान्त एम०एल० ए० कौन हैं।" प्रशान्त के पिता ने लन्दन से फोन पर प्रशान्त से पूछा, 'और वह अपनी लड़की की शादी तुमसे ही क्यों करना चाहते हैं?"

'यह एक लम्बी कहानी है", प्रशान्त ने कहा, "मैं एक पत्र में सारी बातें आपको विस्तार से लिखकर भेज रहा हूँ।"

पत्र लिखने की कोई जरूरत नहीं है।" प्रशान्त के पिता ने रूखे

स्वर म उत्तर दिया, "मैं परसो सुबह की फ्लाइट से नयी दिल्ली पहुँच रहा हूँ। तुम कल रात तक लखनऊ से चलकर परसो ग्यारह बजे विदेश विभाग मे मुझसे मिलो।"

प्रशान्त अपने पिता के स्वभाव से परिचित था। उनका दिल्ली आना और प्रशान्त को बुलवाना किसी महत्त्वपूण कारण से ही हो सकता है, इतना निश्चित था। प्रशान्त ने स्टेशन जाकर एक बथ रिजव करा ली और अगले दिन रात की गाडी से रवाना होकर वह निश्चित तारीख पर दिल्ली पहुँच गया।

विदेश विभाग मे प्रशान्त ठीक ग्यारह बजे पहुँच गया और तभी उसे अपने पिता श्री विश्वमोहन, जो भारतीय विदेश सेवा के अन्तगत लन्दन मे भारतीय हाई कमीशन के एक उच्च अधिकारी थे, सामने से आते हुए दिखलायी पडे।

"यह क्या हुलिया बना रखी है तुमने ?" विश्वमोहनजी ने प्रशान्त की खादी की वेशभूषा को ध्यान से घूरते हुए पूछा।

"मुझे यही कपड पसन्द हैं।" प्रशान्त ने उत्तर दिया।

"चलो मेरे साथ", विश्वमोहनजी बोले, "वही होटल मे चलकर बातें हागी।" और प्रशान्त चुपचाप अपने पिता की भारत सरकारवाली गाडी म बठ गया। विदेश विभाग से फाइव स्टार होटल तक की यात्रा दोनो पिता-पुत्र ने मौन होकर की।

'हाँ, तो यह बतलाओ कि यह शशिकान्त कौन हैं ?" होटल के अपने सूट मे पहुँचकर विश्वमोहनजी ने इत्मीनान के साथ अपना पाइप सुलगाते हुए पूछा।

"यह विरोधी पक्ष के नेता हैं और हम लोगो के स्वजातीय हैं।" प्रशान्त ने कहा।

"मुझे उनकी जाति से कोई मतलब नही है।" विश्वमोहनजी न कहा, "हम लोगो का एक विशेष वग है और उस वग मे पहुँचनेवाला प्रत्येक व्यक्ति हम लोगो का स्वजातीय है। मुझे यह जानना है कि उनका स्टेटस क्या है, उनकी आमदनी क्या है, उनके फमिली कनेक्शन्स कसे हैं, उनके खानदान के लोगो की एजुकेशनल क्वालिफिकेशन्स क्या हैं, उनका रहन-

सहन कैसा है !"

'वे बहुत ही साधारण लोग हैं", प्रशान्त ने कहा, "पिता हमीरपुर के रहनेवाले हैं।'

"इसका मतलब यह हुआ कि वे लोग गरीब, जाहिल और देहाती हैं।" विश्वमोहनजी बोले, "और अपनी लड़की की शादी तुमसे करना चाहते हैं ?'

प्रशान्त को लगा कि उसके पिता के स्वर में दम्भ और अभिमान है और साथ ही उसे यह भी लगा कि उनके स्वर में पार्वती के परिवार के लिए भयंकर तिरस्कार और अपमान की भावना है।

'वे गरीब और देहाती जरूर हैं', प्रशान्त ने कहा "पर वे आज के तथाकथित अमीर और शहरी कहलानेवाले लोगों से कहीं अधिक सुसंस्कृत और सभ्य हैं। वैसे मुझे अपना विवाह की कोई जल्दी नहीं थी पर शशि-कान्तजी की बीमारी के कारण मैंने उन लोगों को अपनी सहमति दे दी।"

"प्रशान्त', विश्वमोहनजी ने बुझे हुए पाइप को फिर से सुलगाते हुए कहा, 'तुम्हें बचपन से मैंने अपने पास रखा, तुम्हें यूरोप के सबसे अच्छे पब्लिक स्कूलों में शिक्षा दिलवायी और एक आधुनिक विचारोंवाला नवयुवक बनाने की पूरी कोशिश की लेकिन तुम्हारे दादाजी के जिद के कारण मुझे तुम्हें भारत भेजना पड़ा। और अब मैं देख रहा हूँ कि इन पाँच छः वर्षों में तुम्हारे व्यक्तित्व में भीषण गिरावट आ गयी है। लोग देहाती से शहरी बनने की कोशिश में लगे रहते हैं पर तुम आधुनिकता से निकल-कर जहालत की ओर चले जाओगे यह मैंने सपने में भी नहीं सोचा था।'

'लेकिन मैं तो अपने को दादाजी का ऋणी मानता हूँ जिन्होंने मुझे आपके झूठे और नकली आधुनिक समाज से आजादी दिलवायी मुझे मेरी वास्तविकता का अहसास कराया वरना यदि मैं आपके साथ कुछ और वर्ष विदेश में रह जाता तो मेरा व्यक्तित्व एक ऐसा व्यक्तित्व होता जिसकी कल्पना तक से मुझे घृणा है।" प्रशान्त ने कहा।

'प्रशान्त', विश्वमोहनजी ने कहा 'मैं फिर तुमसे कहूँगा कि भावना में मत बहो और वास्तविकता पर आओ। तुम्हें किस बात की कमी है जो तुम इस तरह से त्याग का जीवन बिता रहे हो ? तुम मेरे साथ लण्डन

चलो और कम्पटीशन्स की तैयारी करो। मेरे लड़के होने के कारण तुम्हें हर जगह प्रिफरेंस मिलेगा और पढ़ने लिखने में तुम खुद ही ब्रिलियण्ट हो। आई० ए० एस० हो जाओ तो तुम्हारे लिए मैंने एक ऊँचे परिवार की सुन्दर माडर्न और एजुकेटेड लड़की ढूँढ़ रखी है। मेरे एक दोस्त हैं, उन्हीं की लड़की है वह।"

"मैं अपने भविष्य के सम्बन्ध में निर्णय ले चुका हूँ।" प्रशान्त ने कहा, "सरकारी नौकरी मुझे नहीं करनी है और जिन परिवारों को आप माडर्न और एडवान्स्ड कहते हैं, उन्हें मैं निहायत बुजुआ और प्रतिक्रियावादी समझता हूँ।"

'तो तुम कम्युनिस्ट भी हो गये हो?" विश्वमोहनजी बोले, 'मैंने तुम्हें भारत भेजकर बहुत भारी गलती की।"

"मैं राजनीतिशास्त्र का विद्यार्थी हूँ', प्रशान्त ने स्थिर भाव से कहा, "और अभी तक किसी व्यक्ति या दल के प्रति मैंने प्रतिबद्धता की आवश्यकता नहीं समझी है। लेकिन सिद्धान्तों के प्रति मैं अप्रतिबद्ध नहीं हूँ और जनतन्त्र की तरह ही समाजवाद के प्रति मैं प्रतिबद्ध हूँ।"

"समाजवाद?" विश्वमोहनजी ने व्यंग्य किया, "भूखों और नंगों का समाजवाद? जाहिलों और अशिक्षितों का समाजवाद? यह सब महज नारे हैं प्रशान्त! दुनिया में कभी भी और कहीं भी समाजवाद न तो कभी आया है और न ही आयेगा। शासन करने का अधिकार और क्षमता हमेशा बुद्धिमान और समर्थ लोगों का रहा है और मूर्खों और असमर्थों पर हमेशा से शासन होता आया है।"

'जिन्हें आप मूर्ख और असमर्थ समझते हैं उन्हीं के खून और पसीने पर समर्थ और चालाक लोग अपने ऐश्वर्य और सम्पन्नता के महल खड़े करते हैं। वैसे मैं कम्युनिज्म के सारे सिद्धान्तों के पक्ष में नहीं हूँ पर यह तय है कि मैं शोषित जन के पक्ष में हूँ।" प्रशान्त ने उत्तर दिया।

"यह सब कल्पना और आदर्श की बातें हैं", विश्वमोहनजी बोले, "और कुछ दिनों के बाद तुम अपनी गलती समझोगे। खैर छोड़ो। फिलहाल तुम्हारा प्रोग्राम यह है कि तुम्हें आज शाम को मेरे साथ होटेन एवोय में एक इनफार्मल डिनर को एटेण्ड करना है जिसे मेरे कुछ पुराने

और खास दोस्त 'होस्ट' कर रहे हैं। और हाँ, तुम्हें वहां इन कपडो में नही आना है।" अपने पर्स से रुपये निकालते हुए विश्वमोहनजी बोले, "ये रुपये लो और कनाटप्लेस जाकर ड्रेपस के यहाँ से एक बढ़िया रेडीमेड डिनर सूट, शर्ट और टाई ले लो और वहीं फ्लेक्स से एक कीमती शू भी ले लेना। पार्टी में तुम वही कपड़े पहनकर आओगे।"

"लेकिन मेरे जीवन में डिनर्स और डिनर सूटस का कोई महत्त्व नही है।" प्रशान्त ने कहा।

"ठीक है", खीझ-भरे स्वर में विश्वमोहनजी बोले, "लेकिन आज की पार्टी में तुम्हें आना ही है। यह मेरा आदेश है।"

प्रशान्त ने ड्रेपस के स्थान पर खादी भवन से एक सफेद टवीड का बन्द गले का कोट और खादी सर्ज की एक ग्रे पतलून खरीदी और पास ही बाटा से उसने एक जोड़ा काला और मजबूत मुकेशियन जूता लिया। शाम को होटेल एम्बेसेडर वह नगर ट्रांसपोर्ट की एक बस से पहुँचा।

होटेल एम्बेसेडर का बैंक्वेट हाल दुल्हन की तरह सजा था। रंग-बिरंगे कागज के फेस्टून और गुब्बारों से हाल भरा हुआ था। धीमी प्रकाश व्यवस्था के बीच कोई सौ सवा सौ औरतें और मर्द कीमती परिधानों में एक रूमानी वातावरण का सृजन कर रहे थे। सेण्टों और कास्मेटिक्स की तीखी सुगन्ध और उस पर से कीमती विलायती शराब के जामों की खनक सारे वातावरण को नशीला बना रही थी। हाल के मंच पर एक आर्केस्ट्रा कोई कान्टिनेण्टल धुन बजा रहा था।

'तो तुमने ड्रेपस की बजाय खादी भवन से कपड़े ले लिये!' प्रशान्त को गौर से देखते हुए विश्वमोहनजी ने कहा, "खैर कोई बात नहीं, दिल्ली के आफिशियल सर्किल में यह ड्रेस चल जायेगी। अब आओ मेरे साथ।"

"यह मेरा लड़का प्रशान्त है।" विश्वमोहनजी ने अपने पास खड़े एक अधेड़ से सज्जन से प्रशान्त का परिचय कराते हुए कहा, 'और यह हैं मिस्टर राजेन्द्रशंकर, मेरे बचपन के दोस्त और उत्तर प्रदेश सरकार के वाणिज्य सचिव।'

'ग्लैड टु सी यू", मि० राजेन्द्रशंकर ने हाथ बढ़ाते हुए कहा।

"नमस्कार', प्रशान्त ने दोनों हाथ जोड़कर कहा और मिस्टर शंकर

ने कुछ खिन्न भाव से अपने हाथ जोड दिये।

"आओ, तुम्हे और लोगो से मिलाऊँ।" विश्वमोहनजी प्रशान्त को लेकर अन्य मेहमानो की ओर चल पडे, "और यहाँ पर नमस्ते का रिवाज नही है यहाँ सभी से हाथ मिलाना होगा और अंग्रेजी मे ग्रीट करना होगा, समझे?" उन्होने प्रशान्त से कहा।

"समझ गया।" प्रशान्त ने कहा और वह अपने पिता के आदेशपालन का आपतधर्म निभाते हुए सभी मेहमानो से परिचय प्राप्त करता रहा। सभी के हाथ मे शराब के जाम थे। पुराने पीनेवाले स्काच व्हिस्की पी रहे थे जब कि स्त्रिया जिन या शेरी पी रही थी।

"प्रशान्तजी आप?" एकाएक नीलिमा का स्वर सुनकर प्रशान्त चौंक पडा, "मैं तो आपको पहचान ही नही पायी। कितने स्मार्ट और हैण्डसम लग रहे हैं आप।" नीलिमा बोली।

"आपको आश्चर्य हो रहा होगा मुझे यहा पाकर।' प्रशान्त ने नीलिमा से कहा, "यह मेरी मजबूरी है नीलिमाजी, मुझे अपने पिता की आज्ञा का पालन करना पड रहा है।"

"आपके पिता?" नीलिमा अभी तक अपने को कौतूहल के घेरे से बाहर नही निकाल पायी थी ' कौन है आपके पिता?" उसने पूछा।

"श्री विश्वमोहन, ब्रिटेन म इण्डियन हाई कमीशन के प्रथम सचिव।" प्रशान्त ने बतलाया।

"यानी कि आप " नीलिमा पलकें झपकाते हुए बोली, "आप उन्ही के सुपुत्र है!"

'तुम लोग तो लगता है एक-दूसरे को जानते हो।" अचानक नीलिमा के पिता मिस्टर राजेन्द्रशकर ने उनके पास आकर कहा।

"क्यो नही डडी", नीलिमा बोली, "यह भी तो लखनऊ युनिवर्सिटी म मेरे ही विभाग म रिसर्च कर रहे हैं।"

"ट इज वेरी इण्टरेस्टिग एण्ड फाइन।" मिस्टर शकर ने कहा, "अब तो हमारा काम और भी आसान हो जायेगा।"

' मैंने आपकी बात समझी नही।" प्रशान्त ने कहा।

"तुम समझोगे भी नही।" मिस्टर शकर बोले, "एट प्रेजेण्ट बोथ

आफ यू ए ज्वाय।" और वे प्रसन्न मुद्रा मे भीड मे शामिल हो गये।

"आइए न।" नीलिमा ने प्रशात को डास फ्लोर की ओर इशारा करते हुए कहा।

"मुझे नही आता।" प्रशात ने कहा।

"झूठ", नीलिमा बोली, "अब आप मुझसे छुप नही सकेंगे। मुझे आपकी सारी बैकग्राउण्ड पता है। वर्षों यूरोप मे पढने के बाद भी आपको बालरूम डास नही आता होगा, यह मैं मान नही सकती। कम ऑन प्रशात, प्लीज " नीलिमा ने आग्रह किया।

"नीलिमाजी", प्रशात ने कहा, "अभी कुछ ही देर बाद मैं इस रागरग की दुनिया से बाहर रहूँगा और इस कीमती वेशभूषा को पिताजी के होटल मे छोडकर अपनी वही पुरानी खादी की पोशाक पहन लूगा। वह खादी, जिसे खुद मेरे दादाजी ने अपने चरखे पर काता है।"

"हाई नीलिमा', एक उद्दण्ड किस्म के युवक ने जबदस्ती नीलिमा के कधे पर अपना हाथ रखते हुए कहा, "कब आयी? तुम्हारे बिना तो दिल्ली की महफिलें वीरान हो गयी थी। लेट्स गो टु द फ्लोर—वही डास के साथ बातें होगी।" और इतना कहकर नशे मे डूबा हुआ वह युवक नीलिमा का हाथ पकडकर उसे घसीटने लगा।

"अभी मैं बिजी हूँ रनधीर", नीलिमा ने कहा, "और डान्स मैं करीब-करीब छोड चुकी हूँ।"

"डोण्ट बी सिली", रनधीर बोला, "तुम इनसे बातें करो तब तक मैं कुछ पीकर आता हूँ पर आज की रात " अब तक रनधीर की जबान लड खडाने लगी थी "आज की रात तुम मेरे साथ जरूर नाचोगी जानेमन!" और इतना कहकर डगमगाते कदमो से रनधीर बार की ओर बढ गया।

'बडा शोख और चचल है यह रनधीर", नीलिमा ने कहा, "पिछले साल आई० ए० एस० म टाप किया था इसने। आजकल हिमाचल प्रदेश म डी० एम० है कही पर।"

प्रशात ने नीलिमा की बात पर कोई भी प्रतिक्रिया नही व्यक्त की।

'आइए प्रशातजी', नीलिमा ने कहा "थोडी देर बाहर लान पर टहला जाये।" और प्रशात नीलिमा के साथ हॉल से बाहर आ गया।

१४

बाहर होटल का लान बडा ही मनमोहक लग रहा था। ओस का गिरना शुरू हो चुका था और लान के बीचोबीच एक रगीन छतरी के नीचे रखी बेंत की खूबसूरत कुर्सियो पर नीलिमा और प्रशान्त बैठ गये।

"प्रशान्त", नीलिमा मानो स्वप्न मे बोल रही थी, "तुम्ह शायद यह नही मालूम कि हम दोनो के पैरेण्ट्स ने बहुत पहले तय कर लिया था कि बडे होने पर वह हम दोनो की शादी कर देंगे।"

'मुझे ठीक मालूम तो नही था पर पिताजी की बातो से कुछ अनुमान जरूर था।" प्रशान्त ने कहा।

'तुम्हारा अनुमान सही था", नीलिमा बोली, "और इसीलिए तुम्हारे पिताजी ने लखनऊ ट्रककाल करके मुझे और मेरे मम्मी-डैडी को दिल्ली बुलाया था कि हम सब एक-दूसरे से मिलकर सारी बातें फाइन-लाइज़ कर ल।'

"नीलिमाजी", प्रशान्त का स्वर सपनो से बहुत दूर ठण्डा और स्थिर था, "अपने भविष्य और अपने विवाह के सम्बन्ध मे मेरी कुछ निजी धारणाएँ हैं।" वह बोला "और उन धारणाओ से मेरे पिताजी शायद कभी भी सहमत नही हो पायेंगे। सच तो यह है नीलिमाजी, कि मैंने अपना विवाह स्वय ही तय कर लिया है और मुझे लगता है कि यह विवाह मुझे अपने पिताजी की इच्छा के विरुद्ध ही करना होगा।"

नीलिमा का सपना विखर गया, "तो क्या अपने लिए तुमन तुमन कोई दूसरी लडकी पसन्द कर ली है ?" वह बोली।

"भावुक होने की कोशिश मत कीजिए नीलिमाजी", प्रशान्त न कहा "सच तो यह है कि जिस रूप मे मेरे पिताजी ने मुझे आप लोगो के सामने पेश किया है वह मेरा वास्तविक रूप नही है, और जिस जिदगी को मैंने अपने लिए चुना है वह आप लोगो के इस समाज के अनुरूप नही है। पिताजी चाहते हैं कि मैं कम्पटीशन्स मे बठू, ऊँची सरकारी नौकरी करूँ और अपनी जिन्दगी को पश्चिमी आधुनिकता मे ढाल दू जो कि मरे लिए नितान्त असम्भव है।"

'प्रशान्त", नीलिमा बोली, "तुम्हारे पिताजी ठीक ही तो कहते हैं। क्या रखा है उस जीवन मे जो तुमने अपने लिए चुना है ? तुम्हारे आगे एक सुनहला भविष्य है, सुख है, सुविधा है, शक्ति है।"

"मेरा सुख मेरे वतमान म है।" प्रशान्त ने कहा, मेरे सपने, मेर आदश मुझे बुला रहे है। यहाँ के वातावरण मे मेरा दम घुटा जा रहा है। अब मैं चलूगा क्योकि मुझे होटल जाकर अपन कपडे बदलने है और रात साढे नौ बजे की गाडी से लखनऊ जाना है।"

"प्रशान्त", नीलिमा न अन्तिम चेष्टा करते हुए कहा "तुम एक बार फिर सोचना। मैं तुम्हारा इन्तजार करूँगी।"

"नीलिमाजी", प्रशान्त ने उठते हुए कहा, 'मैं सोच ही नही चुका हूँ बल्कि विवाह के लिए वचन भी दे चुका हूँ। आपके लिए ऊँचे समाज मे ऊँचे पदो पर बैठे अनक खूबसूरत और स्माट युवक मौजूद हैं जा आपस विवाह करके अपने को सौभाग्यशाली समझेंगे। अच्छा, अब मैं चलता हूँ, नमस्कार।" और नीलिमा के प्रत्युत्तर की प्रतीक्षा किय बिना ही प्रशान्त होटेल एम्बोय के मेन गेट से बाहर हो गया।

प्रशान्त ने अपने पिताजी के कमरे मे पहुँचकर कोट और पण्ट उतार दिय, फिर अपना कुरता पजामा और काल्हापुरी चप्पल पहन वह एक स्कूटर रिक्शा पर बठकर नयी दिल्ली रेलवे स्टेशन पहुँच गया। भीड म घुसकर उसन निम्न श्रेणी का एक टिकट लिया और एक भरे हुए सामान्य कम्पाटमण्ट म वह भीड की अनुनय विनय करके दाखिल हा गया।

जागते-ऊँघते, चाय की प्यालियां और झपकियों का आनन्द लेते हुए उसने रात बिता दी। भोर को जब गाडी सण्डीला पहुँची और प्रशान्त मुह धोने उतरा तो तभी उसे अपने पूज्य दादाजी श्री शान्तिमोहन दिखलायी पडे।

"जल्दी अपना सामान ले आओ, तुम्हे यही उतरना है और गाडी दो ही मिनट यहाँ रुकेगी।" शान्तिमोहनजी बोले। प्रशान्त को आश्चर्य हो रहा था अपने दादाजी को इस तरह अचानक स्टेशन पर पाकर।

"मुझे सब पता चल गया है।" शान्तिमोहनजी ने प्रशान्त के साथ प्लेटफार्म से बाहर निकलते हुए कहा, "तुम्हारी समस्या, तुम्हारे पिता की उलझन—सभी बातें मैं जान चुका हूँ। अब चलो मेरे साथ रामनगर।"

स्टेशन के बाहर प्रशान्त के गाँव का गाडीवाला मैकू अपनी बैलगाडी पर दादाजी और प्रशान्त की प्रतीक्षा कर रहा था। दादाजी और प्रशान्त के बैठते ही मैकू ने दोनो बैलो को कच्ची सडक पर हाक दिया और घुँघरुओं की लय पर हीरा और पन्ना अपनी दस कोस की यात्रा पर सधी हुई गति से भागने लगे।

"मेरे पास लखनऊ से शशिकान्तजी का पत्र आया था और कल ही मैं तुम्हारी दादी के साथ लखनऊ गया था।" शान्तिमोहनजी ने रास्ते में प्रशान्त को बताया, 'लडकी हम लोगो को बहुत पसन्द है और उसका कुल आदि भी बहुत अच्छा है। मैंने अपनी स्वीकृति दे दी है और तुम्हारी दादी लडकी को एक घडी भी पहना आयी है।"

'लेकिन पिताजी तो इस शादी के खिलाफ है', प्रशान्त ने कहा, उनके पास शशिकान्तजी ने लन्दन के पते पर एक पत्र भेजा था।"

"मुझे पता है', शान्तिमोहनजी ने प्रशान्त से कहा, "वह तुम्हारी शादी किसी परजटी किरण्टी से करना चाहता है। कल रात गाव के पोस्ट आफिस के टलीफोन पर मेरी उससे दिल्ली से बात हो चुकी है। लेकिन मैंने उससे कह दिया है कि तुम्हारी शादी शशिकान्तजी की लडकी पार्वती से ही होगी। इसके पहले, कि विश्व तुम्हारी शादी मे कोई विघ्न खडा कर दे, मैं यह विवाह कर देना चाहता हूँ।"

"लेकिन मुझे अभी शादी नही करनी है।" प्रशान्त ने कहा, "कम-से-

कम अगले कुछ वर्षों में मुझे संघर्ष करना है और अपने व्यक्तित्व का निर्माण करना है।'

"पर तुम्हे चिन्ता किस बात की है ?" शान्तिमोहनजी बोले, 'मैं हूँ, तुम्हारी दादी हैं, इतना बडा मकान है, बहू हमारे पास रहेगी और तुम स्वतन्त्र रहोगे। और फिर मैं शशिकान्तजी को वचन दे आया हूँ।"

"वचन का मैं पालन करूँगा", प्रशान्त ने कहा, 'आप वरिक्षा की रस्म अभी करवा लें और विवाह को अभी कुछ समय के लिए स्थगित रखें।"

"ठीक है', शान्तिमोहन ने कहा, 'लेकिन इतना याद रखना कि ये रीति रिवाज केवल दिल बहलाने के लिए नहीं होते, इनका मन, वचन और कर्म से पालन भी करना होता है। वरिक्षा, तिलक, विवाह—किसी भी हिन्दू-कन्या के जीवन में यह अवसर एक बार ही आता है।"

रामनगर पहुँचकर प्रशान्त ने कुएँ के ताजे पानी से जी भरकर स्नान किया, गाँव के शिवालय में जाकर कुलदेवता की मूर्ति पर जल चढाया और घर आकर अपनी दादी के हाथ का बना हुआ जलपान किया। जब प्रशान्त अपने दादाजी की बैठक में पहुँचा तब शान्तिमोहनजी अपने चरखे पर सूत कात रहे थे।

"आओ प्रशान्त, बैठो।' दादाजी बोले, "तुम्हारी रिसर्च तो हो चुकी। अब आगे के लिए तुम्हारी क्या योजना है ?"

'दादाजी", प्रशान्त ने कहा, 'इंग्लण्ड से जब मैं आया था तब हवाई अड्डे से जीप पर बिठाकर आप मुझे सीधे रामनगर ले आये थे और उसके बाद के पाँच वर्ष मैंने आपके साथ इसी ग्रामीण वातावरण में बिताये। यहाँ मुझे असीम शान्ति और सुख मिला और यहीं पर मेरे एक नये व्यक्तित्व का निर्माण हुआ, एक विशुद्ध भारतीय व्यक्तित्व।"

"ठीक कहते हो", शान्तिमोहनजी बोले, "यूरोप के कुत्सित पश्चिमी प्रभाव को समाप्त करने के लिए ही तुमको मैंने यहाँ रामनगर में रखा। तुम्हारे पिता यह नहीं चाहते थे, लेकिन मेरा तुम पर अधिकार है न ।" शान्तिमोहन जी मुस्कराये, 'और जानबूझकर पाँच वर्षों तक मैंने तुम्हें भारतीय नगरों से दूर रखा जिससे कि तुम नकली भारत की बजाय असली

भारत को जान सको। इन पाच वर्षों मे जब तुम एक किशोर से तरुण बन गये तब मुझे लगा कि तुम्हारे व्यक्तित्व मे परिपक्वता आ गयी है और तब मैंने तुम्हे लखनऊ जाकर रिसच करने की सलाह दी। एक आधुनिक भारतीय नगर मे रहते हुए इस एक वष से अधिक के समय मे तुम समझ गये होगे कि नये भारत को किन विकृतियो ने घेर रखा है।"

"दादाजी", प्रशान्त ने कहा, "इस एक वष के लखनऊ-निवास और अभी कल के एक दिन के दिल्ली प्रवास के बाद मैं इस निष्कष पर पहुँचा हूँ कि यदि जनशक्ति इन नागरिक विकृतियो का मुकाबला नही करेगी तो देश फिर से गुलाम हो जायेगा। देश को ऊँचा उठाने के लिए एक विशाल सामाजिक क्रान्ति की आवश्यकता है। मैं राजनीति मे आना चाहता हूँ दादाजी!"

शान्तिमोहन जी का मुख खिल गया, "मुझे तुमसे यही आशा थी बेटा!" उन्होंने कहा, "आज देश का युवक भ्रमित है और उसे तुम्हारे जसे सही दिशा म सोचनेवाले युवक नेताओ की जरूरत है। आज तुमने मेरे उन सपनों को सच करने का बीडा उठाया है जो मैं वर्षों से देखता आ रहा था। हमारी पीढी ने महात्माजी के आन्दोलन के लिए अपना सवस्व बलिदान कर दिया था। मैं भी लन्दन से बार-एट ला होकर लौटा था, पर भावना और देशप्रेम के आगे मैंने उस ऐश्वय को ठोकर मार दी। मैं और मेरे साथिया ने स्वेच्छा से कठोर और कण्टकमय माग को अपनाकर देश को स्वतन्त्रता दिलवायी। तुम्हारे पिता को भी मैं अपने आदर्शों पर चलाना चाहता था, पर वह पश्चिमी जीवन को चमक-दमक के आगे आत्मसमपण कर बठा और उसने और उसकी पीढी ने भारतीय नतिक मूल्यो को तिलाजलि देकर एक ऐसी जीवन पद्धति को अपनाया जो शोषण और अत्याचार पर आधारित है, जो मनुष्य की आत्मा तक को कलुषित कर देती है। पर आज मैं बहुत प्रसन्न हूँ। आज तुम्हारे अन्दर मुझे अपनी आकांक्षाएँ सत्य होती दिखायी पड रही हैं। मेरी शुभकामनाएँ तुम्हारे साथ हैं।"

"केवल शुभकामना ही नहीं', प्रशान्त ने कहा "मुझे और मेरी पीढी को आपका नेतत्व और पथप्रदशन भी चाहिए। आपको पुन सक्रिय

राजनीति म आने के लिए तयार रहना होगा दादाजी, क्योंकि मैं अपनी राजनीति का केन्द्र रामनगर को ही बनाने का इरादा रखता हूँ।"

प्रशान्त को लग रहा था कि जो कुछ भी हो रहा है वह स्वसचालित है, पूवनिर्धारित है। उसे लगा कि जो कुछ हो रहा है या होनेवाला है वह सब पहले से ही हो चुका है। नियति के क्रम की यह सोद्देश्य यात्रा प्रशान्त को बडी सुखकर प्रतीत हुई। अगले कुछ दिन वह रामनगर म ही रहा और इसी बीच शान्तिमोहनजी ने शशिकान्तजी से सम्पर्क स्थापित करके एक अच्छे दिन को प्रशान्त की वरिक्षा करवा दी। यह रीति बहुत ही सादगी और उल्लासपूर्ण वातावरण मे सम्पन्न हो गयी। प्रशान्त के पिताजी इस समारोह मे शामिल नहीं हुए, पर उन्होंने प्रशान्त की मा को लन्दन से हवाई जहाज द्वारा इस आयोजन म शामिल होने के लिए भेज दिया।

प्रशान्त ने लखनऊ पहुँचकर अपना सामान अपने कमरे म रखा और शशिकान्तजी के दरवाजे पर घण्टी बजायी। पार्वती ने द्वार खोले पर प्रशान्त को साक्षात अपने समक्ष खडा पाकर वह दरवाजा खुला ही छोड कर अन्दर भाग गयी। प्रशान्त पार्वती को देखता ही रह गया। पार्वती को पहली बार उसने आभूषण और साडी पहने देखा और पार्वती का यह रूप उसकी कल्पना से परे था। प्रशान्त मानो स्वप्न देख रहा था, कहाँ वह सीधी सादी मोटे कपडे का शलवार कुरता पहननेवाली और खीच कर बाँधी गयी चोटीवाली वह लडकी और कहा यह सकुचायी लजायी, रंगबिरंगे वस्त्र, ढीला जूडा बाँधे बिन्दी और काजल लगाये सौन्दय की यह अप्रतिभ प्रतिमा। प्रशान्त को लगा कि इस छोटी सी अवधि म पार्वती अचानक एक कन्या से युवती बन गयी है।

पार्वती की माँ ने आकर प्रशान्त का स्वागत किया, "आओ भइया, बैठो। प्रशान्त को बठाते हुए वे बोली, 'अच्छा हुआ तुम आ गये। हम लोग कल ही गाँव जा रहे है। पार्वती के बाबूजी ने इस बार चुनाव नही लडने का फसला कर लिया है। डाक्टरो ने उनके लिए देहात की जलवायु उत्तम बतायी है और इन्होंने तय कर लिया है कि राजनीति से अवकाश लेकर गाँव मे खादी ग्रामोद्योग का काम करेंगे। पार्वती की पढाई तो

प्राइवट है, वहाँ से भी हो जायेगी।"

"पावती कहा गयी ?" प्रशान्त ने पूछा।

"शायद चाय बनाने गयी है तुम्हारे लिए।" पावती की माँ ने कहा।

"मैं पहले जरा नहा लू, फिर चाय पिऊँगा।" प्रशान्त न कहा।

"ठीक है तुम स्नान करो जाकर", पावती की माँ बोली, 'मैं चाय वही भेज दूगी।"

प्रशान्त नहाकर, कपडे पहनकर बाथरूम से बाहर निकला ही था कि बहुत धीरे से उसके दरवाजे की घण्टी बजी जसे कोई कापते हाथो से घण्टी बजा रहा है। दरवाजा खोलते ही प्रशान्त ने अपने सामने पावती को एक छोटी-सी ट्रे म चाय और जलपान लिये हुए खडी पाया। पावती ने जल्दी से ट्रे प्रशान्त को पकडाने का प्रयत्न किया, पर प्रशान्त ने पीछे हटते हुए उसे मेज पर रख देने को कहा। प्रशान्त पावती की चाल को देख रहा था जो कि आज बहुत बदली हुई लग रही थी।

"अभी तक यह रूप और सुन्दरता तुमने कहाँ छिपा रखी थी ?" प्रशान्त ने कहा, "मैं नही जानता था कि तुम इतनी सुन्दर हो।"

पावती का मुख गुलाबी आभा से लाल हो गया, लेकिन वह सिवाय अपना आचल ठीक करने के कुछ भी नहीं कह पायी। प्रशान्त के लिए प्याले मे दूध-चीनी छोडकर, चाय बनाकर पावती ने दृष्टि नीची किये हुए प्याला उसे पकडा दिया।

"पावती, कल तुम जा रही हो !" प्रशान्त ने प्याला लेते हुए कहा, "बात नही करोगी ?"

"अपना ख्याल रखिएगा।" पावती ने धीरे से कहा, "अब तो आप बिल्कुल अकेले रह जायेंगे।"

"मेरी चिन्ता मत करो पावती", प्रशान्त बोला, "गाव जाकर मन लगाकर पढना। अब न जाने कब मिलना होगा। मैं तुम्हे पत्र लिखूगा, उत्तर दोगी न ?"

पावती ने सिर हिलाकर अपनी सहमति दी।

'पावती", प्रशान्त कुछ गम्भीर और भावुक हो रहा था, 'अभी कुछ समय तक हमे प्रतीक्षा करनी पडेगी। यह समय मेरे सघर्ष और निर्माण

का होगा। तुम मुझे भूल तो नही जाओगी ?" प्रशान्त ने कहा।

"आप मेरे सबकुछ हैं।" पावती ने इस बार प्रशान्त की ओर देखते हुए कहा, "मैं आपकी सदव प्रतीक्षा करती रहूँगी और भगवान से मेरी हमेशा यह प्रायना होगी कि आप अपने कत्तव्य पथ पर सफलतापूवक आगे बढ़ें।"

"तुम बहुत अच्छी हो पावती", प्रशान्त ने कहा, "भगवान तुम्ह सदा सुखी रखे।"

और अगले दिन दोपहर को प्रशान्त के पडोस का फ्लट खाली हो गया। प्रशान्त के मन मे मीठा सा दद, एक हल्की-सी टीस छोडकर पावती अपने माता पिता के साथ गाँव चली गयी, पर प्रशान्त आश्वस्त था क्योंकि पावती उसी की थी और अपने माता-पिता के सरक्षण मे थी।

"तुम हम लोगो की चिन्ता बिल्कुल मत करना।" चलते समय पावती की माँ ने प्रशान्त से कहा था, "और अपना काम मन लगाकर करना। चिट्ठी से अपना हाल देते रहना और कभी मौका हो तो समय निकालकर कुछ दिनो के लिए गाव आ जाना। यहा से सिफ चार पाँच घण्ट का समय लगता है।'

प्रशान्त ने देखा कि पावती की आखो मे भी यही मौन निमन्त्रण है। उसने भी पावती की ओर मौन स्वीकृति की दृष्टि से देखा। पसेंजर ट्रेन मे शशिकान्तजी और उनके परिवार को विदा करके प्रशा त विश्वविद्यालय जानेवाली एक बस मे बैठ गया, जहाँ उसे लाइब्रेरी मे कुछ काम था और प्रोफेसर रगनायन से भी मिलना था।

स्टेशन पर खरीदे गये दिल्ली के एक अखबार को पढते पढते प्रशान्त को पता नही चला कि वह बस कब विश्वविद्यालय पहुँच गयी। उस अखबार के विशेष सवाददाता ने लखनऊ से भेजे गये एक विशेष समाचार म लखनऊ विश्वविद्यालय की बिगडती हुई स्थिति का सविस्तार वणन किया था। सवाददाता के अनुसार नये वाइस चान्सलर महोदय अपनी शेष कार्यअवधि म गडबडी न होने देने के लिए विद्यार्थी नेताओ स रोज नये वादे करते जा रहे थे और विद्यार्थी नेता उस आत्मसमपण की नीति का जमकर लाभ उठा रहे थे। उस कमजोर नीति के परिणामस्वरूप

विद्यार्थियो के अनुशासन मे दिन प्रतिदिन गिरावट आ रही थी।

सवाददाता ने आगे लिखा था, "छात्रो से हुए समझौते मे उपकुलपति ने विद्यार्थियो को कक्षा मे उपस्थिति के मामले मे पूरी छूट दे दी है, बकाया फीस और परीक्षा फीस के बिना विद्यार्थियो को परीक्षाओ मे बैठने की अनुमति दे दी है और साथ ही छात्र नेताओ से यह भी समझौता हो गया है कि उन्हे परीक्षा मे दस के स्थान पर पन्द्रह प्रश्न दिये जायेंगे जिनमें से केवल पाँच प्रश्नो के उत्तर उन्ह देने होगे।" मागें यही तक नही मान ली गयी थी बल्कि यह भी मान लिया गया था कि कम प्राप्ताक पानेवाले विद्यार्थी भी पूरक परीक्षाओ मे बठ सकेंगे, परीक्षा मे अनुचित साधनो का इस्तेमाल करनेवाले छात्रो के खिलाफ कठोर कायवाही नही की जायेगी, परीक्षा के दौरान अध्यापक विद्यार्थियो से दुव्यवहार नही करेंगे तथा पुलिस और पी० ए० सी० का प्रवेश विश्वविद्यालय के प्रागण के अन्दर नही होगा।

"यह सब गलत है", प्रोफेसर रगनाथन ने प्रशान्त से कहा, "वी० सी० की यह पालिसी कभी सफल नही होगी क्योकि मागें यही नही खत्म होगी। अब तो विद्यार्थी नेता हमे बतायेंगे कि हम क्या पढायें और कसे पढायें। और इससे हमारी युनिवर्सिटी की रेपुटेशन पर बहुत बुरा प्रभाव पडेगा। हमारे यहाँ के अच्छे और ब्रिलियेण्ट विद्यार्थियो को प्रतियोगिताओ और नौकरियो मे नुकसान उठाना पडेगा। सारे एकेडेमिक सर्किल्स मे हमारा मजाक उडाया जा रहा होगा।"

"किसी को तो इसका विरोध करना चाहिए सर!" प्रशान्त ने कहा।

"विरोध?" प्रोफेसर रगनाथन व्यग्य से मुस्कुराये, "किसकी हिम्मत है विरोध करने की? विरोध करनेवालो के खिलाफ यह नयी पीढी हिंसा का सहारा लेती है और हमारी व्यक्तिगत सुरक्षा का क्या प्रबन्ध है? जब खुद सरकार और विश्वविद्यालय के अधिकारी इन छात्र नेताओ के आगे घुटने टेक चुके है तो हमारी क्या गिनती!" उन्होने कहा।

'लेकिन सर", प्रशान्त ने कहा, 'अधिकाश छात्र अनुशासनहीन नही है और न ही वे अनुचित और गलत रास्तो को अपनाना चाहते हैं।

मैं तो यह समझता हूँ कि युवा नेतत्व ही गलत हाथो मे पड गया है और कुछ थोडे-से शक्तिशाली और समथ लोग अपने को सभी छात्रा का ठेकेदार समझने लगे हैं।"

प्रोफेसर रगनाथन से एक पुस्तक लेकर प्रशात यूनियन भवन की ओर चल पडा जहा उसे रमाकात के मिलने की आशा थी। वह जामुन-वाली सडक को पार कर ही रहा था कि तभी एक जोरदार घनघनाहट के साथ अनेक फायर ब्रिगेड की गाडियो ने विश्वविद्यालय म प्रवेश किया और साथ ही पुलिस तथा पी० ए० सी० के भारी दस्तो न अपनी भारी गाडिया सहित विश्वविद्यालय को घेर लिया। छात्रो से तत्काल युनिवर्सिटी कम्पस खाली करने के आदेश जारी किये जाने लगे।

"आग लग गयी—पुलिस आ गयी" की आवाजो के साथ कोलाहल बढता जा रहा था। "रजिस्ट्रार आफिस जल रहा है", एक छात्र बताते हुए भागा। "कशियस आफिस मे आग लग गयी।" एक दूसरे छात्र ने सूचना दी। "एक्जामिनेशन सेक्शन जलकर राख हो गया और कनिंग कालेज के कला सकाय के मुख्य भवन म भी आग की लपटें उठ रही हैं।" एक और खबर आयी। 'भागो भागो' की आवाजो के साथ छात्रो की अनेक टोलिया बाहर की ओर भाग रही थी क्योकि सारी युनिवर्सिटी को अब तक पुलिस ने अपने अधिकार म ले लिया था।

कुछ ही देर म सारा विश्वविद्यालय एक सनिक शिविर के रूप मे परिवर्तित हो गया। लाउडस्पीकर पर होस्टलवासियो के लिए एलान हो रहा था कि वे दो घण्टे के अन्दर होस्टल खाली कर दें क्योकि विश्व-विद्यालय अनिश्चित काल के लिए बन्द कर दिया गया है। छात्र नेता और उनके साथी ढूढ-ढूढकर गिरफ्तार किय जा रहे थ। चारो ओर आतक और तनाव की स्थिति थी। पुलिस और पी० ए० सी० के जवानो ने जगह जगह अपन तम्बू और कनात गाड दिय थे और अस्थायी कम्प कार्यालय और वायरलेस स्टेशन स्थापित हो गये थे। चारो ओर केवल खाकी वरदी ही दिखायी पड रही थी।

एकाएक प्रशात को छात्रो की एक भीड फाटक की ओर भागती दिखायी पडी। उस भीड म उसे रमाकात भी दिखलायी पडा, जिसके

पड़े-पड़े न जाने कब वेडनेस्विच बुनाकर सो गया। चार-पाँच घण्टे सोकर जब वह भोर को उठा तो वह अपने अन्दर एक विचित्र ताजगी और स्फूर्ति का अनुभव कर रहा था। उसका मन कुण्ठाओं से मुक्त था और उसका तन तनावों से रहित था और इस निर्विघ्न और सम्पूर्ण निद्रा से वह स्वयं को अत्यन्त आह्लादित और प्रफुल्लित अनुभव कर रहा था। पूर्व की खिड़की से नया सवेरा अपने आगमन की सूचना दे रहा था। सूर्य की किरणें आकाश पर एक नूतन प्रिज़्म बनाते हुए फैल रही थीं। रंगों के इन अथाह सागर में प्रशान्त की असंख्य सम्भावनाएँ दिखलायी पड़ रही थीं।

नाम धीरेन्द्र वर्मा, चित्रलेखा, महानगर लखनऊ।

जन्म २७ दिसम्बर १९३६ इलाहाबाद।

शिक्षा हिन्दी अगरेजी और राजनीति शास्त्र लेकर बी०ए०, लखनऊ विश्वविद्यालय, राजनीति शास्त्र मे एम०ए०, लखनऊ विश्वविद्यालय।

लेखन लेखन के प्रति बचपन से रुचि। आकाशवाणी, दूरदर्शन तथा पत्र पत्रिकाओ के लिए नाटक निबन्ध और कहानी लिखने का शौक। 'किस्सा प्रीतम पाण्डे का' शीर्षक पहला उपन्यास लगभग पाच वर्ष पूर्व सजिल्द सस्करण म प्रकाशित हुआ। १९७८ मे हिन्द पाकेट बुक्स द्वारा पाकेट सस्करण म।

व्यवसाय कान्यकुब्ज डिगरी कालेज, लखनऊ, मे राजनीति शास्त्र विभाग म प्रोफेसर।